नि:शुल्क वितरण हेतु

कृति

कक्षा 7 के लिए

कला की पाठ्यपुस्तक

सत्र 2026-27

0780

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

यह पाठ्यपुस्तक शासकीय सम्पत्ति है। इसका क्रय-विक्रय अवैधानिक है।

प्रकाशन वर्ष - 2026

छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
के सौजन्य से छत्तीसगढ़ राज्य के द्वारा अनुकूलित

आवरण पृष्ठ, चित्रांकन एवं ले आउट डिजाइनिंग
रेखराज चौरागड़े, हिमांशु वर्मा

प्रकाशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक
छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रणालय

मुद्रित पुस्तकों की संख्या - ________________________

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नए पाठ्यक्रम के आलोक में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा विकसित पाठ्यपुस्तकों में छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं संदर्भों को जोड़कर उन्हें राज्य के परिप्रेक्ष्य में अनुकूलित किया गया है।

यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धन, दक्षता विकास एवं 21वीं सदी के उन्नत कौशलों के विकास में सहायक सिद्ध होगी। पाठ्यपुस्तक के रोचक विषयवस्तु से राज्य के विद्यार्थियों को स्थानीय संस्कृति एवं संदर्भों को समझने के अवसर मिलेंगे। विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास, वैश्विक नागरिक निर्माण एवं शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति होगी।

हम राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के निदेशक के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंने हमें एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा सृजित पाठ्यपुस्तकों को छत्तीसगढ़ राज्य के संदर्भ में अनुकूलित किए जाने हेतु स्वीकृति दी है। इस दिशा में एन.सी.ई.आर.टी. के विषय विशेषज्ञों द्वारा समय-समय पर दिए गए समुचित मार्गदर्शन, सुझाव एवं सहयोग के लिए हृदय से आभारी हैं।

हम 'छत्तीसगढ़ राज्य शिक्षा स्थायी समिति' को पाठ्यपुस्तक निर्माण कार्य में उनके सक्रिय योगदान के लिए तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य से जुड़े समस्त विद्वतजन के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

यद्यपि संवर्धन एवं परिष्करण की संभावनाएँ सर्वदा भविष्य के लिए बनी रहती हैं इसलिए पाठ्यपुस्तक के परिमार्जन एवं उपयोगिता के संबंध में राज्य के विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों एवं अन्य जनों से प्राप्त होने वाले प्रत्येक सुझाव राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़ के लिए स्वागत योग्य होगा। हमारा लक्ष्य छत्तीसगढ़ राज्य को शिक्षा के क्षेत्र में अग्र पंक्ति में स्थापित करना है।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना की गई है जिसकी जड़ें भारतीय लोकाचार, मानवीय प्रयासों और ज्ञान के सभी क्षेत्रों में सभ्यतागत उपलब्धियों में निहित है। यह विद्यार्थियों को इक्कीसवीं सदी की संभावनाओं और चुनौतियों का रचनात्मक रूप से सामना करने के लिए तैयार करती है। 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023' द्वारा प्रस्तावित पाठ्यचर्या क्षेत्रों के सभी स्तरों के आधार पर इस महत्वाकांक्षी दृष्टिकोण निर्मित किया गया है। बुनियादी स्तर और आरंभिक स्तर का शिक्षण — विद्यार्थियों की अंतर्निहित क्षमताओं (मानव अस्तित्व के सभी पाँच स्तरों, पंचकोशों को स्पर्श करते हुए) को पोषित करते हुए मध्य स्तर के अनुरूप उनकी अधिगम क्षमता में उत्तरोत्तर प्रगति का मार्ग प्रशस्त करता है। इस प्रकार, मध्य स्तर, आरंभिक और माध्यमिक स्तरों के मध्य एक सेतु का कार्य करता है, जो कक्षा 6 से कक्षा 8 तक तीन वर्ष तक विस्तारित है।

मध्य स्तर पर, 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023' का उद्देश्य विद्यार्थियों का परिचय उन आवश्यक कौशलों से कराना है जो उनके जीवन में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक हैं। यह उनकी विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक और व्याख्यात्मक क्षमताओं को बढ़ाने और उन्हें संभावित चुनौतियों एवं अवसरों के लिए तैयार करने का प्रयास है। एक विविधतापूर्ण पाठ्यक्रम, जिसमें नौ विषयों, तीन भाषाएँ जिनमें से कम से कम दो भारतीय मूल की भाषाएँ, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कला-शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, योग और आरोग्य एवं व्यावसायिक शिक्षा सम्मिलित हैं, जो उनके समग्र विकास को बढ़ावा देंगे।

ऐसी परिवर्तनकारी शिक्षण संस्कृति के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातें आवश्यक हैं। उनमें से एक है— विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्रों में उपयुक्त और संवादात्मक पाठ्यपुस्तकों का होना, जो प्रत्यक्ष निर्देश और अन्वेषण एवं पूछताछ के अवसरों के बीच एक विवेकपूर्ण संतुलन बनाते हुए विषयवस्तु और शिक्षण पद्धति के बीच मध्यस्थता में केंद्रीय भूमिका निभाएगी। कक्षा-व्यवस्था, प्रौद्योगिकी एकीकरण और शिक्षक-तैयारी वो शर्तें हैं जो पाठ्यचर्या क्षेत्रों में आंतरिक एवं बाह्य वैचारिक संबंध स्थापित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प), अपनी ओर से, विद्यार्थियों को ऐसी उच्च गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। इस उद्देश्य के लिए विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (सी.ए.जी.) गठित किए गए हैं, जिनमें ख्याति-प्राप्ति विषय-विशेषज्ञ, शिक्षाविद, कलाकार और शिक्षक सम्मिलित हैं। सम्मानित सदस्यों ने ऐसी पाठ्यपुस्तकों को विकसित करने के लिए हर संभव प्रयास किया है। कक्षा 7 के लिए कला की पाठ्यपुस्तक *कृति* इनमें से एक है।

कृति की विषयवस्तु में दृश्यकला, नृत्य, रंगमंच और संगीत के कला रूप सम्मिलित हैं। यह पाठ्यपुस्तक शिक्षार्थियों को अपनी रचनात्मकता का पता लगाने के साथ-साथ स्वयं को अभिव्यक्त करने और स्व-अन्वेषण के अवसर देती है। *कृति* ने दृश्य और अन्य घटकों में समृद्ध भारतीय ज्ञान प्रणाली, भारत की कलात्मक और सांस्कृतिक विरासत आदि को अपनी विषयवस्तु में समाहित किया है। कला में सभी जेंडर और विशेष योग्यता वाले विद्यार्थियों का समावेशन का गुण अंतर्निहित है जो सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान करती है। प्रौद्योगिकी एकीकरण का

अधिकतम उपयोग करते हुए, अतिरिक्त शिक्षण संसाधनों के रूप में क्यू.आर. कोड को पूरे पाठ्यक्रम में समाहित किया गया है।

मेरे विचार से, जैसा कि 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023' ने अपनी पाठ्यचर्या संबंधी लक्ष्यों में परिकल्पित किया है, *कृति* ने पाठ्यक्रम के सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए, विषय और विषयवस्तु के उचित चयन के माध्यम से, विद्यार्थियों के बीच स्वाभाविक जिज्ञासा को बढ़ावा देने और इस स्तर पर उनमें मूल दक्षताओं को विकसित करने, रचनात्मकता, अन्वेषण और विभिन्न कला रूपों के अनुभवों के संवर्धन में सफलता प्राप्त की है। इसके अंतर्गत सभी विद्यार्थियों को विभिन्न गतिविधियों में सम्मिलित करने के लिए विचारपूर्वक खंड और अध्याय परिकल्पित किए गए हैं, जिससे उनकी रचनात्मकता और अभिव्यक्ति सामने आती है। यहाँ सुझाई गई प्रत्येक गतिविधि विद्यार्थियों को उनके प्राकृतिक परिवेश, दैनंदिन या मानवीय सहयोग से और अधिक सीखने के संसाधनों की अन्वेषण की यात्रा पर ले जाएगी। विद्यार्थियों के मार्गदर्शन और प्रोत्साहन में माता-पिता और शिक्षकों की भूमिका भी अमूल्य होगी।

मैं इस पाठ्यपुस्तक के विकास में सम्मिलित सभी लोगों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ और आशा करता हूँ कि यह सभी हितधारकों की अपेक्षाओं को पूरा करेगी। इसके साथ ही, मैं पुस्तक के सभी उपयोगकर्ताओं से सुझाव और प्रतिक्रियाएँ भी आमंत्रित करता हूँ, जो इसके भावी उन्नयन में सहायक सिद्ध होंगी।

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
अप्रैल 2025

पुस्तक के बारे में

कक्षा 7 के लिए निर्मित की गई कला की पाठ्यपुस्तक *कृति* भारत के विविध कला रूपों के विषय में आपकी समझ को व्यापक बनाने का एक प्रयास है। यह पहल आपके दृष्टिकोण को व्यापक बनाएगी और संगीत, नृत्य, रंगमंच और दृश्य कला जैसे कला रूपों के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त रचनात्मकता और संस्कृति की अनगिनत अभिव्यक्तियों के लिए प्रशंसात्मकता को बढ़ावा देगी। कक्षा 3 से विभिन्न कला रूपों के अन्वेषण और अभ्यास करने के बाद अब आप जानते हैं कि हम अपने देश में एक जीवंत कलात्मक संसार से घिरे हुए हैं। हमारे आस-पास की दैनिक घटनाओं से प्रेरित विचार या विषय से जन्मी प्रत्येक अभिव्यक्ति अनूठी होती है। ये विषय प्रकृति की सुंदरता, लोगों के विविध कार्यों, प्रेम, सहिष्णुता, समानुभूति, द्वंद्व और नवाचार जैसी मानवीय भावनाओं और साथ-साथ मानव जीवन के ताने-बाने को आकार देने वाले समस्या निवारक तत्वों के सार में चुनते हैं। प्रत्येक भाव्यभिव्यक्ति गहन विचारों, विश्लेषण की गहन परतों और एक स्वतंत्र क्रियात्मकता को अपने में समाहित किए रहती है जो इसे व्यक्तिगत संज्ञानात्मक समझ और रचनात्मकता की विशिष्ट अभिव्यक्ति के रूप में ढाल देती है।

भारत में प्रचलति विभिन्न कला रूप, संबंधित समुदायों की दैनिक जीवन को व्यक्त करते हैं। यह समुदाय के घरानों और परंपराओं के पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरण में दृष्टिगत होता है। ये औपचारिक प्रलेखन के बाद यह ऐतिहासिक विकास और समकालीन प्रथाओं की महान कहानी एवं एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बन जाते हैं। उदाहरण के लिए, संगीत में, 'जाति' और 'ग्राम' ही राग, गीति, ध्रुवपद, ख्याल, ठुमरी आदि में विकसित हुए। नृत्य के ऐतिहासिक विकास में नृत्त, नृत्य और नाट्य— शास्त्रीय नृत्य और लोक नृत्य में विकसित हुए। इसी तरह दृश्य कला में वरली, मधुबनी, ऐपण आदि या रंगमंच में तोगलू गोम्बे-अट्टा, जात्रा, यक्षगान उन अद्भुत अभिव्यक्तियों को प्रकट करते हैं जो सामूहिक रूप से किसी ऐसी सौंदर्यपरक के निर्माण की ओर ले जाते हैं जो वास्तविक रूप में सौंदर्यपूर्ण हो एवं अपनी विभिन्न छवियों के संयोजन से समाज के चित्रपट का निर्माण करती है। नवरस — नौ मौलिक मानवीय भाव — कलात्मक और गहन सौंदर्यपूर्ण रूप से अनगिनत विचारों को व्यक्त करने के लिए सशक्त माध्यम के रूप में कार्य करते हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणाली कलात्मक संसार के रत्नों से भरी हुई है। जिसे हितधारकों को शिक्षा में फिर से जीवंत करना है, जिससे वे कला के विभिन्न क्षेत्रों में पहले से उपलब्ध ज्ञान के आधार को समझ सकें। ये विचार ही कला में पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन के प्रेरक हैं। इसके उद्देश्य के आधार में वैश्विक परिवेश में रचनात्मकता, नए विचार और निरंतर प्रगति के माध्यम से उभरते रुझानों के अनुरूप भारतीय कला को मूल्यवान बनाने का दृष्टिकोण निहित है। अतीत के मूल्यों, परंपराओं और कलात्मक प्रयासों को कला के साथ जोड़ना हमेशा मूल्यवान होता है, यह वर्तमान को श्रेष्ठ बनाने के लिए निरंतर विकास और भविष्य की ओर बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करता है। जो कुछ भी उपलब्ध है उसकी सराहना करना कौशल विकास को पूर्ण बनाता है और क्षमता निर्माण में योगदान देता है।

वर्तमान पाठ्यपुस्तक को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की अनुशंसा के अनुरूप और कला शिक्षा हेतु 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023' में निर्धारित पाठ्यक्रम लक्ष्यों, दक्षताओं और अधिगम प्रतिफलों के अनुसार तैयार किया गया है। पुस्तक रंगमंच, संगीत, नृत्य, दृश्य कला के बहुमुखी क्षेत्रों को सम्मिलित करती है। कला रूपों को आकार एवं आधार देने वाले मूल तत्वों को सरल एवं आनंददायक बनाने के लिए आकर्षक गतिविधियों की आयु-उपयुक्त आवश्यकताओं के अनुसार चर्चा की गई है। पाठ्यपुस्तक की सामग्री कलाकारों

की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति, उनकी उपलब्धियों और दैनिक जीवन की घटनाओं के साथ हमारे संसार के घनिष्ठ संबंध को समझने में सहायक होगी। यह निश्चित रूप से आपको विभिन्न तकनीकों और शैलियों का पता लगाने और यहाँ तक कि स्वयं की शैली एवं तकनीक के विकास के लिए प्रेरित करेगी। प्रत्येक गतिविधि की संरचना आपको एक अनूठा अनुभव प्रदान करने के लिए की गई है। कला की सुंदरता यह है कि एक भाव की विभिन्न कलारूपों में अभिव्यक्ति में विभिन्नता के साथ-साथ समानताएँ दृष्टिगत होती हैं। अतः यह विभिन्न रुचियों और रुझानों वाले लोगों से एक साथ संबंध स्थापित कर सकती है, सभी व्यक्ति कलाओं से अपना अनूठा संबंध बना सकते हैं। इस पुस्तक में दिए गए अभ्यासों, गतिविधियों और सूचनाओं के अतिरिक्त, कई व्यावहारिक व रचनात्मक विचारों के उदाहरण भी दिए गए हैं, जिन्हें क्यू.आर. कोड स्कैन करके प्राप्त किया जा सकता है।

कक्षा 7 की *कृति* की चार इकाइयाँ हैं —

- रंगमंच कला के लिए,
- संगीत कला के लिए,
- नृत्य कला के लिए,
- दृश्य कला के लिए।

पाठ्यपुस्तक विभिन्न अवधारणाओं को इस प्रकार प्रस्तुत करती है।

रंगमंच

रंगमंच कक्षा 7 के ऊर्जावान विद्यार्थियों के लिए तथ्यों की रोचक जानकारी और आत्म-अन्वेषण के साथ-साथ समान मात्रा में मनोरंजन भी लाया है। भावों की गहरी समझ से लेकर पैंटोमाइम जैसे नए कला रूपों का अन्वेषण करने तक, उनके सामने एक पूरा नया संसार है। प्रत्येक अध्याय को इस प्रकार से योजनाबद्ध किया गया है कि वे न केवल रंगमंच से संबंधित तत्व सीखते हैं, अपितु एक नया कौशल भी प्राप्त करते हैं जो उन्हें जीवन में आने वाली चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम बनाता है।

- पहले अध्याय में वे समानुभूति और दूसरों के भावों को स्वीकार करना सीखते हैं।
- दूसरे अध्याय में उन्हें मूकाभिनय की एक अनूठी कला से परिचित कराया गया है! इसके माध्यम से शब्दविहीन-संवाद स्थापित करने और लोगों से अधिक उन्नत प्रकार से संबंध स्थापित करने में सहायता मिलेगी।
- तीसरा अध्याय मंच-पार्श्व कार्यों के ज्ञान के माध्यम से प्रबंधन और संगठनात्मक कौशल का निर्माण करता है।
- चौथा अध्याय उन्हें कहानी कहने की कला और भारत में इसके समृद्ध इतिहास से परिचित कराता है।

संगीत

सा रे ग म प ध नि स्वर में असंख्य रचनात्मक संभावनाएँ हैं। आरोह और अवरोह स्वरों के माध्यम से बुने गए स्वरूप हमें बहुत-सी शैलियों में संगीत की रचनाएँ बनाने में सक्षम करते हैं। कक्षा 6 में विभिन्न रूपों और संदर्भों में उनकी प्रस्तुति की शैलियाँ, लोगों को प्रकृति, मानवीय भावों, प्रतिष्ठित कलाकारों, संगीत वाद्ययंत्रों और आवाज़ों के प्रभाव, राग और ताल की प्रणालियों आदि द्वारा एक अद्वितीय अमूर्त कला, संगीत को समझने का आधार बनती है। समग्र रूप से कक्षा 6 की सामग्री ने आपको नाद या ध्वनि की जटिल बारीकियों का पता लगाने में आपकी सहायता करने का प्रयास किया। कक्षा 7 की पाठ्यपुस्तक आपको संगीत में एक और रोचक और ज्ञानवर्धक यात्रा पर ले जाती है। यह पुरुष एवं महिला स्वर के

प्रभाव को समझने के लिए रचनाओं के विश्लेषण पर बल देती है। इसके द्वारा संगीत के विभिन्न स्वरूपों में पाई जाने वाली परतें, गति, मनोदशा, एकल और समूह प्रस्तुतियों के महत्व को समझा जा सकता है। कई संगीतकारों के बीच तालमेल जहाँ सामंजस्य, लय और गतिशीलता एक भूमिका निभाता है, संगीत की समृद्ध एवं अधिक जटिल रूप की विभिन्न विधाएँ, जैसे— सबद, संगीत कथाएँ या कहानी सुनाना, शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत के उदाहरणों के माध्यम से समझाती है। मानव की भावनाओं, समाज सुधार, महिलाओं की सहभागिता, समावेशिता में भी संगीत प्रस्तुति और कौशल की महत्वपूर्ण भूमिका है।

हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत, दोनों की सूक्ष्मता में राग, उनके तत्व, रचनाएँ, विभिन्न ताल और ऐतिहासिक विकास सम्मिलित हैं। संक्षेप में, संगीत केवल स्वरों के क्रम से कहीं अधिक है। यह अभिव्यक्ति का एक ऐसा रूप है जो आत्मा को छूता है, कहानियाँ सुनाता है, भावों को जगाता है और अन्य कला रूपों से जुड़ता है और सांस्कृतिक एवं भावनात्मक अभिव्यक्ति का एक समृद्ध ताना-बाना सा है।

नृत्य और अंग संचालन

कक्षा 7 की नृत्य इकाई के अंतर्गत निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा—

- कक्षा 6 में की गई अंग संचालन संबंधी गतिविधियों के अभ्यास को जारी रखा जाएगा।
- कलाओं के अंतर्संबंधों के बारे में सीखना, विशेषकर मूर्तिकला और ज्यामितीय आकृतियों को देखना।
- नृत्य की कुछ मौलिक इकाइयों को सीखना, जिसमें कदम, छलांग, अपने शरीर के साथ सहज होना और चक्कर सम्मिलित हैं।
- भावनात्मक अभिव्यक्तियों में सहजता का स्तर और उन्हें प्रकृति से जोड़ना।
- नृत्य एवं गति में समकालीन विचार प्रक्रिया और नृत्य भंगिमाओं एवं हस्त-मुद्राओं में रचनात्मकता। नृत्य के माध्यम से कहानियों, भावों और आध्यात्मिक विषयों की अभिव्यक्ति पर चर्चा।
- जेंडर संवेदनशीलता हेतु अन्य जेंडर चरित्रों की भूमिकाओं का सहज मंचन।
- भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी और क्षेत्रीय लोक नृत्यों जैसे भारतीय नृत्य रूपों की विविधता का अन्वेषण तथा उल्लेखनीय नृत्य कलाकारों के बारे में शोध।
- सामूहिक प्रयास और सहयोग का महत्व तथा नृत्य और गतिविधि के माध्यम से समग्र विकास करना।
- नृत्य मुद्राओं का अवलोकन और लघु नृत्य अनुक्रमों की संरचना करना।

दृश्य कला

कक्षा 6 में आपका ध्यान प्रकृति, लोगों, दैनिक उपयोग की विभिन्न प्रकार की वस्तुओं, कला परंपराओं और तकनीकों को उनके बहुआयामी पहलुओं के साथ देखने पर केंद्रित था। इस वर्ष रेखा, आकार, रूप, रंग, मूल्य, बनावट और स्थान के माध्यम से आपके पास विविध विधियों से अभिव्यक्ति करने की संभावना होगी। इसी प्रकार कक्षा 7 में अवधारणाओं को उत्तम ढंग से समझने के लिए दृश्य कलाओं की विभिन्न परिपाटियों से आपका परिचय होगा, जिनमें कला-इतिहास के साथ-साथ चित्रकारी, पेंटिंग, विन्यास और पारंपरिक-शिल्प सम्मिलित हैं। एक छोटी-सी घास, पत्ती, पत्थर, कपड़ा, ऐतिहासिक स्मारक, रसोई में बर्तन, जिस कमरे में आप रहते हैं या आपकी कक्षा में आकार, सतह, रंग, आयाम आदि में इतनी विविधता होती है कि आप इसके अवलोकन और समझ को क्रमिक अन्वेषण से

अनूठा पाते हैं। रेखाचित्रों, रंग, मिट्टी, कागज की सतह आदि के माध्यम से आपकी अभिव्यक्ति आपके कार्य को रोचक बनाती है, आपके मस्तिष्क को तीव्र करती है और आपको गैर-मौखिक रूप से अभिव्यक्त करने के लिए उत्तम कौशल और विचार देती है, जो आपको आंतरिक आनंद और संतुष्टि का अनुभव कराती है। ये अध्याय उन चमत्कारिक संबंधों का उद्घाटन करते हैं जो दृश्य कलाओं को रंगमंच, संगीत, नृत्य के साथ-साथ विज्ञान, गणित, इतिहास और विभिन्न अन्य विषयों के साथ एकीकृत करते हैं। दृश्य कलाओं के माध्यम से प्राप्त अंतर्दृष्टि और कौशल प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी शिक्षा और जीवन के सभी पहलुओं में अद्वितीय, रचनात्मक और प्रभावशाली उपायों से अपनी भावनाओं एवं विचारों को संप्रेषित करने में सहायता करेंगे।

प्रतीकों और चिह्नों के रूप में वस्तुओं का जीवंत चित्रण, रंग चक्र के माध्यम से रंगों का अध्ययन और रंगों के मिश्रण और मिलान के लिए अभ्यास, मुख के भावों के चित्रण के साथ मानव सिर के मूल अनुपात और चित्रांकन में अनुपात की उपयोगिता का विषय, कला-इतिहास के उदाहरण के रूप में रीलीफ मूर्तिकला, विभिन्न क्षेत्रों के वस्त्रों और कढ़ाई के माध्यम से स्थानीय कलाओं और परंपराओं की खोज तथा सुलेख की कला — जो कलात्मक विधियों से अक्षरों, लिपियों और लिखित शब्दों का पता लगाती है, ये इस पाठ्यपुस्तक के विभिन्न विषय हैं। दृश्य कलाओं की यह यात्रा न केवल आपकी रचनात्मकता को बढ़ाएगी, अपितु शब्दों से परे स्वयं को अभिव्यक्त करने का एक अनूठा तरीका भी प्रदान करेगी।

विभिन्न कला रूपों का अन्य विषयों के साथ एकीकरण

- **सांस्कृतिक जागरूकता**— विद्यार्थी उन कलात्मक परंपराओं का महत्व समझते हैं जो भारत की सांस्कृतिक पहचान की रीढ़ हैं।
- **रचनात्मकता और अभिव्यक्ति**— कला रूपों के साथ प्रयोग और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने का अवसर प्रदान करना।
- **अंत:विषयक अधिगम**— इतिहास, भूगोल और साहित्य के ज्ञान से व्यापक संदर्भ में कला की समझ को गहरा करना।
- **विरासत से जुड़ाव**— इन कला रूपों का अध्ययन करके, विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों के प्रति गर्व और जुड़ाव की भावना का अनुभव प्रदान करना।
- यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि *कृति* न केवल विद्यार्थियों को शिक्षित करती है, अपितु उन्हें भारत की अविश्वसनीय कलात्मक विरासत से जुड़ने और उसका उत्सव मनाने के लिए प्रेरित भी करती है। यह देखना रोचक होगा कि प्रत्येक कला रूप में गतिविधियाँ विज्ञान, गणित, भाषा और सामाजिक विज्ञान जैसे अन्य विषयों के साथ कैसे एकीकृत होती हैं, जो शिक्षा के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती हैं। कक्षा 7 में कला के विविध पहलुओं की खोज का आनंद लें।

शर्बरी बनर्जी
सदस्य-समन्वयक,
सहायक आचार्य, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

1. महेश चंद्र पंत, *कुलाधिपति*, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान ***(अध्यक्ष)***
2. मञ्जुल भार्गव, *प्रोफेसर*, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी ***(सह-अध्यक्ष)***
3. सुधा मूर्ति, *प्रतिष्ठित लेखिका* एवं *शिक्षाविद*
4. बिबेक देबरॉय, *अध्यक्ष*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)
5. शेखर मांडे, पूर्व *महानिदेशक*, सी.एस.आई.आर. एवं *प्रतिष्ठित प्रोफेसर*, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
6. सुजाता रामदोरई, *प्रोफेसर*, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा
7. शंकर महादेवन, *संगीत विशेषज्ञ*, मुंबई
8. यू. विमल कुमार, *निदेशक*, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरू
9. मिशेल डैनिनो, *विजिटिंग प्रोफेसर*, आई.आई.टी., गांधीनगर
10. सुरीना राजन, *आई.ए.एस.* (सेवानिवृत्त), हरियाणा एवं पूर्व महानिदेशक, एच.पी.ए.
11. चामू कृष्ण शास्त्री, *अध्यक्ष*, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय
12. संजीव सान्याल, *सदस्य*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)
13. एम.डी. श्रीनिवास, *अध्यक्ष*, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज, चेन्नई
14. गजानन लोंढे, हेड, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.
15. रोबिन छेत्री, *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम
16. प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रोफेसर*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
17. दिनेश कुमार, *प्रोफेसर*, योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
18. कीर्ति कपूर, *प्रोफेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
19. रंजना अरोड़ा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली ***(सदस्य-सचिव)***

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष

संध्या पुरेचा, *अध्यक्ष*, संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली

योगदान

- आराधना गुप्ता, *मार्गदर्शक*, नेशनल मिशन फॉर मेंटरिंग; *दृश्य कला शिक्षक* (सेवानिवृत्त), मॉर्डन स्कूल, बाराखंभा रोड, नई दिल्ली
- ए.के. सुधन्वा, *नाट्य संकाय*, श्री विद्या केंद्र, बेंगलुरू
- एस.आर. राजश्री, *सदस्य*, एन.एस.टी.सी. कार्यक्रम कार्यालय; *रंगमंच विशेषज्ञ*, चाणक्य विश्वविद्यालय एवं *संस्थापक-निदेशक*, व्योमा आर्टस्पेस एंड स्टूडियो थिएटर, बेंगलुरू
- कपिल शर्मा, *सहायक आचार्य*, नाट्यशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय
- ज्योति भट्ट, *भरतनाट्यम संकाय*, पूर्णपरामति, बेंगलुरू
- प्रियदर्शिनी घोष, *नृत्यांगना*, *कोरियोग्राफर* एवं *नृत्य विदुषी*, *कलात्मक निदेशक*, प्रियदर्शनी आर्ट्स
- पी.वी. मधुसूदनन, *सहायक आचार्य*, कला शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
- बिंदु सुब्रमण्यम, *गायिका-संगीतकार* एवं *सह संस्थापक*, सुब्रमण्यम अकादमी ऑफ परफॉरमिंग आर्ट्स
- मानसी प्रसाद, *कर्नाटिक गायिका*, *बोर्ड सदस्य (पूर्व निदेशक)*, इंडियन म्यूजिक एक्सपीरियंस म्यूजियम, बेंगलुरू
- मालविका राजनारायण, *दृश्य कला विशेषज्ञ*, दृश्य कला शिक्षा, विजिटिंग फैकल्टी, अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, भोपाल
- शिवांगी पुरोहित, *उप-प्रधानाचार्य*, ज्योति पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली
- सिद्धि गुप्ता, *संकाय सदस्य*, सृष्टि मणिपाल इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट, डिजाइन एंड टेक्नोलॉजी, बेंगलुरू
- सुषमा यादव, *सहायक आचार्य*, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

अनुवादक

- अरुणा कुमारी, *पी.आर.टी. संगीत*, पी.एम. श्री केंद्रीय विद्यालय, दानापुर कैंट (प्रथम पाली), पटना
- आलोक तिवारी, *लेक्चरर*, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर स्कूल ऑफ स्पेशलाइज्ड एक्सीलेंस, नई दिल्ली
- ऋतु जैन, *टी.जी.टी. कला शिक्षा*, पी.एम. श्री केंद्रीय विद्यालय, ए.एफ.एस. तुगलकाबाद, नई दिल्ली
- कपिल शर्मा, *सहायक आचार्य*, नाट्यशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, राजस्थान
- मुकेश भारती, *पी.आर.टी. संगीत*, पी.एम. श्री केंद्रीय विद्यालय, मेरठ कैंट, उत्तर प्रदेश

- रचना गुप्ता, *पी.आर.टी. संगीत*, पी.एम. श्री केंद्रीय विद्यालय, ललितपुर
- शिव कुमार शुक्ला, *पी.जी.टी. संगीत*, हाई स्कूल, भभुआ, बिहार

समीक्षक

- अनुराग बेहार, *सदस्य*, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति (एन.सी.एफ.ओ.सी.)
- अनुराधा पाल, *तबला वादक*, बहु-संगीत वाद्य कलाकार एवं संगीतकार
- मञ्जुल भार्गव, *प्रोफेसर* एवं *सह-अध्यक्ष*, एन.एस.टी.सी.

सदस्य-समन्वयक

- शर्बरी बनर्जी, *सहायक आचार्य*, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

अनुकूलन समूह

- **संयोजक**

  कौस्तभ चटर्जी, डॉ.डी.के.बोदले

- **संपादन सहयोग**

  दानीराम वर्मा (से.नि.प्राचार्य), डॉ.आर.एस.चौहान (से.नि.प्राचार्य), बी.आर.साहू (पूर्व फैकल्टी एस.सी.ई.आर.टी. भाषाविद्)

- **समन्वयक**

  प्रीति सिंह

- **सहयोग**

  डॉ.पी.सी.लाल यादव, डॉ.सीताराम साहू, रजनी शर्मा, मधु दानी, संगीता रंघाती, प्रतिभा त्रिपाठी, लालिमा चंद्राकर, मनीष साहू, रोशन सोनी, नरेश साहू

राज्य शिक्षा स्थायी समिति, छत्तीसगढ़

क्रं	नाम व पदनाम	
1.	श्री आलोक चक्रवाल, कुलपति गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर	**अध्यक्ष**
2.	संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर	**सदस्य सचिव**
3.	संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय, छत्तीसगढ़	**सदस्य**
4.	मिशन संचालक, समग्र शिक्षा, रायपुर, छत्तीसगढ़	**सदस्य**
5.	डॉ. वासुदेव साहसी, सहा.प्रा., शा.जे. योगानंदम छ.ग. महाविद्यालय, रायपुर	**सदस्य**
6.	डॉ. सुभाष चन्द्राकर, प्राध्या., दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर	**सदस्य**
7.	श्री मनीष देवांगन, वि.खं. शिक्षा अधिकारी, कार्या. धरसींवा, जिला-रायपुर	**सदस्य**
8.	श्री नरेन्द्र सिंह राजपूत, सहा. शिक्षक, प्राथ. विद्या. सिवनी खुर्द (बोडला), जिला-कबीरधाम	**सदस्य**
9.	श्री मनोज सिंह, शा. शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर	**सदस्य**
10.	श्री दिलीप केसरवानी, पूर्व प्राचार्य, कबीर नगर, रायपुर	**सदस्य**

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा निरीक्षण समिति के सम्मानित अध्यक्ष एवं सदस्यों, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (सी.ए.जी.) कला के अध्यक्ष एवं सदस्यों तथा अन्य संबंधित सी.ए.जी. के मार्गदर्शन एवं समर्थन के लिए आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने अंतप्रेक्षण (क्रॉस-कटिंग) विषयों पर दिशा-निर्देश दिए तथा कार्यक्रम कार्यालय के सदस्यों को इस पाठ्यपुस्तक के विकास में निरंतर सहयोग प्रदान किया। हम निम्नलिखित संस्थानों के आभारी हैं जिन्होंने हमें लिखित सामग्री, चित्र, फोटोग्राफ और ऑडियो-वीडियो सामग्री के रूप में अपने संसाधनों का उपयोग करने की अनुमति दी-संगीत नाटक अकादमी; कला उत्सव अभिलेखागार, रा.शै.अ.प्र.प.; सांस्कृतिक संसाधन एवं प्रशिक्षण केंद्र; व्योमा आर्टस्पेस एंड स्टूडियो थिएटर, बेंगलुरू; सुब्रमण्यम एकेडमी ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स, बेंगलुरू; नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, नई दिल्ली। अजीम प्रेमजी फाउंडेशन; मॉडर्न स्कूल, नई दिल्ली; ज्योति पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली; ग्लोबल नॉलेज नेटवर्क सोसाइटी (जी.के.एन.एस.); स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूशंस (ओपन एक्सेस इमेज); क्लीवलैंड म्यूजियम ऑफ आर्ट (पब्लिक डोमेन इमेज); मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट (ओपन एक्सेस इमेज); वेलकम लाइब्रेरी, लंदन; नेशनल म्यूजियम, नई दिल्ली: छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय, मुंबई; चिल्ड्रन लिटिल थिएटर, कोलकाता।

परिषद् पुस्तक के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले सभी व्यक्तियों के सहयोग को स्वीकार करती है। परिषद् पुस्तक की समीक्षा के लिए निधि एम. शास्त्री, पद्मश्री निरंजन गोस्वामी, संस्थापक, भारतीय माइम थियेटर, कोलकाता; वाल्टर डिसूजा, निदेशक, किन्नरा माइम संस्थान, बेंगलुरू; द्वारका प्रसाद, पारंपरिक कावड़ कलाकार, राजस्थान; अक्षय गांधी, कावड़ कलाकार, मुंबई; अंबी सुब्रमण्यम, वायलिन वादक-संगीतकार और सह-संस्थापक, सापा बेंगलुरू; आशु अरोड़ा, सुलेख कलाकार, फरीदाबाद; प्रियंका के. मोहन, यक्षदेगुला, बेंगलुरू; कोंथूजम रतन सिंह, एन. श्रीकांत नटराजन, संपूर्णा मुखर्जी, नृत्यांगना और नृत्य प्रशिक्षक, कोलकाता; सानिका सेनगुप्ता, डिजाइनर और कलाकार, कोलकाता; के.आर. बाबू, भित्ति चित्र कलाकार, केरल के प्रति आभारी है।

हम कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग में संविदा पर कार्यरत वरिष्ठ अनुसंधान सहचारि प्रतीक रंजन झा, विवेक कुमार और अजय कुमार; कनिष्ठ परियोजना अध्येता, शैलेन्द्र कुमार, नेहा सिंह, दीपक कुमार ठाकुर और ऋचा शर्मा; प्रूफरीडर अंचिका सिंह; टाइपिस्ट मन्नू यादव के सराहनीय योगदान के लिए उन्हें धन्यवाद देते हैं।

परिषद् इस पुस्तक के संपादन के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के प्रकाशन प्रभाग के सदस्यों दिनेश वशिष्ट, संपादक (संविदा); कहकशा, सहायक संपादक (संविदा); राकेश कुमार, सीनियर प्रूफरीडर, राहिल अंसारी और आफरीन, प्रूफरीडर (संविदा) के प्रति आभारी है। इसके अतिरिक्त परिषद् पांडुलिपि को पुस्तक का स्वरूप प्रदान करने के लिए पवन कुमार बरियार, प्रभारी, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; अजय कुमार प्रजापति, पूनम और गीता, डी.टी.पी. ऑपरेटर (संविदा) के प्रयासों की भी सराहना करती है।

समय आवंटन और आकलन

कला शिक्षा की पाठ्यपुस्तक में चार खंड हैं, प्रत्येक खंड एक अलग कला-रूप से संबंधित है। समय सारिणी की योजना इस तरह से बनाना महत्वपूर्ण है कि सभी कला-रूपों की शिक्षा वर्षभर में समान रूप से वितरित हो।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.एस.ई.) के अनुसार, पूरे शैक्षणिक वर्ष में कला शिक्षा के लिए आवंटित समय — 100 घंटे (या 40 मिनट की 150 अवधि) है। इस पुस्तक को इस समय आवंटन को ध्यान में रखते हुए लिखा गया है।

सभी चार कला-रूपों को सप्ताहभर में वितरित करना बेहतर है, क्योंकि सभी खंडों की प्रगति एक साथ होगी। ऐसी प्रणाली से बचना बेहतर है जहाँ एक कला-रूप को दूसरे के पूर्ण होने के बाद लिया जाता है।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्चर्या की रूपरेखा की उदाहरणात्मक समय सारिणी के अंतर्गत, कला शिक्षा को सप्ताह के दौरान 4 समय अवधि और शनिवार को 1 समय अवधि आवंटित की गई है। दस्तावेज ब्लॉक अवधि के उपयोग का भी सुझाव देता है, जहाँ दो 40 मिनट की अवधि को गतिविधि-आधारित कक्षाओं के लिए पर्याप्त समय बनाने के लिए जोड़ा जाता है। इससे 80 मिनट (1 घंटा 20 मिनट) का निरंतर समय मिलेगा। इन विकल्पों के आधार पर चार कला-रूपों को आवंटित किया जा सकता है, सप्ताह के दिनों में चार अवधि और शनिवार को उन गतिविधियों के लिए उपयोग किया जा सकता है जो अंतःविषय हैं या बच्चों को संगीत कार्यक्रम, प्रदर्शन अथवा कला दीर्घाओं, जैसे— कला-आधारित क्षेत्र भ्रमणों पर ले जाने के लिए हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के अनुसार समय वितरण

कला रूप	दृश्य कला	संगीत	नृत्य	रंगमंच	बहुविषयक/अनुभवात्मक कार्य
घंटों में समय	20	20	20	20	20
40 मिनट की अवधि की संख्या	30	30	30	30	30

समय सारणी

सप्ताह के दौरान अलग-अलग अवधियों के लिए समय सारणी – 40 मिनट की अवधि

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
	कला शिक्षा (संगीत)		कला शिक्षा (दृश्य कला)		कला शिक्षा (अभ्यास/क्षेत्र भ्रमण)
कला शिक्षा (रंगमंच)					
		कला शिक्षा (नृत्य)			

कालांश के लिए समय सारणी – 80 मिनट की अवधि

सप्ताह	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सप्ताह 1		कला शिक्षा (संगीत) 2 संयुक्त कालांश 80 मिनट		कला शिक्षा (दृश्य कला) 2 संयुक्त कालांश 80 मिनट		कला शिक्षा (अभ्यास/क्षेत्र भ्रमण)
सप्ताह 2		कला शिक्षा (रंगमंच) 2 संयुक्त कालांश 80 मिनट		कला शिक्षा (नृत्य) 2 संयुक्त कालांश 80 मिनट		कला शिक्षा (अभ्यास/क्षेत्र भ्रमण)

प्रथम योजना में 40 कालांश (पीरियड) होंगे और प्रत्येक सप्ताह चारों कला-रूपों की कक्षाएँ होंगी, जबकि दूसरी योजना में प्रत्येक सप्ताह केवल दो कला-रूप होंगे। प्रत्येक एक कला-रूप की कक्षाएँ प्रत्येक दूसरे सप्ताह होंगी। सभी कला-रूपों का एक साथ आगे बढ़ना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे बच्चों को कला-रूपों के बीच के अंतर-संबंधों को समझने में सहायता मिलेगी जिससे वे समग्र समझ प्राप्त कर सकें।

आकलन

कला शिक्षा में मूल्यांकन विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमताओं और कलात्मक विकास को समझने और पोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अन्य विषयों के विपरीत, कला शिक्षा मूल्यांकन, रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, तकनीकी दक्षता और अभिव्यंजक क्षमताओं सहित कौशल की एक विस्तृत शृंखला का मूल्यांकन करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ये मूल्यांकन न केवल प्रगति और दक्षता को मापने के लिए डिजाइन किए गए हैं, अपितु अन्वेषण, आत्म-अभिव्यक्ति और कला के लिए गहरी प्रशंसा को प्रोत्साहित करने के लिए भी डिजाइन किए गए हैं।

मूल्यांकन के तरीके

चूँकि मूल्यांकन प्रक्रिया मुख्य रूप से कौशल-आधारित होती है, इसलिए यह बच्चे द्वारा दिए गए 'सही या गलत उत्तर' पर निर्भर नहीं होती। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि प्रश्न पत्रों और लिखित उत्तरों के साथ 'परीक्षण' की संरचना न की जाए। यह कला शिक्षा पाठ्यक्रम में उपयोग किए जाने वाले दृष्टिकोण के उद्देश्य को पूरी तरह से विफल कर देगा। पोर्टफोलियो, प्रदर्शन-समीक्षा, परियोजना आधारित मूल्यांकन और चिंतनशील आत्म-मूल्यांकन जैसी विभिन्न मूल्यांकन विधियाँ प्रत्येक विद्यार्थी की अनूठी कलात्मक यात्रा के बारे में जानकारी दे सकती हैं।

रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन

- रचनात्मक मूल्यांकन प्रत्येक कक्षा में अवलोकन और प्रत्येक गतिविधि में बच्चे के प्रदर्शन पर आधारित होता है। प्रत्येक अध्याय के अंत में दिए गए मानदंड पत्रक (रूब्रिक्स) वर्षभर स्कोर/ग्रेड की संरचना करने में सहायता करते हैं।
- योगात्मक मूल्यांकन में मूल्यांकन के लिए एक अलग दिन आवंटित किया जाएगा। वर्ष के दौरान कक्षा में आयोजित की जाने वाली गतिविधियाँ और उनके विभिन्न रूपों का उपयोग, कौशल और दक्षताओं में बच्चे की समझ और क्षमता का आकलन करने के लिए किया जा सकता है। उत्तम योजना बनाने के लिए प्रत्येक खंड के अंत में उदाहरण दिए गए हैं। विद्यार्थियों द्वारा किए गए त्वरित स्वत: स्फूर्त सृजन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

ग्रेड और अंक

चूँकि कला रचनात्मकता, दृश्यावलोकन, अभिव्यक्ति और कल्पना के विषय में है, इसलिए इसमें सही या गलत उत्तर नहीं हो सकते। इसलिए यहाँ अंकन, बच्चे द्वारा अर्जित कौशल के स्तर और योग्यताओं के मापदंडों पर आधारित है। अंकों के

माध्यम से निष्पक्ष मूल्यांकन करने के लिए शिक्षक को प्रत्येक गतिविधि के लिए योग्यताओं और सीखने के प्रतिफलों से पूर्ण रूप से परिचित होना चाहिए।

प्रत्येक मानदंड में अंकन के लिए पाँच-बिंदु पैमाने का सुझाव दिया गया है। इससे शिक्षकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों को यह स्पष्ट हो जाएगा कि बच्चा किस प्रकार प्रगति कर रहा है। नीचे दी गई तालिका का उपयोग प्रत्येक अध्याय के बाद दिए गए मापदंड पत्रक में पाँच-बिंदु पैमाने को चिह्नित करने के लिए संदर्भ के रूप में किया जा सकता है।

मात्रात्मक मूल्यांकन (मापदंड पत्रक के आधार पर अंक/ग्रेड) और गुणात्मक मूल्यांकन (बच्चे के व्यवहार, रुचि, प्रगति और अन्य पहलुओं पर शिक्षक के अवलोकन जो मापदंड पत्रक में उल्लिखित नहीं हो सकते हैं) दोनों को संयोजित करना महत्वपूर्ण है।

विद्यार्थी का सीखने का स्तर	संख्यात्मक पैमाना	ग्रेड
आरंभिक	1	E
विकासशील	2	D
होनहार	3	C
कुशल	4	B
उत्कृष्ट	5	A

मूल्यांकन मानदंड 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023' से पाठ्यचर्या लक्ष्यों (सीजी) और दक्षताओं (सी) पर आधारित है।

स्वागत है आपका कलाओं के साहसिक कार्यों में

प्रिय युवा कलाकारो,

क्या आप कला की दुनिया में एक रोमांचक यात्रा के लिए तैयार हैं, जहाँ रंग, लय, कहानियाँ और गतियाँ मिलकर जादू पैदा करती हैं! यह पुस्तक केवल सीखने के बारे में नहीं है, अपितु दृश्य कला, रंगमंच, संगीत और नृत्य के माध्यम से स्वयं को खोजने, प्रयोग करने और अभिव्यक्त करने के विषय में है, जो सभी भारतीय ज्ञान प्रणाली की समृद्ध परंपराओं में निहित है।

सृजन करें। अभिव्यक्त करें। प्रेरित करें!

इस पुस्तक के माध्यम से, आप देखेंगे कि कैसे ये सभी कला रूप आपस में जुड़े हुए हैं— प्राचीन वास्तुकला की एक रोमांचक अवधारणा द्वारा। इस पुस्तक को पढ़ने के बाद, आप प्राचीन इमारतों को कभी भी उसी तरह नहीं देखेंगे! नए दृष्टिकोण और नए विचारों के साथ, क्या आप सोचने, रचने और अपने विचारों को जीवंत करने के लिए तैयार हैं? आइए, इस रोमांचक साहसिक कार्य को एक साथ आरंभ करें!

नृत्य आपको विविध नृत्य शैलियों की यात्रा पर ले जाएगा। आप नृत-हस्त और मुद्राओं से परिचित होंगे, नृत्य में गति की समृद्धि का अन्वेषण करेंगे और यहाँ तक कि आप स्वयं के नृत्य अंशों की संरचना करने में भी समर्थ होंगे!

रंगमंच में, आप अलग-अलग चरित्रों में ढलेंगे, मूकाभिनय (mime) की शक्ति का अन्वेषण करेंगे, मंच-पार्श्व के कौशल में दक्ष होंगे और लोक कथा कहने के जादू में गोता लगाएँगे। केवल प्रदर्शन करने से कहीं अधिक, रंगमंच आपको अपनी भावनात्मक बुद्धिमत्ता को समझने और विकसित करने में सहायता करेगा।

संगीत आपको हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत की सुंदरता से परिचित कराएगा, जबकि आप व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से ताल, लय और रचनात्मक अभिव्यक्ति का पता लगाएँगे। आप अनुभव करेंगे कि संगीत हमें हमारी संस्कृति और भावों से कैसे जोड़ता है।

दृश्य कला रंगों, सुलेख, पोशाक और मूर्तिकला का संसार खोलेगी। आप सीखेंगे कि कैसे कलाकार इन तत्वों का उपयोग कहानियों को कहने, परंपराओं को संरक्षित करने और वास्तव में कुछ अद्वितीय बनाने के लिए करते हैं।

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता और अखंडता]** सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

विषय-सूची

	प्राक्कथन	*iii*
	आमुख	*iv*
	पुस्तक के बारे में	*vi*
	रंगमंच	**1**
1.	भावों को समझना	4
2.	बिन बोले सब कहें — मूकाभिनय	20
3.	आइए, डिजाइन करें — मंच तकनीक-2	30
4.	भारतीय कथा वाचन परंपरा की कहानी	46
	संगीत	**57**
5.	संगीत बनाना	61
6.	संगीत, भाव और रचनात्मकता	67
7.	राग और ताल	75
8.	लोक संगीत	88
9.	प्रदर्शन	100

	नृत्य और अंग संचालन	**108**
10.	नृत्य और मूर्तिकला	111
11.	नृत्य शब्दावली और तकनीक	121
12.	आप, नृत्य और रचनात्मकता	135
13.	व्यक्तित्व	143
14.	नाट्य	146
	दृश्य कला	**155**
15.	वस्तुओं में चिह्न और प्रतीक	158
16.	प्राकृतिक रंगपट्टिका	169
17.	आप कैसा अनुभव करते हैं	179
18.	वस्त्रों की कला और परंपरा	189
19.	सुलेखन की कला	197
20.	कलाओं में समन्वय — मूर्तियों में अंतर्निहित प्राण	207

पछत्तर दिवसीय बस्तर दशहरा

बस्तर दशहरा विश्व प्रसिद्ध है। यह 75 दिनों तक चलने वाला सबसे लंबा उत्सव है। इसमें बस्तर की आराध्या देवी माँ दंतेश्वरी के छत्र को लकड़ी से बने रथ पर बिठाया जाता है तथा नगर की परिक्रमा कराई जाती है।

इस पर्व के शुभारंभ के लिए आदिवासी समाज की कुंवारी कन्या को चयनित करके कांटों से तैयार किए गए झूले पर बिठाया जाता है। फिर उसे देवी स्वरूप , माँ दंतेश्वरी मानकर उनसे उत्सव आरंभ की आज्ञा ली जाती है। यह अनुष्ठान काछनगादी कहलाता है। काछन का अर्थ है कांटा और गादी का अर्थ है गद्दी।

यह पर्व विगत 800 वर्षों से निर्बाध रूप से मनाया जा रहा है। यह पर्व बस्तर के सभी गाँवों के एकत्रीकरण व समान प्रतिनिधित्व की भावना से ओत- प्रोत है।

रथ के लिए लकड़ी के चयन की प्रक्रिया भी रोचक है। लकड़ी के चयन के लिए ' बाँह भरनी ' रस्म किया जाता है अर्थात विशेष जाति की कन्या की बाँहों के नाप के आधार पर वृक्ष का चयन किया जाता है। इससे ही रथ के पहिए व रथ का ढांचा तैयार किया जाता है।

परिक्रमा करने वाले रथ को पूरी तरह से फूलों से सजाया जाता है। इसलिए इसे' फूल रथ' कहा जाता है।

दशहरा पर्व में होने वाले अनुष्ठान को ' मावली परघाव'कहा जाता है अर्थात जो बस्तर की आराध्या मावली माता माँ दंतेश्वरी के छत्र को सांकेतिक रूप से स्वागत पश्चात रथ पर बिठाया जाता है।

अन्य अनुष्ठानों में 'पाटजात्रा ' भीतर रैनी औरबाहर रैनी ' मनाया जाता है। साथ ही एक रोचक रस्म भी निभाई जाती है, जिसमें रथ को कृत्रिम रूप से चोरी कर जगदलपुर के पास गाँव कुम्हड़ाकोट में रखा जाता है। उसके बाद वहाँ राज परिवार के सदस्यों द्वारा पूजा -पाठ के बाद चुराये गये रथ को वापस लाया जाता है।

इतने विशालकाय रथ को खींचने के लिए पेड़ के तनों के रेशों से मोटी रस्सी बनाई जाती है , जिसे ' सियाड़ी रस्सी 'कहा जाता है।

पर्व के अंतिम दिनों में विशाल ' मुरिया दरबार ' लगता है, जहाँ राज्य के प्रतिनिधियों का प्रत्येक गाँव के प्रमुखों के साथ सीधा संवाद होता है। इस कार्यक्रम के लिए रथ यात्रा में आमंत्रित देवी- देवताओं को यथेष्ट मान देकर विदा किया जाता है।

पर्व की अवधि में बस्तर का जनमानस एवं देश- विदेश से भी पर्यटक आते हैं।

आदिवासी संस्कृति को सहेज कर रखने का महान पर्व है बस्तर दशहरा जो विश्व पर्यटन एवं नवीन संभावनाओं के द्वार भी खोलता है।

नोनी- पिला जम्माय झन आसा,
दसरा चो परब आसे काय रोसरोसा।
बाँधलू ए दांय आमि बाकी खोसा,
फन्नस कुआ खाऊन खिंडिक बोसा।

भावार्थ:- बालक, बालिकाएं और सभी लोग आएं ! कितना सुंदर दशहरे का यह पर्व है। महिलाओं ने जूड़ा बनाकर सुंदर- श्रृंगार किया है।आप भी बैठ कर पके कटहल खाते हुए आनंद लीजिए।

READY
TO-MOVE-IN
1-2 BHK FLATS
DEVKI
HOMES

रंगमंच

உளளது நிகழும் குறிப்புக் கணிப்பு க்கு ஏற்பட
உடம்பில் நிகழும் வேறுபாடு.

Ulladu nigazhum kurippu kanippukku erpada
udambil nigazum verupaadu.

जब एक अभिनेता किसी पात्र के भावों को व्यक्त करता है,
तो यह अभिनेता के शरीर एवं मन में समान परिवर्तन उत्पन्न करता है।

— अरंगेत्रम कथा,

तमिल महाकाव्य *शिलप्पादिकारम* — इलंगो अडिगल द्वारा
(संगम साहित्य)

शिक्षकों के लिए

आदरणीय रंगमंच शिक्षक,

हम बच्चों में रंगमंच के भाव को विकसित करने के लिए साथ मिलकर काम कर रहे हैं— एक ओर जहाँ रचनात्मकता, उत्साह एवं आनंद के साथ तो वहीं दूसरी तरफ परिश्रम, दृढ़ता और अनुशासन के साथ। यह टिप्पणी इस पाठ्यपुस्तक के दृष्टिकोण को आपके साथ साझा करने के उद्देश्य से लिखी गई है।

कक्षा 7 के लिए रंगमंच अनुभाग को इस प्रकार लिखा गया है कि यह कक्षा 6 के बच्चों को उनकी समझ के अगले स्तर पर ले जाए। इसमें कई ऐसी गतिविधियों को सम्मिलित किया गया है, जो प्रस्तुत की गई अवधारणाओं के सैद्धांतिक ज्ञान के साथ संयोजित हैं। एक ओर उन्हें पाठ्यपुस्तक में मौलिक ज्ञान और ऐतिहासिक समझ प्राप्त होती है, वहीं इसमें दी गई गतिविधियाँ इस समझ को पुष्ट करती हैं एवं उनके आत्मविश्वास तथा कौशल को बढ़ाती हैं। रंगमंच की कक्षाएँ प्रभावी और आनंददायक बनें यह सुनिश्चित करने के लिए यहाँ कुछ आवश्यकताएँ दी गई हैं—

खुला स्थान

बच्चे अपनी गतिविधियों के लिए स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकें, इसलिए ऐसे खुले स्थान का होना आवश्यक है, जहाँ बच्चे बिना किसी बाधा के संभावनाओं का अन्वेषण कर सकें एवं विभिन्न गतिविधियों का अभ्यास कर सकें। ऐसा खुला स्थान होना मूलभूत आवश्यकता है।

वास्तविक दुनिया के कौशल से जोड़ें

पुस्तक की सामग्री का उद्देश्य सीखने को उनके दैनिक जीवन के लिए प्रासंगिक बनाना है। रंगमंच भावों के माध्यम से समानुभूति तथा स्वीकृति का निर्माण करने से लेकर, मंच के पीछे की गतिविधियों के माध्यम से अनुशासन, योजना और प्रबंधन कौशल को बढ़ाने तक, प्रत्येक के जीवन में एक भूमिका निभा सकता है। एक शिक्षक के रूप में, यदि कक्षा की चर्चाओं में ऐसे संदर्भ लाए जाते हैं तो पाठ बहुत अधिक फलदायी होंगे।

आकलन

विद्यालय में रंगमंच एक मुख्य विषय के रूप में पढ़ने की पूरी प्रक्रिया में यह एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यद्यपि प्रत्येक विषय की तरह यहाँ भी अंक या दक्षता स्तर का होना महत्वपूर्ण है, लेकिन रंगमंच के भाव को बनाए रखना और इसे केवल एक प्रश्न पत्र वाली कागज-कलम जैसी परीक्षा तक सीमित करने से बचाना भी आवश्यक है। अंतिम परिणाम या प्रस्तुति ही एकमात्र मापदंड नहीं है। रंगमंच विषय में विद्यार्थियों के प्रयासों, विचारों एवं प्रक्रियाओं के साथ-साथ —

- ज्ञान का अनुप्रयोग
- प्रयास और भागीदारी
- रचनात्मकता एवं प्रस्तुति
- समूह कार्य तथा सहभागिता

जैसी महत्वपूर्ण गतिविधियों पर भी विचार किया जाना चाहिए।

इस संदर्भ में और अधिक स्पष्टता के लिए समय आवंटन एवं मूल्यांकन संबंधी अनुभाग को पढ़ें। रंगमंच के लिए मूल्यांकन विभिन्न स्तरों पर नियोजित किया गया है। जैसा कि नीचे उल्लेख किया गया है।

रचनात्मक आकलन

यह कक्षा में अध्यायों और गतिविधियों को पूरा करने के बाद किया जाता है। इसे दो चरणों में किया जाता है—

- **आइए, घेरा बनाएँ**— यह प्रक्रिया प्रत्येक कक्षा और प्रत्येक गतिविधि के बाद अपनाई जाती है। शिक्षक विद्यार्थियों के साथ एक अनौपचारिक वातावरण में बैठते हैं (जिससे बच्चों से खुली और सच्ची प्रतिक्रियाएँ मिल सकें) और उनसे पूछते हैं कि उन्होंने क्या किया? विद्यार्थी अपने विचार एवं अनुभव साझा करते हैं, जिनके आधार पर शिक्षक प्रत्येक बच्चे के बारे में सूचनाएँ लिखते हैं। कुछ प्रश्न पाठ्यपुस्तक में दिए गए हैं। शिक्षक कक्षा की प्रतिक्रिया के आधार पर और अधिक प्रश्नों का अन्वेषण कर सकते हैं।

आइए, घेरा बनाएँ

- अधिक उदाहरण साझा करें, जैसे चित्रों या अन्य प्रसंग जहाँ आपने भावों को देखा हो।
- यदि आपको ऐसा मंदिर बनाने का कार्य दिया जाए तो आप इसकी तैयारी कैसे करेंगे?
- आप इसका अभ्यास करने में कितना समय लगाएँगे? क्या आप इसे अपने विद्यालय के कार्य में क्रियान्वित कर सकते हैं?

- **मस्तिष्क को सक्रिय करने वाले अभ्यास (ब्रेन बूस्टर)**— बच्चों के लिए व्यावहारिक गतिविधियाँ प्रदान की गई हैं जिससे वे अध्याय में सीखी गई बातों को प्रयोग में ला सकें। इन गतिविधियों के परिणाम का उपयोग बच्चों का मूल्यांकन करने और दिए गए रूब्रिक्स को भरने के लिए किया जा सकता है। प्रत्येक गतिविधि का परिणाम यह नहीं है कि अंतिम उत्पाद कितना 'अच्छा' या 'खराब' है, अपितु यह है कि क्या प्रक्रिया को सही तरीके से समझा गया है और कौशल को अच्छी तरह विकसित किया गया है।

- **रूब्रिक्स**— प्रत्येक अध्याय के पूर्ण होने पर एक रूब्रिक दिया गया है जिसमें इच्छित सीखने के प्रतिफल सम्मिलित हैं, जिन्हें शिक्षक अंकित कर सकते हैं। बच्चों से यह भी कहा जाता है कि वे अपने प्रदर्शन की धारणा के आधार पर स्वयं को ग्रेड दें। यह आत्म-मूल्यांकन शिक्षक के लिए फीडबैक का आधार भी बन सकता है।

संकलनात्मक आकलन

यह एक गतिविधि-आधारित परीक्षा होगी जो वर्ष के अंत में आयोजित की जाएगी। इन गतिविधियों को वर्षभर सीखे गए पाठों के संयोजन के रूप में तैयार किया जाना चाहिए। मूल्यांकन व्यक्तिगत और समूह के स्तर पर किया जाएगा जिससे विभिन्न कौशलों एवं क्षमताओं का मूल्यांकन किया जा सके। खंड के अंत में गतिविधियों के विभिन्न उदाहरण दिए गए हैं।

1 भावों को समझना

भाव हमारे जीवन में सदा से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते आए हैं। प्राचीन काल से ही हमने यह समझने का प्रयास किया है कि भाव क्या हैं, क्यों हैं और हमारे जीवन में इसका क्या स्थान है। जैसा कि भरतमुनि के *नाट्यशास्त्र* में कहा गया है—

एवं रसाश्च भावाश्च नाटके स्मृताः।
य एवमेतान् जानाति स गच्छेत्मा सिद्धिमुत्तामाम् ।। 125 ।।

—*नाट्यशास्त्र*, भरतमुनि (अध्याय 7)

नाटक के प्रदर्शन में रस, भाव, मनोविकार, विचार एवं मानसिक स्थिति का सृजन आवश्यक है। नाटक पूर्ण सफलता तब ही प्राप्त कर सकता है जब प्रयोगकर्ता इन सबका गहन ज्ञान रखता हो।

आप सीखेंगे

- भावों की तीव्रता के विभिन्न स्तर।
- लोकधर्मी और नाट्यधर्मी— यथार्थवादी और शैलीबद्ध।
- प्राचीन वास्तुकला में प्रस्तुतीकरण।

0780CH01

इसका अर्थ है कि भाव केवल दर्शकों से ही नहीं, अपितु आम जीवन में भी लोगों से जुड़ने का सबसे महत्वपूर्ण साधन हैं। इसलिए, जीवन में सही संबंध स्थापित करने एवं जीवन को सकारात्मक रूप में जीने के लिए यह समझना बहुत आवश्यक है कि भाव कैसे काम करते हैं? आइए, अब तक जो हमने सीखा है, उसका एक संक्षिप्त पुनरावलोकन करें।

गत वर्ष, हमने निम्नलिखित अवधारणाओं पर चर्चा की थी —

भावों की समझ

- भाव — व्यक्ति का आंतरिक दृष्टिकोण एवं मानसिक स्थिति।
- रस — वह अनुभूति जो किसी स्थिति में भाव के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है।
- एक ही स्थिति में दो या अधिक भावों का अनुभव।
- एक ही स्थिति में आपके भाव आपके मित्रों से भिन्न हो सकते हैं।

भावों की अभिव्यक्ति

- नवरस — भावों पर भारतीय दृष्टिकोण।
- त्रासदी-हास्य — भावों पर ग्रीक दृष्टिकोण।
- हॉट सीट का खेल — कहानी कहने और भावनात्मक अभिव्यक्ति का संयोजन।
- मुखौटों का निर्माण — मुखौटों के माध्यम से भाव व्यक्त करना।

हमने जिन अवधारणाओं पर पहले चर्चा की है, उनके आधार पर अब हम भावों को गहराई से समझने तथा व्यक्त करने की ओर बढ़ेंगे। जैसा कि हमने पहले सीखा, भरत मुनि ने शोध और विश्लेषण के माध्यम से निष्कर्ष निकाला कि आठ प्रमुख भावनात्मक अनुभव होते हैं और इसमें बाद में नौवाँ जोड़ा गया, जिसे 'नवरस' कहा जाता है। अपनी थोड़ी-सी खोज एवं समझ के साथ, हम इस ज्ञान में और वृद्धि कर सकते हैं। क्या यह रोमांचक नहीं लगता?

आरंभ करने के लिए, चलिए एक रस चयन करते हैं—

अब, उस रस के विभिन्न स्तरों को सूचीबद्ध करें (या उनका चित्र बनाएँ)।

1. -------------------------

2. -------------------------

3. -------------------------

यहाँ प्रस्तुति हेतु एक उदाहरण दिया जा रहा है —

रस — रौद्र (क्रोध)

विभिन्न स्तर

सामान्य क्रोध | **अत्यधिक क्रोध** | **उग्रता**

यहाँ हम प्रत्येक भाव को विभिन्न स्तरों पर विभिन्न तीव्रता के साथ देख रहे हैं। इसे और अच्छे से समझने के लिए, चलिए एक खेल खेलते हैं, जो आपको प्रत्येक भाव के बारे में सोचने में सहायता करेगा और आपके साथ-साथ आपके मित्रों के लिए भी आनंददायी होगा।

गतिविधि 1.1— भाव भरे कोने (इमोशनल कॉर्नर)

कक्ष के प्रत्येक कोने को अलग रसों के साथ जोड़ा गया है और जो भी विद्यार्थी उस कोने में खड़ा होगा, उसे उस रस को अपने शब्दों, चेहरे के भाव तथा शारीरिक भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करना होगा। भिन्न-भिन्न स्थानों पर रसों की पहचान के लिए पोस्टर आदि लगाए गए हैं। यह गतिविधि सभी बच्चों के कक्ष के केंद्र में खड़े होकर आरंभ होती है। आरंभ में सभी बच्चे कमरे के केंद्र में खड़े होंगे। अच्छे से समझने के लिए एक ट्रायल राउंड खेलें।

अभ्यास चक्र (ट्रायल राउंड)

पोस्टर आदि कक्ष में निम्नलिखित तरीके से लगाए जाते हैं। बच्चे केंद्र में खड़े होंगे एवं आरंभ करने के लिए तैयार रहेंगे।

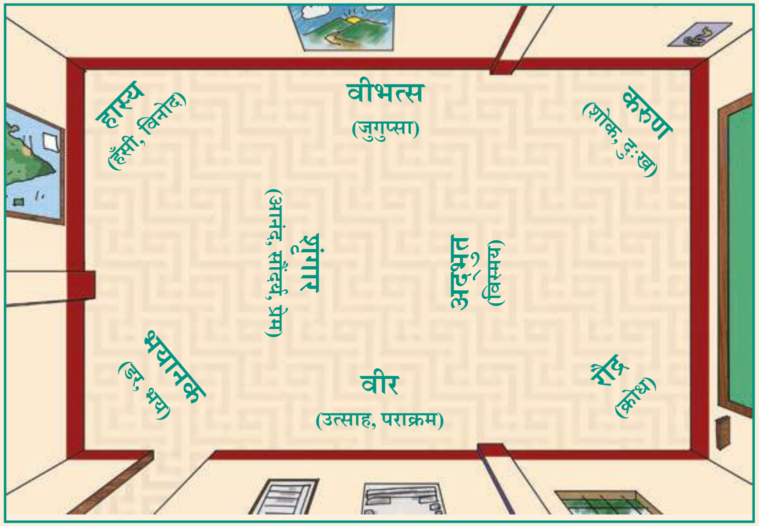

निर्देश

आप में से प्रत्येक बारी-बारी से अपनी पसंद के किसी एक रस के पास जाएँ, उस रस को अभिव्यक्त करने वाली एक या दो पंक्तियाँ कहें और उसे अभिनय के माध्यम से भी प्रदर्शित करें।

उदाहरण

एक बच्चा वीर रस चुनता है। वह उस स्थान पर खड़ा होता है और अपने स्वर, चेहरे के भाव और विभिन्न शारीरिक क्रियाओं से इसे दर्शाता है। अगला बच्चा कोई अन्य रस चुनता है, उसके स्थान पर खड़ा होता है और अपने स्वर, चेहरे के भाव और क्रिया से उसे दर्शाता है। इसी प्रकार यह अभ्यास आगे बढ़ता है।

अब हम वास्तविक भाग पर आते हैं!

चूँकि हम सभी विभिन्न रसों से परिचित हैं तो चलिए अब प्रत्येक रस के विशिष्ट स्तरों पर काम करना आरंभ करते हैं। पृष्ठ 6 पर दिए गए उदाहरण की तरह, जहाँ क्रोध को तीन स्तरों में दिखाया गया है, एक अन्य रस चुनें और कक्षा में इसके विभिन्न स्तरों पर चर्चा करें। इसके अनुसार पोस्टर (प्लैकार्ड) आदि बनाएँ। यदि आप एक चौथा स्तर पहचान सकते हैं तो उसे भी जोड़ सकते हैं। यहाँ एक और उदाहरण दिया गया है—

रस — हास्य

स्तर

1. त्वरित संतोष (आपको अपनी पसंदीदा आइसक्रीम खाने को मिलती है)।
2. व्यक्तिगत उपलब्धि (आपने एक कठिन प्रतियोगिता में पुरस्कार जीता)।
3. सहायता और जुड़ाव (आपने अपने बीमार मित्र को नोट्स देकर उसकी सहायता की)।
4. भलाई (आपने पास के अनाथालय में किताबें और कपड़े दान किए)।

अब, कोनों को नए नाम के साथ पुनः चिह्नित करें और सभी विद्यार्थी केंद्र में खड़े होकर इस खेल को भाषण, अभिनय और अभिव्यक्ति के साथ खेलें। इसे प्रत्येक रस के लिए दोहराएँ। आप इसे बिना आवाज के करने की कोशिश कर सकते हैं। यह अभिव्यक्ति और शारीरिक भाषा पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता करेगा। आप केवल आवाज और अभिव्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करने के लिए शारीरिक अभिनय को छोड़ सकते हैं। कक्षा में सभी रसों के साथ इन सभी विविधताओं का अन्वेषण किया जा सकता है।

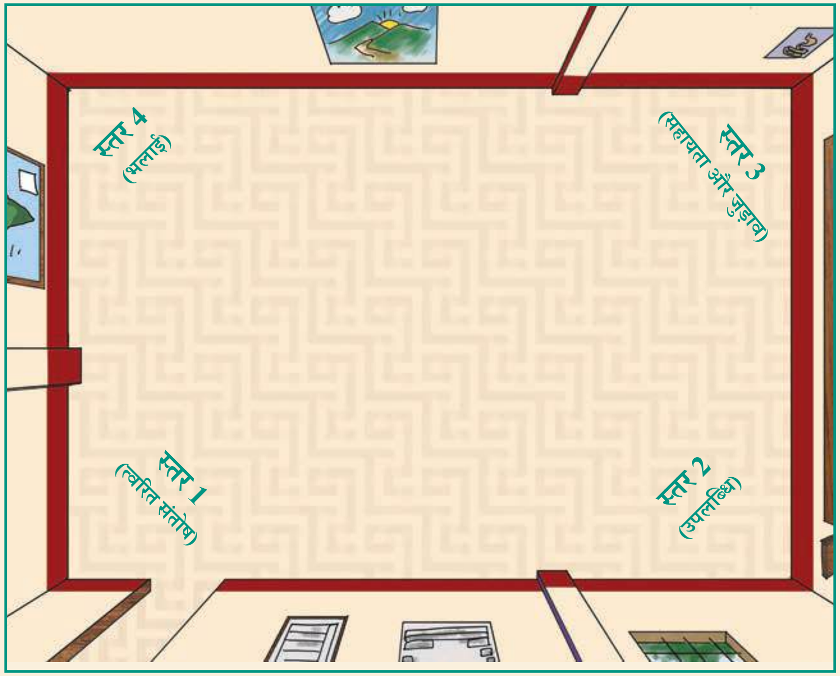

शिक्षकों के लिए निर्देश— प्रत्येक रस के विभिन्न स्तरों के बारे में बच्चों के बीच चर्चा करना महत्वपूर्ण है। बच्चों को स्वयं सोचकर प्रत्येक बार विभिन्न स्तरों तक पहुँचना चाहिए। यह प्रत्येक समूह या कक्षा के लिए समान नहीं हो सकता है। प्रत्येक समूह भिन्न-भिन्न नाम और स्तरों पर पहुँच सकता है। यहाँ कोई सही या गलत उत्तर नहीं है। शिक्षक को सुझाव दिया जाता है कि वे बच्चों को विभिन्न तीव्रता के नाम न दें, अपितु केवल उन्हें इन स्तरों के अंतिम नामों तक पहुँचने में सहायता और समर्थन प्रदान करें।

विकसित स्तर

अब जब आप सभी रसों के नाम और उनकी विभिन्न तीव्रताओं को समझ चुके हैं। आइए, इसे कहानी के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करें। अब कोनों पर केवल स्तरों के नाम होंगे। ये स्तर किसी भी रस के हो सकते हैं, जो कहानी की स्थिति पर निर्भर करेगा।

उदाहरण— एक बार की बात है, भारत के एक विशाल प्रदेश पर एक रानी का शासन था। उसने कई युद्ध लड़े और अपने लोगों की वीरता से रक्षा की (वीर रस, स्तर 3 को पुकारा जाता है, बाकी बच्चे स्तर 3 पर जाते हैं और उसे व्यक्त करते हैं)। एक दिन, दो बच्चे उनके पास आए और कहा कि वे उसे आसानी से हरा सकते हैं (अद्‌भुत रस, स्तर 2 को पुकारा जाता है, बच्चे स्तर 2 पर जाते हैं और उसे व्यक्त करते हैं)। वह हँसती है और चुनौती स्वीकार करती है (हास्य रस, स्तर 1) और इस तरह कहानी आगे बढ़ती है।

प्रत्येक बारी-बारी से कहानियाँ सुना सकता है। उन्हें या तो तैयारी के लिए समय दिया जा सकता है या उन्हें तुरंत कहानी सुनाने के लिए कहा जा सकता है। वे पंचतंत्र या पुराणों की प्रसिद्ध कहानियाँ भी सुना सकते हैं।

शिक्षकों के लिए निर्देश— प्रत्येक बच्चे से यह कहना अत्यंत लाभकारी होगा कि वे किसी रस के तीन या चार स्तर अपनी समझ के अनुसार लिखें। प्रत्येक बच्चे के अनुभव भिन्न-भिन्न हो सकते हैं, जो इन स्तरों को तय करेंगे। यह आवश्यक है कि प्रत्येक बच्चा स्वयं सोचने (स्वयं की उत्तम समझ के लिए) और समूह में सक्रिय भाग लेने (साथियों की स्वीकृति के लिए) का प्रयास करें। वाणी एवं स्वर के महत्व पर बल देना बच्चों को उत्तम संवाद कौशल में सहायता करेगा और यह दृष्टिबाधित बच्चों को भी उत्तम तरीके से जोड़ने में सहायक होगा।

आइए, घेरा बनाएँ

1. आपने भरत मुनि द्वारा निष्पादित रसों की सूची में और कितने नए रस जोड़े?
2. क्या आपको लगता है कि किसी रस की तीव्रता के तीन या चार से अधिक स्तर हो सकते हैं?
3. ऐसे कौन-से रस हैं जिनके अधिक स्तर हो सकते हैं?
4. जब आप किसी रस और उसकी तीव्रता को व्यक्त करते हैं तो क्या आप वास्तव में उसे अनुभव करते हैं? या यह केवल बाहरी प्रदर्शन होता है?

अभिव्यक्ति की शैलियों का अन्वेषण

जब आपने 'भाव भरे कोने' का खेल खेला तो क्या आपने देखा कि आप में से प्रत्येक ने भाव को व्यक्त करने का एक अलग तरीका अपनाया था? स्थिति और भाव समान था, फिर भी ऐसा क्यों है कि कुछ लोग डर के समय अपनी आँखें बंद कर लेते हैं, जबकि कुछ अन्य लोग आँखें चौड़ी कर लेते हैं?

ऐसे कुछ अन्य उदाहरण सूचीबद्ध करें, जहाँ आपको लगता है कि एक ही भाव को भिन्न-भिन्न प्रकार से व्यक्त किया गया था। तालिका में इसे लिखें। यदि आपको भावों या शैलियों के बारे में और अधिक लिखने की आवश्यकता हो तो और पंक्तियाँ जोड़ सकते हैं, लेकिन इस अभ्यास को करने से पहले, यह महत्वपूर्ण है कि आप दूसरों को ध्यानपूर्वक देखें। आप शैलियों के अंतर्गत क्रियाओं (शारीरिक भाषा) और ध्वनियों को भी सम्मिलित कर सकते हैं।

भाव	शैली 1	शैली 2
भय	**आँखें कसकर बंद करना**	**आँखें चौड़ी खोलना**
क्रोध (रौद्र)		

ये अभिव्यक्ति की शैलियाँ क्या हैं? क्या अभिनय और प्रस्तुति को भी विभिन्न शैलियों में वर्गीकृत किया गया है? यह किस आधार पर होता है? अपने सभी प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए आगे पढ़ें।

अभिनय की शैलियाँ

अभिनय को शताब्दियों से संसार भर के विशेषज्ञों एवं कलाकारों ने अन्वेषित और विकसित किया है। प्रदर्शन की शैली सामान्यत: उनकी स्थानीय संस्कृति पर निर्भर करती है। लेकिन कुछ शैलियाँ ऐसी भी हैं जिन्हें इससे आगे बढ़कर सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया गया है और ये आज भी प्रचलित हैं। कुछ प्राचीन संस्कृतियाँ, जिन्होंने अपनी विशिष्ट शैलियाँ निर्मित की, दायी ओर उल्लिखित हैं।

दिए गए चित्रों में, क्या आप प्रस्तुति की शैलियों में विविधता देख रहे हैं? प्रत्येक एक-दूसरे से पूरी तरह भिन्न दिखाई देता है। आप परिधान, उपकरण, संगीत, संवाद और यहाँ तक कि कहानियों के प्रकार में भी विविधता देखते हैं। इतनी विविधता होते हुए भी, हम ऐसी शैलियाँ कैसे ढूँढ़ें जो हर जगह, चाहे कहीं भी प्रदर्शन हो, समान रूप से लागू हो सकें? यह उन शैलियों को विकसित करके संभव होता है जो अधिक स्वाभाविक और वास्तविक जीवन के निकट होती हैं। ब्रेख्त शैली एवं पद्धतिबद्ध अभिनय इसके कुछ उदाहरण हैं।

अब इन चित्रों को देखिए और संबंधित देश या संस्कृति की पहचान करने का प्रयास कीजिए। यह कठिन है, है ना? यह संसार के किसी भी हिस्से का हो सकता है, लेकिन अधिकतर वर्तमान समय के संदर्भ में है। इसलिए, ये शैलियाँ पूर्व की संस्कृति-आधारित शैलियों की तुलना में बहुत भिन्न हैं। ये शैलियाँ अभिनय और निर्देशन की उन तकनीकों पर आधारित हैं जिन्हें किसी भी आलेख या कहानी पर लागू किया जा सकता है। आप इन शैलियों के बारे में विस्तार से आने वाली कक्षाओं में सीखेंगे।

< दक्षिण-पूर्व एशिया में जापान

भारत के कुछ हिस्से >

< ब्रेख्त शैली

पद्धतिबद्ध अभिनय >

जैसा कि हमने देखा, अभिनय की दो प्रमुख शैलियाँ हैं—

1. विस्तृत वेशभूषा, रूप-सज्जा और संगीत के साथ नाटकीय अभिनय, अतिरंजित हाव-भाव और ऊँची आवाजें।
2. साधारण वेशभूषा और रूप-सज्जा, जो दैनिक जीवन के निकट हो, न्यूनतम संगीत एवं अभिनेता सामान्य लोगों की तरह व्यवहार करते हैं।

क्या इन शैलियों के लिए हमारे पास नाम हैं? इन्हें नाम किसने दिए?

जैसा कि हमने कक्षा 6 में पढ़ा, 2500 से अधिक वर्ष पहले, भारत के एक महान ऋषि भरतमुनि ने प्रदर्शन कलाओं का अध्ययन, शोध एवं विश्लेषण किया और इन सभी तत्वों को परिभाषित किया। यद्यपि इसे 2500 साल पहले लिखा गया था, फिर भी आज हम इसका उपयोग करते हैं, क्योंकि यह अभी भी प्रासंगिक है!

भरतमुनि के *नाट्यशास्त्र* में विवरण और विशेषज्ञता का स्तर आश्चर्यजनक है।

भरतमुनि द्वारा परिभाषित दो शैलियाँ हैं— नाट्यधर्मी और लोकधर्मी।

नाट्यधर्मी— बड़े, अतिरंजित हाव-भाव, बहुत अधिक अभिव्यक्तियाँ, ऊँची आवाज, विस्तृत और चमकीली वेशभूषा तथा रूप सज्जा, ढेर सारे आभूषण और सजावट।

लोकधर्मी— वास्तविक जीवन जैसा प्रदर्शन। क्रियाएँ, भाव-भंगिमाएँ, वेशभूषा सभी कुछ स्वाभाविक होता है और वास्तविकता से मेल खाती हैं। ऐसा लगता है जैसे मंच पर परिस्थिति स्वाभाविक रूप से घट रही है और अभिनय नहीं किया जा रहा है।

पहचानें कि इनमें से कौन-सी शैली स्वाभाविक (लोकधर्मी) और कौन-सी अतिरंजित (नाट्यधर्मी) है।					

यहाँ *नाट्यशास्त्र* से उद्धृत मूल श्लोक प्रस्तुत है, जहाँ लोकधर्मी और नाट्यधर्मी अभिनय के बारे में चर्चा की गई है।

लोकधर्मी नाट्यधर्मी धर्मीति तु द्विविधाः स्मृतः ।
भारती सात्त्वती चैव कैशिक्यारभटी तथा ॥ 24 ॥

— *नाट्यशास्त्र*, भरत मुनि (अध्याय 6)

अर्थ— नाट्य प्रदर्शन में अभिव्यक्ति (धर्मी) का अभ्यास दो प्रकार का होता है— लोकधर्मी (यथार्थवादी) और नाट्यधर्मी (नाटकीय)।

गतिविधि 1.2 — अपनी शैली को चुनें!

ये गतिविधियाँ अभिनय की दो शैलियों से परिचित होने के लिए की जाती हैं। कुछ पर्चियाँ तैयार रखें, जिनमें प्रत्येक पर सरल क्रियाएँ लिखी गई हों।

उदाहरण— गड्ढों से भरी सड़कों पर टहलते हुए, अपने थैले से कोई एक उपहार निकालकर, अपनी पसंद का चॉकलेट खाएँ।

आधार रूप

एक मेज पर मुड़ी हुए पर्ची रखें। प्रत्येक बच्चा एक पर्ची उठाकर उस पर लिखी क्रिया को पढ़ता है। बच्चे को यह चुनने का अधिकार है कि वह यह कार्य यथार्थवादी शैली में करना चाहता है या शैलीबद्ध तरीके से। सभी बच्चों को यथार्थवादी और शैलीगत अभिनय या दोनों को अभ्यास करने का अवसर मिलता है।

प्रगति

इस तय क्रियाकलाप के साथ-साथ पर्ची का एक और बंडल रखा गया है। यहाँ 'यथार्थवादी' या 'शैलीबद्ध' अथवा 'दोनों' के निर्देश पर्ची पर लिखे हुए हैं। बच्चे दोनों बंडलों में से एक-एक पर्ची उठाते हैं तथा उस पर जो लिखा होता है उसका पालन करते हैं। बच्चे प्रत्येक बार इस अभ्यास प्रक्रिया को अलग-अलग समन्वय के साथ अनेक बार करते हैं।

आइए, घेरा बनाएँ

- आपने दोनों अभिनय शैलियों में क्या प्रमुख अंतर अनुभव किया?
- कौन-सी विधि अधिक प्रभावी है? क्यों?
- ऐसे उदाहरण साझा करें जहाँ आपने शैलीबद्ध अभिनय देखा है, जैसे— फिल्में, टीवी आदि।

जब हम शैलीगत कला रूपों के प्रतिनिधित्व पर चर्चा करते हैं तो सबसे पहले जो बात मस्तिष्क में आती है, वह है प्राचीन भवनों की दीवारों पर नक्काशी वाले सुंदर चित्र एवं समृद्ध मूर्तियाँ, जिनमें मंदिर भी सम्मिलित हैं। क्या आप कुछ कलात्मक नक्काशी वाले भित्ति चित्रों को याद कर सकते हैं जिन्हें आप हाल ही में देख चुके हैं?

भवन का नाम --

स्थान --

कलाकृतियों के बारे में एक अनोखी बात बताइए, जो आपको याद रही है।

ये हमें भावों की नई खोज के अगले स्तर पर ले जाते हैं।

प्राचीन वास्तुकला

शब्दकोश के अनुसार,'प्राचीन' शब्द उन सभी चीजों को संदर्भित करता है जो बहुत पुरानी हैं और वर्तमान में उपयोग में नहीं हैं। लेकिन भारतीय संस्कृति की विशिष्टता यह है कि इस तरह के बहुत सारे निर्माण काफी प्राचीन हैं, यद्यपि उनमें से कई अभी भी उपयोग में हैं। भारतीय वास्तुकला, अपनी लुभावनी मूर्तियों की छवि के साथ, मानवीय भावनाओं की एक कालातीत संग्रह के रूप में कार्य करती है, जो पत्थरों में 'नवरसों' के सार को दर्शाती है। देश के प्रत्येक हिस्से में भिन्न-भिन्न शैलियों की अनेक मूर्तियाँ मौजूद हैं जो राजवंश और उसके इतिहास का प्रतिनिधित्व करती हैं। कहने को प्रत्येक भवन, मंदिर एवं मूर्तियों की अपनी एक अनूठी कहानी है।

भावों को दर्शाती हुई मूर्तियों में अनेक ऐसी कहानियाँ हैं जिनके भीतर और भी भाव छिपे हुए हैं। उनमें से कुछ यहाँ दी गई हैं—

शेर से लड़ते हुए एक युवा लड़के 'साला' की मूर्ति है। यह बहादुरी और साहस, वीर रस का आह्वान करती है।

यह मूर्ति चेन्नाकेशव मंदिर, बेलूर, कर्नाटक की है। इस स्थान पर शासन करने वाले होयसाला राजवंश ने अपने राज्य का नाम यहीं से लिया था। 'होय-साला', जिसका अर्थ है, "शेर को मार डालो, साला!" (1006–1346 ई.)।

द्वारपालक (प्रवेश द्वार का संरक्षक)। इससे जो भाव उत्पन्न होता है, वो डर है। क्या यह डरावना-सा नहीं लगता? 'भयानक रस' में बनी यह मूर्ति नकारात्मक शक्तियों को डराने के लिए बनाई गई है।

आप ऐसी और अनेक मूर्तियाँ तमिलनाडु के तंजावुर स्थित बृहदेश्वर मंदिर में देख सकते हैं। इसका निर्माण चोल राजवंश द्वारा सन (815–1280 ई.) में कराया गया था।

क्या आप जानते हैं?

मंदिर के पत्थरों को एक साथ जोड़े रखने के लिए सीमेंट या मिट्टी जैसे किसी भी बंधनकारी पदार्थ का उपयोग नहीं किया गया था। अधिकांश आधुनिक भवनों की तरह इसके तल के नीचे कोई पारंपरिक नींव भी नहीं है। फिर भी, यह मंदिर न केवल अपनी तरह का सबसे ऊँचा मंदिर है, बल्कि यह 1000 से अधिक वर्षों से भूकंप और तूफानों का सामना करने के उपरांत भी पूर्ण सामर्थ्य एवं स्थिरता से खड़ा रहा है।

यह एक अनूठी मूर्ति है जिसमें तीन भाव एक ही साथ समाहित हैं। यह महाराष्ट्र में एलीफेंटा की गुफाओं में स्थित 'त्रिमूर्ति' है। इसमें शिव के तीन मुख क्रमशः सृजन, पोषण एवं विनाश हैं, जिनमें से प्रत्येक भिन्न-भिन्न भावों और अर्थों को दर्शाता है। इसका निर्माण राष्ट्रकूट राजवंश (755–975 ई.) के काल में हुआ था।

गतिविधि 1.3 — चित्र ढूँढ़िए

किसी भी मंदिर की मूर्ति का चित्र ढूँढ़ें, जिसे स्वयं आपने देखा हो और उसे नीचे दिए गए बक्से में चिपकाएँ। साथ ही मूर्ति में छिपे भाव तथा उसके पीछे की कहानी के बारे में लिखें।

जीवनभर का समर्पण!

यदि आप समय अवधि पर ध्यान दें तो पाएँगे कि ये सभी मूर्तियाँ, जो कलात्मक रूप से परिपूर्ण हैं, सैकड़ों वर्षों से संरक्षित हैं, जबकि आज के भवन होते तो ये संभवतः कुछ दशकों तक भी टिक नहीं पातीं। इनमें अंतर क्या है? इन मूर्तियों को बनाने में सम्मिलित प्रत्येक कलाकार ने ये मूर्तियाँ पूरे दिल से लगन और मेहनत कर बनाई, क्योंकि उनका विश्वास था कि यह पवित्र काम भगवान को समर्पित है। यहाँ तक कि एक छोटी-सी खरोंच या कोई गड़बड़ी भी बुरी मानी जाती थी, क्योंकि भगवान के काम में कुछ भी त्रुटिपूर्ण नहीं हो सकता था। समर्पण का स्तर इतना था कि इसे कभी भी केवल एक नौकरी तक सीमित नहीं माना जाता था जिसके लिए मजूदरी दी जाती थी, जैसा की वर्तमान में होता है। यहाँ एक रोचक कहानी है जो हमें कलाकारों के समर्पण भाव के बारे में बताती है। ऐसा माना जाता है कि यह सच है। शिल्प विशेषज्ञ जकानाचारी को होयसल के राजा नृप हया ने एक भव्य मंदिर बनाने का आदेश दिया था। काम के प्रति उनका समर्पण इतना था कि उन्होंने घर-बार छोड़ दिया और स्वयं को मूर्तियाँ बनाने में समर्पित कर दिया। ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने एक-एक पत्थर को भगवान से प्राप्त आशीर्वाद के बाद चुना था। वह इतने वर्षों तक घर से दूर रहे कि उन्हें अपने परिवार के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं थी। एक दिन, एक युवा कलाकार उनके समूह में सम्मिलित हुआ और उसने तुरंत पत्थर की

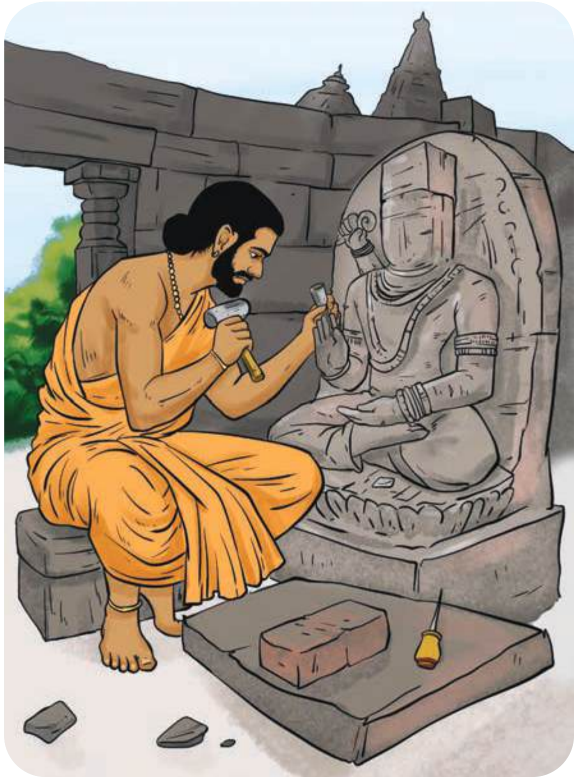

मूर्तियों में से एक मूर्ति में एक बड़ी त्रुटि देखी। जकानाचारी की यह एक अनसुनी त्रुटि थी क्योंकि वह परिपूर्णता में विश्वास रखते थे। लेकिन एक परीक्षण किया गया और मूर्ति के नाभि वाले भाग में एक गड्ढा पाया गया, जहाँ पर एक मेंढक रह रहा था। यह एक महान कलाकार के काम पर बहुत बड़ा प्रश्न चिह्न था। जैसा वचन दिया गया था, उसके अनुसार कलाकार ने अपने हाथ काट लिए, क्योंकि जो काम उसे सौंपा गया था। उसने स्वयं को भगवान के काम के लिए अयोग्य समझा बाद में पता चला कि वह छोटा लड़का जो कोई और नहीं, बल्कि उस कलाकार का बेटा दंकणचारी था। यह सुनकर जकानाचारी को गर्व हुआ और उन्हें एक समर्पित विशेषज्ञ पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद मिला। बाद में उन्होंने मंदिर का काम पूरा करने का उत्तरदायित्व संभाला। ऐसा भी कहा जाता है कि भगवान ने उन्हें अपने हाथ वापस पाने का आशीर्वाद दिया। इस प्रकार पिता-पुत्र की जोड़ी ने कर्नाटक के बेलूर में मंदिर निर्माण का कार्य संपूर्ण किया। आज भी हम इन कार्यों को देखकर विस्मय में पड़ जाते हैं। क्या आपको लगता है कि आज भी किसी भवन की सूक्ष्मताएँ और कलात्मक अभिव्यक्तियाँ इससे मेल खाती हैं, जो उस समय पालन किया जाता था। यह अद्भुत परिणाम सहस्त्रों कलाकारों के समर्पण, प्रतिबद्धता और दृढ़ता से ही संभव हुआ था।

आइए, घेरा बनाएँ

- चित्रों, मूर्तियों या अन्य माध्यमों से उदाहरणों को साझा करें जहाँ आपने भावों का अनुभव किया हो।
- अगर आपको ऐसा मंदिर बनाने का प्रस्ताव दिया जाए तो आप इसकी तैयारी कैसे करेंगे?
- आप इसके लिए कितना समय अभ्यास में लगाएँगे? क्या आप इस अभ्यास को विद्यालय में अपने कार्य में भी प्रयोग कर सकते हैं?

मुख्य बातें — जीवन के लिए सबक

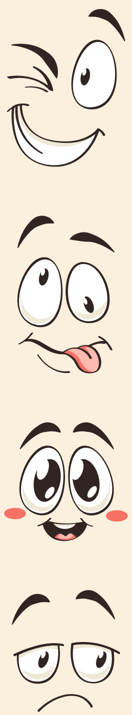

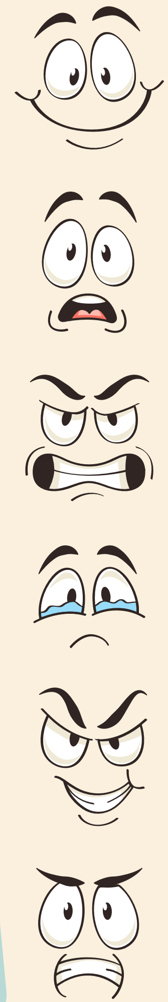

जीवन और रंगमंच

क्या आपने ध्यान दिया है कि भिन्न-भिन्न व्यक्ति विभिन्न प्रकार से अपने भावों की अभिव्यक्ति करते हैं? कुछ लोग जब घबराते हैं तो मुस्कुराते हैं जबकि कुछ लोग दुखी होने पर भी चुप हो जाते हैं। रंगमंच हमें इन सभी भावों और उनकी अभिव्यक्ति के प्रकारों को समझने में सहायता करता है। साथ ही यह परिवर्तित परिस्थितियों में एक-दूसरे के संबंध में भी बेहतर भावनात्मक समझ या सहानुभूति पैदा करने में सहायता करता है।

- जब आप कक्षा 6 में 'भाव भरे कोने' या 'हॉट सीट' जैसे खेल खेलते हैं तो आप यह समझना शुरू करते हैं कि अपनी भावनाओं को अनुभव करने या व्यक्त करने का कोई एक निश्चित तरीका नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति अपनी भावनाओं को अलग तरह से अनुभव करता है और व्यक्त करता है। जब आप खेल के दौरान दूसरों को अपनी भावनाएँ साझा करते हुए देखते हैं तो आपको अनुभव होता है कि लोग एक ही परिस्थिति को भी अलग-अलग दृष्टि से देख सकते हैं। इसे समझने और स्वीकार करने की आपकी क्षमता आपको भावनात्मक रूप से समृद्ध बनाती है।
- रंगमंच की ये सभी गतिविधियाँ आपको यह समझने में सहायता करती हैं कि सभी भाव एकसमान हैं। आप जो कहानियाँ चुनते हैं, उनमें हास्य और सुख के साथ-साथ ईर्ष्या या क्रोध की स्थितियाँ प्रदत्त होती हैं। यह वास्तविक जीवन में भी सच है। जैसा कि प्राचीन शास्त्रों एवं मूर्तियों में दर्शाया गया है। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि हम सभी भावों को स्वीकार करें और बिना किसी बाधा के स्वतंत्र रूप से व्यक्त करें। रंगमंच जैसी गतिविधियाँ आपसे केवल हास्यपूर्ण स्थितियों को दिखाने तथा दुखद स्थितियों को छोड़ने की अपेक्षा नहीं करती हैं, वैसे ही अपने जीवन में भी आपको सभी भावों को एकसमान रूप से अनुभव करने, साझा करने तथा व्यक्त करने में सक्षम होना चाहिए। रंगमंच की तरह, यह भी महत्वपूर्ण है कि किसी भी स्थिति को अधिक बढ़ा-चढ़ाकर न करें।

रंगमंच का अर्थ केवल मंच पर अभिनय करना ही नहीं है। अपितु इसका अर्थ स्थितियों को अनुभव करना, आगे बढ़ना और लोगों से उचित ढंग से जुड़ना है। इसे **'भावनात्मक बुद्धिमत्ता'** कहा जाता है। रंगमंच के समान ही, हमारा जीवन भी अनेक आश्चर्यों से भरा है। किंतु सहानुभूति, आत्मविश्वास और मुक्त हृदय के साथ, आप कैसी भी परिस्थितियों का सामना करने के लिए तैयार हैं।

आकलन

अध्याय 1— भावों को समझना				
दक्षताएँ सी.-1.1 — विभिन्न नाट्य गतिविधियों के माध्यम से अपने जीवन के व्यक्तिगत और दैनिक अनुभवों को आत्मविश्वास से व्यक्त करना है। सी.-1.2 — सामूहिक रूप से नाटक को विकसित करने की प्रक्रिया में लचीलापन प्रदर्शित करना है।				
सी.जी.	**सी.**	**सीखने के प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
1	1.1	भावों की भिन्न-भिन्न तीव्रता में क्रिया, अभिव्यक्ति एवं संवाद को पहचानता और व्यक्त करता है।		
1	1.1	विभिन्न मूर्तियों या स्वतंत्र कलाकृतियों की पहचान या स्मरण कर सकते हैं जो क्रिया और अभिव्यक्ति में भावों को प्रदर्शित करती हैं।		
1	1.1, 1.2	अपने सहपाठियों द्वारा किसी स्थिति को किस प्रकार अनुभव किया जाता है, इस अंतर को समझने और अंगीकार करने में सहानुभूति को प्रदर्शित कर इस पर चर्चा भी करता है।		
1	1.2	स्वतंत्र रूप से कहानियाँ बना सकते हैं, विभिन्न भावनात्मक स्तरों को समावेशित कर प्रभावी ढंग से अपनी कक्षा में सुना सकते हैं।		
1	1.2	लोकधर्मी (यथार्थवादी) और नाट्यधर्मी (शैलीगत), अभिनय (क्रिया और अभिव्यक्ति में) में भेद कर सकते हैं।		

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

2 बिन बोले सब कहें— मूकाभिनय

0780CH02

"माइम एक ऐसी कला है जो मौन की सार्वभौमिक भाषा बोलती है। यह अदृश्य को दृश्यमान बना सकती है तथा मौन को संचार का सबसे शक्तिशाली और उच्च स्वर वाला रूप दे सकती है।"

— मार्सेल मार्सो, एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी माइम कलाकार

एक स्थिति की कल्पना करें कि आप एक महत्वपूर्ण आयोजन में हैं, जहाँ किसी को बोलने की अनुमति नहीं है। अचानक आपको याद आता है कि आयोजन आरंभ होने से पहले आपने अपने मित्र की प्रतीक्षा करते हुए अपनी छतरी बाहर छोड़ दी थी, लेकिन आप उसे अंदर लाना भूल गए। आप हॉल के बीच में हैं और बाहर नहीं जा सकते। आपको अपने मित्र को, जो प्रवेश द्वार के पास बैठा है, यह बताना है कि वह बाहर जाए और आपके लिए छतरी लेकर आए। आप यह कैसे बताएँगे?

कक्षा में जोड़ों में बैठें और एक-दूसरे को यह बताओ। आप बारी-बारी से ऐसा कर सकते हैं। यदि संभव हो तो आप बातचीत को आगे बढ़ा सकते हैं, उदाहरण के लिए, मित्र यह उत्तर देता है कि बाहर जाना संभव नहीं है और आप यह कहते हुए पुनः अनुरोध करते हैं कि यह महत्वपूर्ण है और इसी तरह कुछ अन्य। लेकिन सब कुछ **मौन** में!

आपने अभी क्या किया? क्रियाओं और भावों के माध्यम से संवाद किया। वास्तव में, आपने अभी एक **माइम** किया, यही माइम था।

आप जानेंगे

- मूकाभिनय क्या है?
- मूकाभिनय की मूल विशेषताएँ
- मूकाभिनय के लाभ
- मूकाभिनय प्रदर्शन की तैयारी

भारत में इसे मूकाभिनय कहा जाता है। आइए, पहले इस प्रदर्शन रूप में प्रयुक्त शब्दों से परिचित हों।

यहाँ कुछ मूल शब्द दिए गए हैं जिनसे आप परिचित हो सकते हैं।

मुखाभिनय
चेहरे पर दिखाए गए भाव एवं प्रतिक्रिया

शारीरिक भाषा
हस्त-संकेत, शारीरिक मुद्राएँ एवं क्रियाएँ।

ऊर्जा
प्रत्येक कार्य के पीछे की तीव्रता एवं एकाग्रता।

तकनीक आधारित शर्तें

मूकाभिनय — अभिनय का एक रूप जिसमें कोई शब्द या ध्वनि नहीं है। यह संवाद वाले किसी बड़े नाटक का हिस्सा हो सकता है। इसे करने वाले व्यक्ति को 'मूकाभिनय' भी कहा जाता है।

पैंटोमाइम — एक नाटकीय प्रदर्शन जिसमें कई कलाकार और संगीत सम्मिलित होता है। इसमें सामान्यतः हास्य प्रधान और अतिरंजित अभिनय होता है।

संवादात्मक — अधिक प्रभाव डालने के लिए दर्शकों की भागीदारी को सम्मिलित करके उन्हें 'भ्रम का हिस्सा' बनाना।

आइए, अब शुरू करें और कुछ मूकाभिनय करने का प्रयास करते हैं।

गतिविधि 2.1 — व्यक्तिगत गतिविधि

चूँकि मूकाभिनय किसी विशेष मंच सज्जा या सामग्री का प्रयोग किए बिना प्रदर्शन करने के बारे में है, इसलिए पहले आपको सीखना होगा कि कैसे एक काल्पनिक दुनिया बनाई जाए और दर्शकों को इसके अस्तित्व में विश्वास दिलाने का तरीका भी सीखना होगा। एक ऐसी वस्तु के बारे में सोचें जिसे आप दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं, जैसे— आपका पेंसिल बॉक्स। अब कल्पना करें कि आप इसे अपने हाथ में पकड़े हुए हैं। आपको इसे अपने हाथ में लेकर मूकाभिनय करते हुए इसका आकार और आकृति याद रखनी होगी। अब प्रयत्न करें और दिखाएँ कि आप पेंसिल बॉक्स को कैसे पकड़ेंगे यदि यह लोहे से भरा हो (वही आकार और आकृति)। अब कल्पना करें कि यह पेंसिल बॉक्स पूरी तरह से खाली है। आप इन परिवर्तनों को कैसे दिखाएँगे? बिना छुए वस्तु का अनुभव करने के लिए विभिन्न विकल्पों का उपयोग करें।

अब, इससे पहले कि हम वास्तव में मूकाभिनय आरंभ करें, यहाँ कुछ मूल सुझाव दिए गए हैं जो आपकी मदद करेंगे—

1. वस्तु मत बनो, वस्तु का उपयोग करो

यह एक सामान्य गलती है जो वस्तु दिखाते समय की जाती है। आपको यह दिखाना है कि आप वस्तु को कैसे पकड़ते हैं, न कि अपने हाथों से उस वस्तु के आकार की संरचना करनी है। यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं—

एक जोड़ी कैंची दिखाओ		बंदूक पकड़ना	
सही	गलत	सही	गलत

यदि आपने केवल दो उँगलियों का संकेत किया और उन्हें कैंची की तरह हिलाया तो यह गलत है। यदि हम अपनी उँगलियों को बदलकर बंदूक बना सकते हैं तो हम बड़ी वस्तु को कैसे दिखाएँगे? जैसे ट्रेन या कार या फ्रिज? इसलिए, मूकाभिनय का पहला नियम है— वस्तु का उपयोग करना।

2. वस्तु का स्थान (आकार) और वजन निर्धारित कीजिए

काल्पनिक वस्तुओं को अधिक विश्वसनीय बनाने के लिए, मूकाभिनय को यह सुनिश्चित करना होगा कि कार्य उस वस्तु की गुणवत्ता के अनुरूप हों जिसे वे संभाल रहे हैं। क्रिकेट बॉल, बास्केटबॉल, गुब्बारा— प्रत्येक का आकार, वजन और अनुभव एक-दूसरे से बहुत भिन्न है।

अब इसे ध्यान में रखकर प्रत्येक को अलग-अलग पकड़ने का अभिनय कीजिए। आइए, इसे और सरलता से समझने के लिए एक मनोरंजक खेल खेलते हैं।

गतिविधि 2.2 — सामूहिक गतिविधि (पूरी कक्षा)

आप सभी एक घेरे में बैठ जाएँ। आप में से एक किसी एक काल्पनिक वस्तु के साथ आरंभ करता है। पहला व्यक्ति एक वस्तु की कल्पना करता है, इसके आकार, आकृति और भार को स्पष्ट रूप से दर्शाने के लिए एक क्रिया करता है। फिर वस्तु को अगले व्यक्ति को सौंप देता है। अगला व्यक्ति इसे प्राप्त करता है, वस्तु की समझ को बढ़ाने के लिए एक और क्रिया करता है और इसे आगे बढ़ाता है।

कोई भी ध्वनि या भाषण का उपयोग नहीं कर सकता। कोई भी वस्तु का नाम नहीं बताएगा। यह विद्यार्थियों की समझ और प्रत्येक की संवाद करने की क्षमता पर निर्भर है।

आरंभिक स्तर— दैनिक जीवन की वस्तुएँ जैसे पेन, कैंची या घड़ी दिखाई जा सकती हैं। जब वस्तु प्राप्त होती है तो आप में से प्रत्येक अनोखी क्रिया करता है जो पहले नहीं की गई और फिर इसे आगे बढ़ाता है।

उच्च स्तर— इसमें भी सभी वस्तु को पास करते हैं। लेकिन समय के साथ वस्तु थोड़ी बदल जाती है। इसलिए, पहले व्यक्ति द्वारा की गई क्रिया अंतिम व्यक्ति के लिए समान नहीं होगी। उदाहरण के लिए, एक बड़ा बर्फ का टुकड़ा (समय के साथ पिघलता है) या मुट्ठीभर रेत (उँगलियों से फिसलने के कारण मात्रा कम होती जाती है)।

आइए, घेरा बनाएँ

1. बिना भाषण या सामग्री के प्रदर्शन करने का सबसे आनंददायक पहलू क्या है?
2. मूकाभिनय करते समय सबसे कठिन क्या है? बिना बोले अभिनय करना या सामग्री का उपयोग नहीं करना?

मूकाभिनय प्रदर्शन के तीन आधारभूत स्तंभ

कोई भी सफल मूकाभिनय प्रदर्शन में निम्नलिखित तीन पहलू होने चाहिए। याद रखें, इन सभी का अभ्यास व्यक्तिगत रूप से एवं समूह में, दोनों तरह से किया जाना चाहिए।

1. कल्पना

मूकाभिनय प्रदर्शन के लिए, अपनी शारीरिक भाषा और अभिव्यक्तियों पर काम करने के साथ-साथ सबसे महत्वपूर्ण है, कल्पनाशीलता। जहाँ पहले दो पूरी तरह से कलाकार और उनके प्रयासों के बारे में हैं, वहीं कल्पना में कलाकार और दर्शक दोनों सम्मिलित होते हैं।

जब तक दर्शक वस्तुओं, परिस्थितियों और कहानी के वातावरण की कल्पना में सहभागी नहीं बनते, तब तक एक सफल प्रदर्शन संभव नहीं हो सकता। दर्शकों और कलाकार के मध्य यह आदान-प्रदान, प्रदर्शन को अनोखा और आनंददायक बनाता है, जिसे कल्पना के माध्यम से सुगम बनाया जाता है।

2. अतिरंजना

यह गतिविधियों, कार्यों और अभिव्यक्तियों को यथार्थ जीवन से कुछ अधिक करने की तकनीक है। चूँकि मूकाभिनय में संवाद नहीं है और बिना कुछ कहे अभिव्यक्ति करनी है, अतः सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण हो जाता है कि सूक्ष्मतम विवरण दिखाई दें और समझ में आए। यह विशेष रूप से तब और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है जब प्रदर्शन विशाल जनसमूह के लिए आयोजित किए जाते हैं। यह अध्याय एक में वर्णित नाट्यधर्मी शैली के समान है, जिसमें नाटकीय एवं शैलीबद्ध तकनीकों, जैसे— धीमी गति, पुनरावृत्ति और अतिरंजित भावाभिव्यक्ति का उपयोग कर प्रभावी बनाया जाता है।

3. वेशभूषा एवं रूप-सज्जा

नाटक या नृत्य के विपरीत, मूकाभिनय में पोशाक और रूप-सज्जा सीधे पात्र को नहीं दर्शाते हैं। यह मुख्य रूप से तटस्थ होता है, जिसमें पात्रों में भिन्नता दिखाने के लिए सूक्ष्म अंतर होते हैं।

वेशभूषा— पूरी तरह से काली शर्ट और पैंट (यदि पृष्ठभूमि सफेद हो) या काले और सफेद का मिश्रण, जैसे— शर्ट पर धारियाँ या सहायक सामग्री, जैसे— दस्ताने, मोजे अथवा फीता (सस्पेंडर)।

रूप-सज्जा— सफेद, काले और लाल रंगों के पूरक रंगों की सहायता से चेहरे की विशेषताओं को उभारा जाता है, यह रूप-सज्जा की मुख्य विशेषता है। इसका प्रयोग भावों की स्पष्ट दृश्यता और अतिरंजकता को सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है।

पात्र— रूप-सज्जा में ही पात्रों की पहचान के संकेत सूक्ष्मता से समाहित कर दिए जाते हैं।

मूकाभिनय— समानता की सार्वभौमिक भाषा

मूकाभिनय की सबसे उल्लेखनीय विशेषता है— भाषा का अभाव। यह दुनियाभर में भाषा की सभी बाधाओं को तोड़ देता है। भावनाएँ सार्वभौमिक होती हैं। इसलिए देश के किसी भी राज्य या दुनिया के किसी भी देश में मूकाभिनय में दिखाई गई परिस्थितियाँ दुनिया के किसी भी कोने के व्यक्ति द्वारा समझी जाती हैं। क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है?

मूकाभिनय की अगली विशेषता जो सामने आती है— काले एवं सफेद रंग की वेशभूषा और सभी के लिए सामान्य सफेद रूप-सज्जा। लोगों के कपड़ों के आधार पर होने वाले पक्षपात जैसी रूढ़ियों को समाप्त करने की शक्ति जैसी विशेषता इसमें समाहित है। यह कहानी कहने का एक ऐसा शुद्ध माध्यम है जो किसी भी समाज या दुनिया के किसी भी हिस्से के लोगों द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है। यह जेंडर रूढ़ियों को भी तोड़ सकता है, उदाहरण के लिए, खनन या भवन निर्माण का दृश्य जिसमें महिलाएँ भारी भार उठा रही हों, क्योंकि मूकाभिनय में पहनी जाने वाली पोशाक समान होती है।

मूकाभिनय का उपयोग एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में भी किया जाता है, ताकि लोग अपने आघात से बाहर आ सकें या बुरी यादों को भूल सकें, क्योंकि यह उन्हें बिना आलोचना के डर को अभिव्यक्त करने और साझा करने की स्वतंत्रता देता है।

पैंटोमाइम प्रदर्शन

गतिविधि 2.3 — सामूहिक मूकाभिनय (माइम)

कक्षा को 5–10 के समूहों में बाँटा जाए। आपको एक दृश्य अभिनय करने के लिए दिया जाएगा। आप दृश्य के लिए आवश्यक सभी सामग्री और दृश्य-सज्जा का उपयोग कर सकते हैं। अपने समूह द्वारा इसे एक नियमित नाटक की तरह अभिनीत करें।

अब आपकी टीम को दृश्य-सज्जा की स्थिति को अपने मस्तिष्क में चिह्नित करना होगा और कुर्सियों, मेज आदि हटाने होंगे। अब आप बिना किसी दृश्य-सज्जा के पूरे दृश्य को अभिनीत करें। हस्त सामग्री (जो आपके हाथ में हों, जैसे— चलने की छड़ी, धनुष और तीर आदि) का उपयोग कर सकते हैं। एक बार जब आप दृश्य-सज्जा से परिचित हो जाएँ तो हस्त सामग्री को भी हटा दें। बिना किसी दृश्य-सज्जा या हस्त सामग्री के पूरे दृश्य को अभिनीत करें।

अभ्यास — मूकाभिनय में अपनी दैनिक दिनचर्या को, जब आप सुबह उठते हैं से लेकर रात को सोने तक को अभिनीत करें। छोटी-छोटी जानकारी को याद करने और उसे अपनी गतिविधियों में दर्शाने का प्रयास करें।

संगीत— आप अपने प्रदर्शन की स्थिति के अनुरूप पार्श्व संगीत का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन सुनिश्चित करें कि यह केवल वाद्य संगीत हो, इसमें कोई गीत या भाषण न हो।

मूकाभिनय प्रस्तुत करते हुए बच्चे

शिक्षक के लिए निर्देश— विद्यार्थियों द्वारा चुना गया दृश्य उनकी अपनी रचना या कोई परिचित दृश्य हो सकता है। समूहों को ऐसी परिस्थितियों और दृश्यों के साथ आने के लिए प्रोत्साहित करें जो रूढ़ियों को तोड़ें या उसके बीच समावेशिता को बढ़ावा दें।

क्रियात्मक जादुई माइम (मूकाभिनय) बनाएँ

- दो-दो के समूह बनाएँ।
- इन परिस्थितियों के लिए भाव दिखाने का प्रयास करें।
- अपने मित्र के चेहरे को देखें और दी गई जगह में उनकी अभिव्यक्ति बनाएँ। भौहें, माथा, गाल और आँखों के विवरण को ध्यान से देखें और नोट करें।
- चर्चा करें कि आप अभिव्यक्ति को और अधिक अतिरंजित कैसे बना सकते हैं और इसमें सुधार कर सकते हैं।
- पूरे शरीर के साथ स्थिति का अभिनय करने का प्रयास करें। आपके कार्य आपके संप्रेषण को सुधारने में कैसे सहायता करते हैं?
- इसके इर्द-गिर्द एक छोटी कहानी बनाएँ और इसे अपने मित्रों के साथ अभिनीत करें।

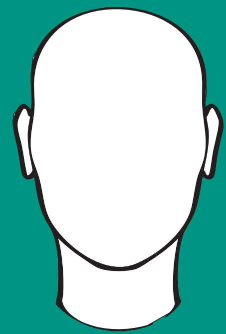

जमे हुए जार का ढक्कन खोलना

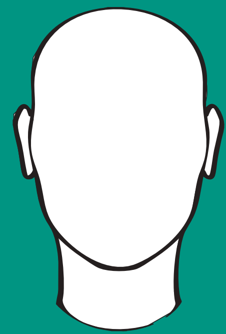

भारी सूटकेस उठाना

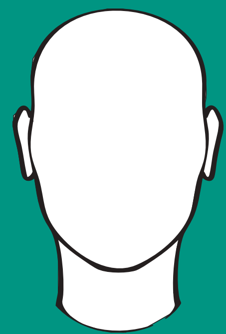

खट्टा नींबू खाना

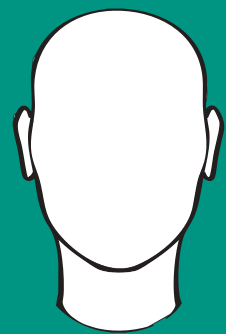

भारी रस्सी खींचना

आकलन

अध्याय 2 — बिन बोले सब कहें — मूकाभिनय				
दक्षताएँ सी.-2.1 — अपने आस-पास देखी गई रूढ़ियों को चुनौती देने वाली परिस्थितियों या कहानियों पर आधारित नाटक बनाता और प्रदर्शन करता है। सी.-2.2 — नाटक के तत्वों, विषयों और प्रतीकों को व्यक्तिगत अनुभवों, भावनाओं और कल्पनाओं से जोड़ता है।				
सी.जी.	**सी.**	**सीखने के प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
2	2.1	मूकाभिनय की विशेषता और नाटक के साथ इसकी समानताओं एवं अंतर को समझता है।		
2	2.2	वस्तुओं के आकार, आकृति और भार में परिशुद्ध रूप से कल्पना कर सकता है और प्रदर्शन में इसका उपयोग कर सकता है।		
2	2.3	व्यक्तिगत अनुभवों से कहानियाँ बनाकर मूकाभिनय में उनकी अभिव्यंजना कर सकता है।		
2	2.4	मूकाभिनय के लाभ और इसकी सार्वभौमिकता का उपयोग समावेशिता या जेंडर रूढ़ियों को तोड़ने वाले विषयों के प्रदर्शन करने के लिए करता है।		
2	2.5	संगीत और हास्य को एकीकृत करते हुए सामूहिक प्रदर्शन को एक साथ प्रस्तुत कर सकता है।		

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

3 आइए, डिजाइन करें— मंच तकनीक-2

0780CH03

1. नेपथ्य कार्य — रंगमंच का अदृश्य स्तंभ

फूलों और फलों से लदा एक वृक्ष देखने में कितना सुंदर लगता है! किंतु इसकी सुंदरता का स्रोत क्या है? इसकी मजबूत और स्वस्थ जड़ें।

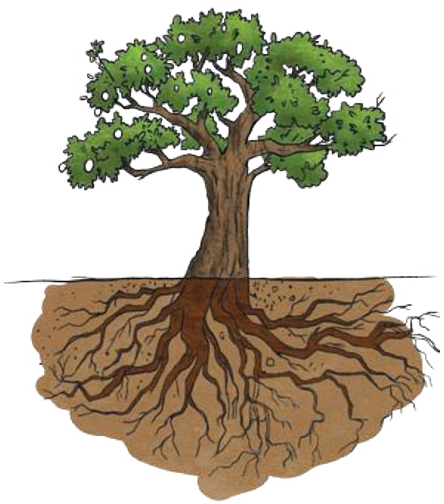

एक सुंदर ढंग से निर्मित प्राचीन मंदिर, जो हमें अतीत की अनेक कहानियाँ बताता है, गर्व की बात है। इसका सामर्थ्य क्या है?

इसकी प्रबल और गहरी भूमिगत नींव।

इन उदाहरणों से आप क्या समझते हैं?

जो वस्तु लोगों के लिए सुहावनी, सार्थक और सफल हो, उसके लिए प्रबल सहायक प्रणाली की आवश्यकता होती है।

किसी भी प्रदर्शन के लिए यह कार्य नेपथ्य गण का है। यह लोगों का एक समूह है जो अलग-अलग उत्तरदायित्वों को निभाते हैं और यह सुनिश्चित करने के लिए कठिन परिश्रम करते हैं कि प्रदर्शन बिना किसी गड़बड़ी के सुचारू रूप से चले। जबकि अधिकांश लोग सोचते हैं कि रंगमंच मुख्य रूप से मंच पर अभिनय करने के संदर्भ में है, किंतु यह एक अल्प ज्ञात तथ्य है कि नेपथ्य कार्य करने वाले व्यक्ति भी समान रूप से महत्वपूर्ण होते हैं।

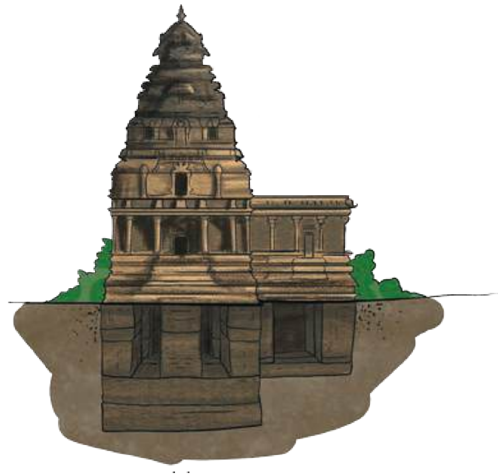

आप सीखेंगे

- नेपथ्य और उसका महत्व
- रंगमंच से जीवन कौशल— समस्या समाधान, अनुशासन एवं सत्यनिष्ठा
- पटकथा लेखन–चरित्र रचना एवं दृश्य विभाजन

नेपथ्य कार्य को अधिक महत्व दिए जाने के कारण, आप सोच रहे होंगे कि नेपथ्य क्या है? क्या यह वह भौतिक स्थान है जो प्रदर्शन क्षेत्र के पीछे फैला हुआ है? यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

यह भौतिक स्थान के कारण नहीं, बल्कि किए जाने वाले कार्यों और इसमें जुड़े व्यक्तियों के कारण महत्वपूर्ण है। जब अभिनेता मंच पर प्रदर्शन करते हैं तो नेपथ्य समूह के सभी प्रयासों एवं कठोर परिश्रम को ध्यान से देखें।

नेपथ्य कार्य में निम्नलिखित पहलू सम्मिलित हैं—

1. रंगमंच शिल्प एवं रंगमंच सामग्री

- प्रदर्शन किए जाने वाले दृश्यों के अनुसार मंच का विन्यास बदलना।
- अभिनेताओं द्वारा उपयोग में ली जाने वाली सभी सहायक अभिनय सामग्री तैयार रखना।
- यह सुनिश्चित करना कि मंच पर ऐसी कोई वस्तु न हो जो कलाकारों के कार्य में बाधा उत्पन्न कर सकती हो।
- प्रदर्शन के समय यदि कोई आकस्मिक घटना घटे या अभिनेता कुछ भूल जाए तो सहायता के लिए तत्पर रहना।

2. वेशभूषा और रूप सज्जा

- कलाकारों को पात्र से संबंधित वेशभूषा एवं रूप सज्जा के साथ तैयार करना।
- दृश्यों के बीच शीघ्रता से वेशभूषा परिवर्तन में सहायता करना।
- वेशभूषा में मामूली टूट-फूट और क्षति में सहायता करना।

3. संगीत

- साउंड ट्रैक के लिए सही संकेत पाने के लिए अभिनेताओं और तकनीकी टीम के साथ काम करना।
- प्रदर्शन के अनुकूल संगीत एवं ध्वनि प्रभावों पर काम करना।
- कभी-कभी मंच पर होने वाली गड़बड़ियों को उचित ध्वनि या संगीत से ढक देना।

4. प्रकाश व्यवस्था

- प्रकाश की योजना बनाएँ और अपने संकेतों को अच्छी तरह से जानें।
- प्रकाश का समय निर्धारित करना तथा अप्रत्याशित परिस्थितियों में अभिनेताओं को सहायता प्रदान करना।

अगर आपने ध्यान दिया होगा, तो ऊपर बताई गई सभी बातें प्रदर्शन के दौरान की जाने वाली चीजों के बारे में हैं। यद्यपि नेपथ्य का मुख्य उत्तरदायित्व प्रदर्शन के समय होता है, लेकिन प्रदर्शन से पहले और बाद में भी बहुत-सी योजनाएँ एवं तैयारियाँ होती हैं। प्रदर्शन के बाद की योजना? हाँ! आगे पढ़ें...

	प्रदर्शन से पहले	प्रदर्शन के बाद
	मंच शिल्प (सेट) एवं मंच सामग्री (प्रॉप्स) ▪ आवश्यक मंच विन्यास या पृष्ठभूमि बनाना। ▪ सामग्री किराए पर लेना या क्रय करना। ▪ सटीक स्थान की स्थिति का अंकन करना। ▪ अंधकार (मद्धम रोशनी) के दौरान शीघ्र बदलाव का अभ्यास करें (दृश्यों के बीच केवल 30 सेकंड के लिए प्रकाश बंद होता है)।	**मंच शिल्प (सेट) एवं मंच सामग्री (प्रॉप्स)** ▪ मंच शिल्प को अलग करें और बिना किसी क्षति के सावधानीपूर्वक सुरक्षित करें। ▪ इसे भंडारण क्षेत्र में ले जाएँ। ▪ समस्याओं की पहचान करें और अगले प्रदर्शन के लिए सुधार करें। ▪ उधार ली गई या किराए पर ली गई सामग्री लौटाएँ।
	वेशभूषा और रूप सज्जा ▪ चरित्र के अनुसार रूपरेखा दें (आपने इसे कक्षा 6 में सीखा था)। ▪ सभी के लिए वस्त्र खरीदें, किराए पर लें या बनाएँ। ▪ आवश्यकतानुसार विग या अन्य शैलीकरण की योजना बनाएँ। ▪ वेशभूषा के साथ पूर्वाभ्यास करना उत्तम योजना बनाने में सहायता करता है।	**वेशभूषा और रूप सज्जा** ▪ अभिनेताओं से वस्त्र और आभूषण वापस लें। ▪ क्षति या लापता हुए सामान की जाँच करें। ▪ मरम्मत या प्रतिस्थापन की व्यवस्था करें। ▪ उधार ली गई या किराए पर ली गई सामग्री वापस करें। ▪ अगली प्रस्तुति के लिए वस्त्र धोना और प्रेस करना।
	संगीत ▪ माइक, स्पीकर और साउंड मिक्सर की जाँच करें। ▪ संगीत वाद्ययंत्रों को ट्यून किया जाए।	**संगीत** ▪ सभी यंत्रों और उपकरणों का सुरक्षित रूप से संरक्षण करें। ▪ तार, पोर्ट, प्लग और अन्य उपकरण सुरक्षित रूप से संग्रहित किए जाएँ।
	प्रकाश ▪ अभ्यास के समय प्रकाश रूपरेखा की योजना बनाएँ। ▪ अभिनेताओं के लिए प्रकाश उपकरण लगाना और सटीक स्थान चिह्नित करना।	**प्रकाश** ▪ टीम के उपकरणों को आयोजन स्थल से अलग करें। ▪ प्रकाश उपकरण, केबलों और स्टैंडों को सुरक्षित रूप से वापस ले जाएँ।

मंच के पीछे होने वाले कार्य की उपरोक्त समझ के अनुसार, आपको क्या लगता है कि प्रत्येक विभाग के लिए कितने लोगों की आवश्यकता होगी? और एक नाटक के लिए मंच के पीछे कितने लोग काम करेंगे जिसमें लगभग 8–10 कलाकार हो सकते हैं? कम से कम 15–18 लोग (कभी-कभी इससे भी अधिक)।

एक प्रदर्शन के लिए इतने अधिक लोग और समूह एक साथ काम कर रहे हैं, यह सुनिश्चित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण पक्ष क्या होगा कि यह सब सुव्यवस्थित ढंग से काम करें?

योजना, प्रबंधन और अनुशासन

रंगमंच और विशेषकर नेपथ्य के कार्य करने से कई जीवन कौशल प्राप्त किए जा सकते हैं।

समूह कार्य और नेतृत्व

सभी विभागों को एक-दूसरे के साथ समन्वय तथा आपसी समझ के साथ काम करना होगा। इनमें से किसी एक में समस्या आने से पूरे प्रदर्शन पर प्रभाव पड़ सकता है।

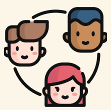

मानव संसाधन

अलग-अलग उत्तरदायित्वों को उठाने के लिए सही तरह के लोगों का होना सबसे महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करना कि सभी लोग अपने काम में सहज हों, काम की उच्च गुणवत्ता बनाए रखने में भी सहायता करता है।

समय प्रबंध

समय का प्रबंधन प्रत्येक सदस्य के लिए आवश्यक है चाहे वह अभिनेता हो या नेपथ्य गण। आगे इसके बारे में विस्तार से बताया गया है।

संचार

समूह के बीच विचारों और मुद्दों का निरंतर आदान-प्रदान एक प्रदर्शन के लिए महत्वपूर्ण है। अगर एक समूह को पता ही नहीं है कि दूसरा समूह किस समस्या से जूझ रहा है तो समन्वय प्रभावित होगा, जिसका प्रभाव प्रदर्शन पर भी पड़ेगा।

संसाधन प्रबंधन

यह सुनिश्चित करना कि मंच शिल्प (सेट), मंच सामग्री (प्रॉप्स) एवं वस्त्र बनाने के लिए सामग्री समय पर प्राप्त हो जाए। यह भी सुनिश्चित करना कि उन्हें सुरक्षित रूप से संग्रहीत किया जाए एवं वित्त तथा बजट पर ध्यान दिया जाए।

बिक्री तथा विपणन

समूहों द्वारा किए जा रहे कठिन परिश्रम को देखते हुए, क्या यह महत्वपूर्ण नहीं है कि इसे देखने के लिए अच्छे दर्शक हों?

अनुशासन एवं प्रतिबद्धता

यह एक ऐसा गुण है जिसे एक समूह के रूप में सफलतापूर्वक प्रदर्शन करने में सक्षम होने के लिए प्रत्येक सदस्य को विकसित करना होगा। उदाहरण के लिए—

- बिना कोई बहाना बनाए सभी पूर्वाभ्यासों और तैयारी सत्रों में भाग लेना।
- निर्देशक के निर्देशानुसार अपना कार्य और तैयारी करना।
- समय पर पहुँचना और समूह को प्रतीक्षा नहीं कराना।
- यह सुनिश्चित करना कि आप सभी पुन: प्रदर्शनों और उनके पूर्वाभ्यासों के लिए उपस्थित रहें।
- खाली समय में अतिरिक्त सहायता के लिए स्वयंसेवा करना, वेशभूषा और प्रॉप्स जैसे संसाधनों को साझा करना।

ऊपर चर्चा किए गए नेपथ्य के सभी तत्वों के साथ, क्या कुछ बिंदु ऐसे लगते हैं जो आपके शिक्षक और माता-पिता आपको विद्यालय या घर में लगातार पालन करने के लिए कहते हैं? यह सच है कि इनमें से अधिकांश गुण आपके दैनिक जीवन में भी लागू होते हैं, किंतु एकमात्र अंतर यह है कि रंगमंच आपको इन कौशलों को सीखने के साथ-साथ मौज-मस्ती और आनंद-उत्सव करने का अवसर देता है।

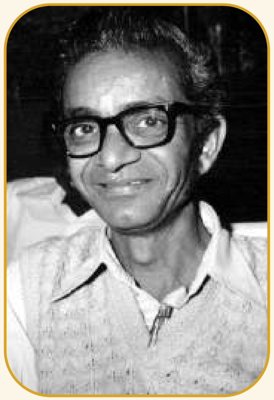

वी. राममूर्ति एक व्यावसायिक नेपथ्यकर्मी थे जो प्रकाश, ध्वनि, मंच-विन्यास (स्टेज डिजाइन), मूकाभिनय और संगीत में अपने काम के लिए पूरे देश में जाने जाते थे। उन्होंने न केवल कई नाटकों एवं मूकाभिनय प्रदर्शन का निर्माण किया, अपितु उनके द्वारा प्रशिक्षित कई प्रशिक्षु और नेपथ्यकर्मी आज भी रंगमंच में सफलतापूर्वक कार्यरत हैं!

तापस सेन 1940 से 2006 के बीच एक विशेषज्ञ प्रकाश व्यवस्थापक थे। वे प्रकाश के जादूगर की तरह थे, उन्होंने उस दौर में जब भारत में प्रकाश के अत्याधुनिक उपकरण उपलब्ध नहीं थे तब भी कई नाटकों के लिए प्रकाश विन्यास का कार्य कुशलतापूर्वक किया, इसके अतिरिक्त उन्हें वर्ष 2000 में नववर्ष के समारोह में एफिल टावर पर प्रकाश संरचना करने के लिए भी आमंत्रित किया गया। दुनियाभर में कई प्रदर्शन के लिए उन्होंने प्रकाश-विन्यास का कार्य किया।

आइए, हम उन गतिविधियों की एक सूची बनाएँ जो आपको लगता है कि आप रंगमंच के बाहर भी उपयोग कर सकते हैं। पहले दो उदाहरण दिए गए हैं—

मेरे जीवन में रंगमंच कौशल

1. अपने सामान, यूनिफॉर्म, लेखन-सामग्री, पुस्तकों आदि का भली प्रकार ध्यान रखें।
2. नियमित रूप से अभ्यास (अध्ययन) करें जिससे आप प्रदर्शन के समय आश्वस्त रहें। सब कुछ अंतिम क्षण के लिए बचाकर रखने से कोई लाभ नहीं होगा।
3. --
4. --
5. --

आप अपनी नोटबुक में इस सूची में कुछ भी जोड़ने के लिए स्वतंत्र हैं।

नेपथ्य का इतिहास

नाटकों के लिए नेपथ्य का काम रंगमंच जितना ही पुराना है, क्योंकि जैसा कि हमने अब तक चर्चा की है, इतिहास के किसी भी बिंदु पर किसी भी प्रदर्शन के लिए एक ठोस सहायक प्रणाली की आवश्यकता होती है। वास्तव में, प्रदर्शन कला का सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ *नाट्यशास्त्र*, 2500 वर्ष से भी पूर्व लिखा गया था, जिसमें प्रदर्शन की तैयारी के लिए पालन किए जाने वाले सभी निर्देशों का एक अत्यंत विस्तृत विवरण और चरणबद्ध निर्देश सम्मिलित हैं। पूर्वरंग विधि भी नेपथ्य के इतिहास का भाग है, इसमें संगीत वाद्ययंत्र, मंच शिल्प और सामग्री की स्थापना से लेकर निर्बाध प्रदर्शन के लिए देवताओं के आशीर्वाद का आह्वान करने तक सब कुछ विस्तार से बताया गया है।

रंगमंच में तीन घंटियाँ

किसी भी व्यावसायिक रंगमंच प्रदर्शन में अलग-अलग अंतराल पर तीन घंटियाँ बजाई जाती हैं। प्रत्येक का भिन्न अर्थ होता है। यह केवल कलाकारों और नाट्य-समूह के लिए ही नहीं, अपितु दर्शकों के लिए भी होता है। इसका क्या अर्थ है, आइए जानते हैं—

पहली घंटी— दर्शकों को शांत रहने का संकेत, क्योंकि नाटक शीघ्र ही आरंभ होने वाला है। इस समय तक, पहले दृश्य से संबंधित मंच शिल्प और मंच सामग्री मंच पर रख दिए जाते हैं।

दूसरी घंटी—अब, अभिनेता मंच पर हैं और अपनी जगह पर हैं। मंच पर सभी लोग अपनी जगह पर आ जाते हैं। यह इस बात का संकेत है कि मंच के माइक अब उपयोग के लिए तैयार हैं। घोषणा की जाती है (नाटक का नाम, नाटककार, निर्देशक और अन्य विशेष सूचना)। नाटक के समय फ्लैश फोटोग्राफी और मोबाइल फोन के प्रयोग पर कड़े प्रतिबंध की भी घोषणा की जाती है।

तीसरी घंटी— शो आरंभ होता है! इतने सारे अभ्यास के बाद यह प्रदर्शन समूह के लिए अंतिम परीक्षा की तरह है।

क्या आप उन तीन चरणों की पहचान कर सकते हैं जिनका पालन करके आप परीक्षा से पहले तनाव से बच सकते हैं और उत्तम प्रदर्शन कर सकते हैं?

नाट्यशास्त्र में नाट्य गृह की संरचना का भी विस्तृत विवरण है। इसमें प्रदर्शन आयोजित किए जाते थे और नेपथ्य, मंच के पीछे या दर्शक दीर्घा सहित मंच के चारों ओर का पूरा स्थान इसमें सम्मिलित है। यहाँ अपनाए जाने वाले अनुशासन और प्रक्रियाओं को 'नेपथ्य विधि' कहा जाता है, इसमें मंच के अग्र भाग के कोनों पर मत्तवारिणी (हाथी के आकार के बड़े खंभे) होती थी, जहाँ से कलाकार प्रवेश और निकास के लिए मंच और हस्त सामग्री तैयार रखते थे। आज हमारे पास पार्श्व खंड (विंग्स) की अवधारणा है जो इसी तरह का काम करती है। सामान्यत: थिएटर में तीन पार्श्व खंड होते हैं जो मंच के दोनों ओर प्रवेश और निकास के लिए तीन रास्ते बनाते हैं।

नाट्यशास्त्र अध्याय 5 पूर्वरंग से नीचे दिए गए श्लोक में नेपथ्य कार्य के महत्व का सारांश दिया गया है।

न तथाग्निः प्रदहति प्रभञ्जनसमीरितः।
यथा ह्यपप्रयोगस्तु प्रयुक्तो दहति क्षणात् ।। 17।।

तीव्र हवा से फैलने वाली आग भी मंच को उतनी हानि नहीं पहुँचाती जितनी कि त्रुटिपूर्ण नियोजित प्रयोग से होती है।

ग्रीक रंगमंच में चूंकि प्रदर्शन स्थल खुला था, किंतु वहाँ भी ऐसी ही व्यवस्था थी।

प्रदर्शन क्षेत्र के पीछे का वह स्थान जहाँ अभिनेता वेशभूषा और मुखौटे पहनकर तैयार होते थे, वह हरे अंगूर के बागों, पेड़ों और झाड़ियों से ढका हुआ था। यही कारण है कि इसे 'ग्रीन-रूम' कहा जाता था। इसका उपयोग आज भी दुनियाभर के कलाकार करते हैं! वह स्थान जहाँ शृंगार एवं वेशभूषा बदलने का काम होता है, उसे अभी भी ग्रीन रूम कहा जाता है, यद्यपि अब वहाँ कुछ भी हरा नहीं होता है।

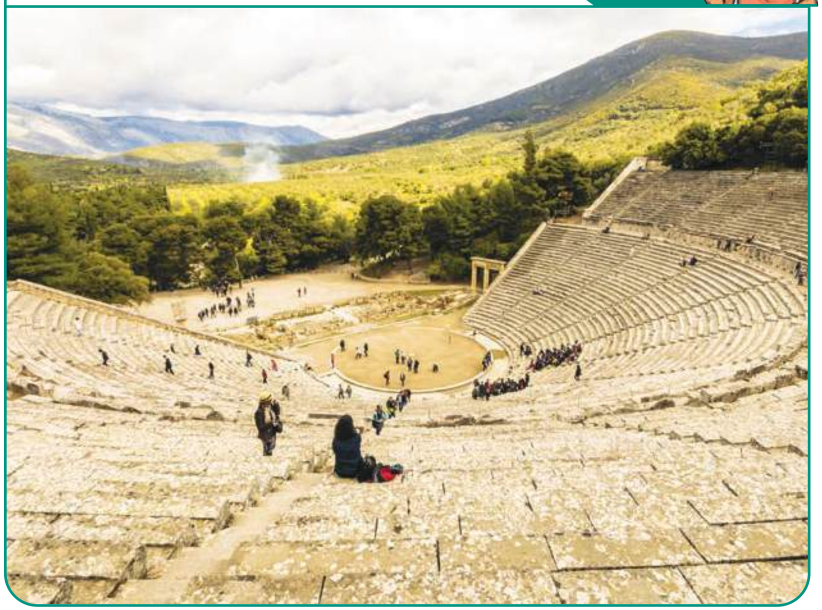

यहाँ कुछ परिदृश्य दिए गए हैं जो किसी भी समय रंगमंच प्रदर्शन में हो सकते हैं। स्वयं को उस स्थिति में रखें और उसका समाधान लिखें। आप एक से अधिक समाधान भी सोच सकते हैं।

किंतु योजना बनाने में लगने वाले समय और उपलब्ध वास्तविक समय को ध्यान में रखें। इसमें सम्मिलित धन भी महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, हो सकता है आप पूरा नया सेट नहीं खरीद पाएँ, क्योंकि यह बहुत महंगा हो सकता है।

परिदृश्य 1

सुबह के 11 बज रहे हैं और शो आज शाम को होना है। समूह अभी-अभी अभ्यास के लिए कार्यक्रम स्थल पर पहुँचा है। उसके बाद वे नाटक के लिए तैयार होने लगते हैं। रिहर्सल के दौरान मुख्य अभिनेता भूलवश गिर जाता है और उसके पैर में चोट लग जाती है। डॉक्टर के अनुसार चोट काफी गंभीर है और अभिनेता सहजता से चल नहीं पाएगा। आप यह भी देखते हैं कि अभिनेता द्वारा पहनी गई वेशभूषा भी फटी हुई है, अलग वेशभूषा मिलना संभव नहीं है, क्योंकि उसे विशेष रंग और शैली के अनुरूप बनाया गया था। नाटक में इसका एक महत्वपूर्ण संदर्भ है। प्रचार के लिए पोस्टर में भी यही पोशाक उपयोग की गई है। प्रस्तुति 5 घंटे में आरंभ होने वाली है। आप क्या करेंगे?

परिदृश्य 2

आप एक जादुई कंगन पर आधारित प्रस्तुति की तैयारी कर रहे हैं। पूरी कहानी इसके इर्द-गिर्द घूमती है। यह एक विशेष रूप से बनाया गया कंगन है, जो दुकानों में उपलब्ध नहीं है। यह प्रस्तुति का दिन है हर कोई तैयार और उत्साहित है, जब मंच सामग्री प्रभारी दौड़ता हुआ आता है और कहता है कि कंगन चोरी हो गया! तब आप क्या करेंगे?

चोरी हुए कंगन जैसा कुछ बनाएँगे (मूल कंगन बनाने में 5 दिन लगे थे), पटकथा बदलेंगे या स्थिति के अनुरूप प्रकाश और संवाद के साथ प्रयोग करेंगे? चोर को ढूँढेंगे? व्यक्तिगत रूप से या समूह में चर्चा करके कोई हल निकालिए।

आइए, घेरा बनाएँ

नेपथ्य

1. नेपथ्य के किस विभाग में आपकी सबसे अधिक रुचि है? क्यों?
2. आप अपने दैनिक जीवन में कौन-सा नेपथ्य कौशल उपयोग करना चाहेंगे?
3. परीक्षा के दौरान कौन-सा कौशल आपकी उत्तम सहायता करेगा?

II. नाट्य-आलेख लेखन 'सही लिखें'

"नाट्य-आलेख के बिना नाटक बिना दिक्सूचक (कम्पास) के जहाज की तरह है। नाट्य-आलेख कहानी को दृष्टि से जोड़ता है।"

इतनी महत्वपूर्ण भूमिका के साथ, विवरणों को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि आपके पास अपने नाटक पर काम करने के लिए सही कथानक है। अब तक आपने निम्नलिखित बातें सीखी हैं—

- कहानी तथा कथानक के बीच अंतर
- एक कहानी के तीन भाग — आरंभ — मध्य — अंत
- द्वंद्व का महत्व
- सरल वार्तालाप लिखना

इन अवधारणाओं को केवल सीखना ही पर्याप्त नहीं है। आपको निरंतर इनका अभ्यास करना होगा। हो सकता है कि आपको हर समय नए नाट्य-आलेख लिखने की आवश्यकता नहीं हो। आप उन्हें अपनी पढ़ी हुई कहानियों की किताबों या देखी हुई फिल्मों में भी पहचान सकते हैं। इससे आपको यह अच्छी तरह समझ में आ जाएगा कि इसे कैसे प्रयोग किया जाता है।

अब हम कथानक लिखने के अगले चरणों की ओर बढ़ते हैं।

1. संरचना

कहानी की घटनाओं को व्यवस्थित करने का क्रम ही संरचना है। मूलभूत संरचना का पालन करते हुए आपको सुनिश्चित करना है कि निम्नलिखित तत्वों को समाहित कर लिया जाए—

नायक — वह चरित्र जिसके बारे में कहानी है।

लक्ष्य — वह क्या चाहता या चाहती है?

द्वंद्व — उसके लक्ष्य तक पहुँचने के मार्ग की बाधाएँ।

संकल्प — क्या वह लक्ष्य प्राप्त करता या करती है? कैसे?

उदाहरण के लिए, आइए हम रामायण को देखें जिससे हम सभी परिचित हैं। संरचना से परिचित होने पर हमारे पास है—

नायक — राम

लक्ष्य — राजा के रूप में अयोध्या की देखभाल करना, धर्म के मार्ग पर चलना।

द्वंद्व — 14 वर्षों के लिए वन में निर्वासित, रावण द्वारा उनकी पत्नी सीता का हरण कर लिया जाता है।

समाधान — सीता को वापस लाने के लिए हनुमान का सहयोग, 14 वर्ष पूरे करना, अयोध्या पर राज करने के लिए वापस लौटना।

अब, इन मुख्य बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए, आपके लिए इन बिंदुओं को जोड़कर एक अच्छी तरह से संरचित कहानी बनाना सरल है।

आप इस संरचना को किसी भी कहानी में प्रयोग कर सकते हैं। आइए, हम आपकी सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक की कहानियों के साथ प्रयास करें।

कहानी	नायक	लक्ष्य	संघर्ष	संकल्प
अ. चंद्रगुप्त मौर्य और कौटिल्य				
ब. प्रभावती गुप्ता				

बहुत अच्छा! कहानियों को समझने और याद रखने का यह एक बढ़िया उपाय है। आप अपनी पुस्तक में विक्रमादित्य और पृथ्वीराज चौहान जैसी और भी कहानियों पर काम कर सकते हैं।

2. पात्र

एक नाट्य आलेख में कई चरित्र होते हैं जो कहानी को संप्रेषित करने में सहायता करते हैं। किंतु जब आप लिख रहे होते हैं तो आपके पास इस बात पर पूरा नियंत्रण होता है कि आपको कितने चरित्र चाहिए और कहानी में प्रत्येक चरित्र क्या करता है। एक लेखक के रूप में आपको जब भी आप चाहें, किसी भी चरित्र को सम्मिलित करने और किसी भी चरित्र को हटाने का अधिकार है। किंतु कोई भी अधिकार उत्तरदायित्व के साथ आता है। इसलिए उत्तरदायित्व का भान रखते हुए लिखिए।

अपने मुख्य पात्रों को अच्छी तरह जानें

वे कहानी में क्या चाहते हैं? एक व्यक्ति के रूप में उनके सामने क्या मुद्दे या समस्याएँ हैं? (कहानी के द्वंद्व से भ्रमित न हों)

उदाहरण— हर्ष अपने घर के पीछे से आने वाली ध्वनि का रहस्य सुलझाना चाहता है। उसकी समस्या यह है कि उसे अंधेरे से डर लगता है।

गतिविधि 3.2.1

मुख्य पात्रों की सूची निम्नलिखित विवरण सहित बनाइए—

- नाम, उम्र, पृष्ठभूमि की जानकारी।
- व्यक्तिगत समस्या और विशेष विशेषताएँ, यदि कोई हो।

कहानी के माध्यम से पात्रों में आए बदलावों को समझें

प्रत्येक अनुभव और परिस्थिति जिसका हम सामना करते हैं, वह हमारे भीतर परिवर्तन लाती है। यह हमारे भीतर शक्ति पैदा कर सकती है या हमें किसी व्यक्ति के बारे में नया दृष्टिकोण दे सकती है या फिर किसी गतिविधि के बारे में हमारा विचार बदल सकती है। जैसा कि हमारे साथ होता है, वैसा ही चरित्रों के साथ भी हो सकता है।

उदाहरण— हर्ष रहस्य को सुलझाने का प्रयास करता है, परंतु अंधेरे के बाद बाहर जाने से बचने के कारण वह असफल हो जाता है। एक दिन उसकी अज्जी उससे मिलने आती है और उसे बताती है कि कैसे उसे बस में चढ़ने से डर लगता था, किंतु उसने स्वयं पर वश पाने के लिए काम किया। इससे हर्ष को अंधेरे के डर पर वश पाने की प्रेरणा मिलती है। इसलिए इस बिंदु से आगे की कहानी में हर्ष अंधेरे के बाद पीछे जाने पर अलग तरह से प्रतिक्रिया करेगा। इसे **चरित्र में परिवर्तन (करेक्टर आर्क)** के रूप में जाना जाता है।

सहायक पात्र

यद्यपि कहानी उनके बारे में नहीं है, किंतु ये चरित्र भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। मुख्य चरित्र इन पात्रों के बिना कुछ खास नहीं कर पाएँगे। इसलिए कहानी में सहायता करने वाले नए पात्रों को जोड़ने में संकोच न करें। किंतु उत्तरदायित्व निभाना याद रखें। प्रत्येक नए चरित्र का कथानक के लक्ष्य के प्रति एक अर्थ एवं उद्देश्य होना चाहिए।

उदाहरण— अज्जी, जो हर्ष को उसके डर पर काबू पाने में सहायता करती है, एक अच्छा सहायक चरित्र है। एक वैज्ञानिक जो ध्वनि और हवा के बारे में जानकारी देता है, एक अच्छा सहायक चरित्र है। लेकिन एक दूधवाला जो घर में प्रतिदिन आता है, वास्तविक रहस्य में उसका योगदान नहीं है, नाट्य आलेख में उसका होना बिल्कुल भी आवश्यक नहीं है।

गतिविधि 3.2.2

- विचार एवं व्यवहार के संदर्भ में पात्रों पर ध्यान दें।
- कहानी आरंभ होने पर वे कैसे हैं?
- वे कहानी के मध्य में कैसे हैं?
- वे कहानी के अंत में कैसे हैं?

गतिविधि 3.2.3

अपनी पटकथा में सभी सहायक अभिनेताओं की सूची बनाएँ और जाँचें कि क्या यह पात्र है—

- मुख्य चरित्र या लक्ष्य में कोई अंतर लाना?
- किसी स्थिति का संदर्भ प्रदान करना।

  यदि ऐसा नहीं होता है तो उन्हें हटाने पर विचार करें।

3. दृश्य

आपने देखा होगा कि पुस्तक को अध्यायों में बाँटा जाता है। इसी तरह, नाटक या फिल्म के हिस्सों को दृश्यों में बाँटा जाता है। इसकी क्या आवश्यकता है? सब कुछ लगातार क्यों नहीं चल सकता?

दृश्य वे विभाजन हैं जो समय, स्थान या क्रिया में परिवर्तन को चिह्नित करते हैं

आपको यह चुनने का अधिकार है कि आप कितने दृश्य चाहते हैं। किंतु याद रखें, अधिकारों के साथ, उत्तरदायित्व भी आते हैं! अपने प्रत्येक दृश्य के लिए इन बिंदुओं की जाँच करें। यदि यह इन बिंदुओं को संतुष्ट नहीं करता है तो आपको दृश्यों के विभाजन पर पुन: कार्य करना होगा।

दृश्य का उद्देश्य

क्या यह कहानी को आगे बढ़ाता है या किसी नए पात्र का परिचय देता है या फिर किसी स्थिति पर स्पष्टता लाता है?

वैध दृश्य परिवर्तन

दृश्य परिवर्तन अचानक नहीं होना चाहिए, यह दर्शकों के विचार प्रवाह के अनुरूप होना चाहिए। प्रत्येक दृश्य का जुड़ाव तार्किक रूप से पिछले और अगले दृश्य से होना चाहिए।

प्रत्येक दृश्य के लिए आरंभ-मध्य-अंत

प्रारंभ में परिचय, मध्य में मूल उद्देश्य को प्राप्त करना तथा अंत में अगले दृश्य की ओर ले जाने के साथ समापन।

पहला दृश्य और अंतिम दृश्य

पहले दृश्य में ही दर्शकों का ध्यान आकर्षित करें ताकि रोचकता अंत तक बनी रहे। अंत प्रभावशाली हो, सभी प्रश्नों को सुलझाएँ और कोई उत्तर न छोड़ें।

आइए, घेरा बनाएँ

नाट्य आलेख लेखन

1. आपने जो नाटक या फिल्म देखी, उसमें कौन-सा पात्र आपका मनपसंद है? उसके चरित्र में परिवर्तन (करेक्टर आर्क) और दोष पहचानें।
2. चूँकि आपको अपना नाट्य आलेख लिखना है तो यह किस शैली और विषय पर होगा?
3. क्या कोई ऐसी फिल्म या नाटक है जिसके बारे में आपको लगा कि उसका कथानक बिल्कुल भी अच्छा नहीं था और क्यों?

बुद्धि के खेल

अपनी स्वयं की पटकथा लिखें!

हाँ, अब तक आपने जो कुछ भी सीखा है, उसे एक साथ रखकर आप निश्चित रूप से स्वयं का नाट्य आलेख लिखने में सक्षम हैं। इस प्रक्रिया में आपकी सहायता के लिए यहाँ एक त्वरित चरणबद्ध जाँच-प्रक्रिया की सूची दी गई है—

- ❖ मैं पटकथा लिखूँगा ☐ स्वयं ☐ एक समूह में (अपने 3–4 मित्रों का समूह तैयार कर लें)
- ❖ एक ऐसी अवधारणा या विचार चुनें जो आपको प्रेरित करता हो (यदि वह आपकी रुचि का नहीं है तो वह आपके पाठकों को भी रुचिकर नहीं लगेगा)।

या

- ❖ दाईं ओर दिए गए चित्रों में से एक चुनें, उसका अवलोकन करें और एक कहानी बनाएँ
- ❖ एक समग्र रचना जिसमें प्रारंभ – मध्य – अंत की संरचना हो और द्वंद को स्पष्ट रूप से परिभाषित करते हुए तैयार करें।
- ❖ इसे नायक – लक्ष्य – बाधा – समाधान की संरचना में रखें।
- ❖ पात्र बनाएँ, दृश्यों में विभाजित करें और संवाद लिखें।

अब आपके पास अपने पहले नाट्य आलेख का एक 'प्रारूप' तैयार है। जब तक यह तैयार न हो जाए, आप इसमें सुधार कर सकते हैं। अब अभ्यास प्रारंभ करें।

मुख्य बातें — जीवन के लिए सीख

मंच के पीछे जादू करना

रंगमंच केवल वेशभूषा धारण कर मंच पर अभिनय करने वाले अभिनेताओं के बारे में नहीं है। यह एक सामूहिक प्रयास है। एक अभिनेता के प्रत्येक सफल प्रदर्शन के लिए, इसे सफल बनाने के लिए मंच के पीछे कई लोग कार्य करते हैं। इससे आपसी सम्मान और कार्य के लिए मूल्य की भावना का निर्माण होता है। मंच के पीछे का कार्य हमेशा मौन में होता है। सारा काम तब होता है जब नाटक चल रहा होता है। इसलिए समन्वय से लेकर समस्या निवारण तक, यह सब मौन में किया जाता है (आप संभवत: यहाँ अपने मूकाभिनय कौशल का उपयोग कर सकते हैं!) बधाई संदेश भी मौन होते हैं। जबकि अधिकांश तालियाँ अभिनेताओं द्वारा ली जाती हैं, मंच के पीछे का दल तालियों और बधाई को चुपचाप स्वीकार करता है।

नेपथ्य कार्य करने की सबसे सुंदर अनुभूति 'जादू को सच करने' की अनुभूति है। एक सफल प्रदर्शन के बाद, आपको पता चलता है कि उस सफलता में आपके समय और प्रयास का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

आकलन

अध्याय 3 — आइए, डिजाइन करें — मंच तकनीक-2				
दक्षताएँ सी.-3.1 — विभिन्न सामग्रियों का उपयोग करते समय सावधानी और बुनियादी मंच शिष्टाचार का प्रदर्शन करना तथा नाटक के उपकरण एवं तकनीक का प्रयोग करते समय सूचित विकल्प बनाना। सी.-3.2 — बाहरी दर्शकों के लिए नाटक में योजना चरण से लेकर अंतिम प्रस्तुति तक विचारों एवं तकनीकों को परिष्कृत करना है और पूरी प्रक्रिया की समीक्षा करना।				
सी.जी.	**सी.**	**सीखने के प्रतिफल**	**अध्यापक**	**स्वयं**
3	3.1	क्या नेपथ्य के कार्य में सम्मिलित अनुशासन और कठिन परिश्रम को समझने में सक्षम हैं।		
3	3.1	संरचना के आधार पर कहानियों को वर्गीकृत कर सकता या सकती है और इसे अपने नाट्य आलेख में उपयोग कर सकता या सकती है।		
3	3.2	रंगमंच के कौशल को जीवन में प्रतिदिन के अनुशासन को उत्तम बनाने से जोड़ सकता या सकती है।		
3	3.2	ऐतिहासिक नेपथ्य कार्य की तुलना वर्तमान कार्य से करता या करती है।		
3	3.2	दृश्यों की योजना बना सकता या सकती है और स्वतंत्र रूप से नाट्य-आलेख लिखने का प्रयास कर सकता या सकती है।		

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

----

4 भारतीय कथा वाचन परंपरा की कहानी

0780CH04

एक समय की बात है, एक लड़की थी— कथांजली, जिसे कथा वाचन बहुत पसंद था।

वह प्राचीन इतिहास से लेकर आधुनिक समय तक की सभी कहानियाँ जानती थी। वह स्वयं भी कहानियों की रचना करती थी। माना जाता है कि वह सहस्त्र वर्षों से जीवित है। उसने कई राजाओं और शासकों को देखा है, साधारण लोगों के बीच रही तथा दुनियाभर की यात्राएँ भी की। इसलिए, उसने जिन कहानियों को पढ़ा और जिया है, उसे सब स्मरण है। किंतु वह सदैव और भी रोचक कहानियों को ढूँढ़ती रहती है तथा इसके लिए जिज्ञासु भी रहती है।

आओ उसकी बात सुनते हैं —

आप सीखेंगे

- भारत में कथा वाचन के लोक रूप
- आज के कलाकारों को आने वाली समस्याएँ
- सुप्रसिद्ध पारंपरिक कथावाचक

नमस्ते! यद्यपि मैंने दुनियाभर की यात्राएँ की हैं, किंतु मेरा सबसे पसंदीदा स्थान सदैव भारत ही रहा है। मैं चाहे कहीं भी रहूँ, मुझे पुनः यही लौटना पसंद है क्योंकि यह मेरे घर जैसा लगता है। यहाँ की कहानियाँ बहुत सुंदर हैं। यह सब प्रारंभ कैसे हुआ, क्या आप जानते हैं? कई वर्ष पूर्व, जब मैं भारत के विभिन्न स्थानों की यात्रा कर रही थी तो मुझे यह लगा कि लोगों को कहानियों के बारे में अधिक जानकारी नहीं थी। वे उस आनंद एवं उन मूल्यों से वंचित थे जो कहानियों से सीख सकते हैं। मुझे कोई रास्ता निकालना था, जिससे मैं उन्हें कहानियाँ सुना सकूँ। किंतु मैं अकेले सब कुछ नहीं कर सकती थी, इसलिए मैंने कथा वाचक को बनाया।

वे ऐसे लोग थे जो कथाओं को स्मरण कर सकते थे और उन्हें अत्यंत रोचकता से सुना सकते थे। यह आनंदमयी था। देशभर में बहुत से कथा वाचक थे, जो बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी को कहानियाँ सुनाते थे।

यह विस्तार सहस्त्र वर्षों तक चलता रहा। लगभग दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में मैंने देखा कि श्रोता कभी-कभी ऊब जाते थे या उनका ध्यान भटक जाता था। मैं कुछ ऐसा करना चाहती थी जिससे यह और रोचक बन सके। तब मैंने चित्र, संगीत, नृत्य और कठपुतलियों का प्रयोग करना आरंभ किया।

यह प्रक्रिया विभिन्न आयुवर्ग के व्यक्तियों के लिए कथावाचन का अनूठा प्रयोग बन गई। मैंने देश के विभिन्न भागों में जाकर दृश्य कला, संगीत और नृत्य द्वारा परंपराओं को ध्यान में रखकर कहानियाँ रची।

क्या आपको कुछ ऐसे रूपों के बारे में जानने की इच्छा है?

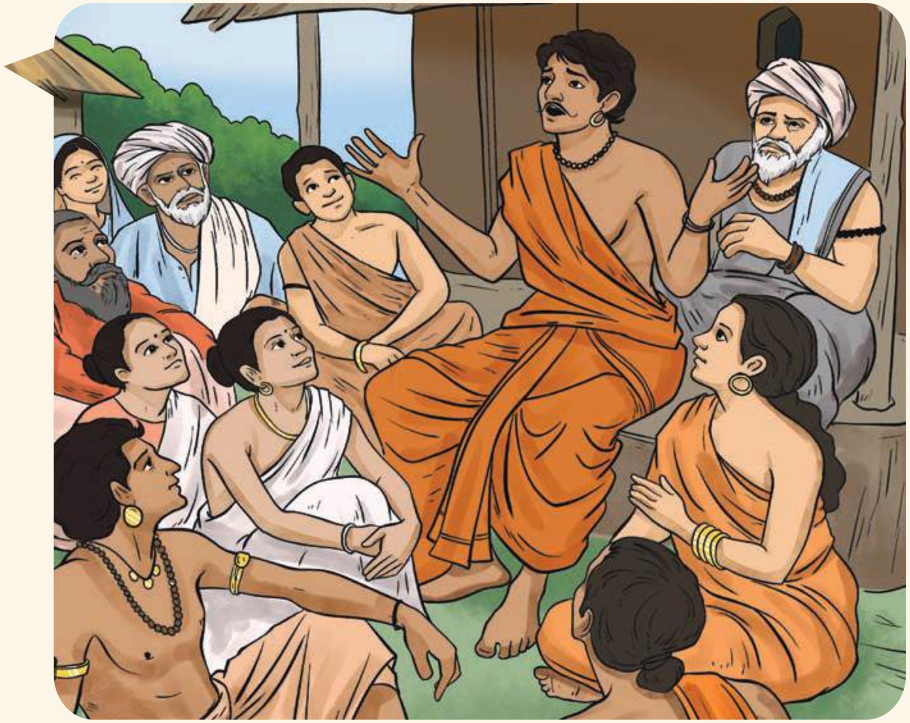

हरि कथा

बारहवीं शताब्दी के समय, जब मैं भारत के दक्षिणी भाग की यात्रा कर रही थी तो मैंने कई सुंदर मंदिर देखे तथा ऐसे राजाओं से भेंट की जो कला और संस्कृति को प्रोत्साहन देते थे। किंतु मैंने यह भी देखा कि बहुत से लोग अब भी हमारी अद्भुत कहानियों से अनभिज्ञ थे।

मुझे स्मरण आए नारद मुनि, जो एक स्थान से दूसरे स्थान जाकर भगवान विष्णु की कथाओं को सुनाया करते थे। मैंने सोचा — यही उपाय यहाँ की कहानियों को वाचने के लिए भी उपयुक्त होगा। तब मैंने भागवतर समुदाय को प्रोत्साहित किया कि वे गीतों एवं नृत्यों के माध्यम से कथा वाचन करें। यह उपाय अत्यंत पसंद किया गया क्योंकि यह परस्पर संवादात्मक था। चूँकि ये कथाएँ भगवान हरि (विष्णु) की थीं, इसलिए इसे 'हरि कथा' के नाम से जाना जाने लगा।

यह परंपरा आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु में अत्यंत लोकप्रिय हुई। इन कथाओं को वाचने वाले को 'हरि कथा दास' कहा जाता था।

हरि कथा — गुरुराजुलु नायडू

गुरुराजुलु नायडू एक बहुभाषीय और बहु प्रतिभाशाली कलाकार थे। इनका का जन्म 1931 में हुआ था।

हरि कथा के क्षेत्र में उनके योगदान के कारण उन्हें 'कर्नाटक हरि कथा पितामह' की उपाधि दी गई।

जहाँ वास्तविक हरि कथा की प्रस्तुतियाँ पूरी रात चलती थीं, उनकी शैली ने हरि कथा प्रदर्शन में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया जिसकी अवधि 90 मिनट की थी, जिसे दर्शकों ने बहुत पसंद किया।

उनकी प्रसिद्ध हरि कथाओं में— भक्त मार्कंडेय, भक्त सिरियाल, महिरावण, माया बाजार, नल्लथंगा देवी, गज-गौरी व्रत, श्रीकृष्ण गरुड़ी, लव-कुश और कई अन्य प्रमुख हैं।

उन्होंने फिल्मों में भी अभिनय किया है, जैसे— मूरुवारे वज्रगालु, हन्नेले चिगुरिदागा, मधु मालती और अन्य।

काँवड़ कथा

यह कथा सुनाने की एक परंपरा है जो 500 वर्षों से भी अधिक पुरानी है। जब मैंने देखा कि साधारण व्यक्ति *रामायण*, *महाभारत*, पुराणों और हमारी परंपरा की अन्य कहानियों को पढ़ने में असमर्थ हैं तो मैंने राजस्थान के भाट समुदाय, जो शिल्पकार होते हैं, से एक रोचक विधि अपनाने को कहा— चित्रों के माध्यम से कथा वाचन करना। चूँकि चित्रों को समझने के लिए भाषा की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए हर कोई उन्हें समझ सकता था। इस तरह वे गाँव-गाँव में जाकर काँवड़ लेकर कथा वाचन करते थे। वे लोगों की स्थानीय भाषा में कथा वाचन के साथ गाने भी गाते थे।

वे बच्चों के लिए *पंचतंत्र* और *हितोपदेश* की कहानियाँ भी सुनाते थे। आजकल वे कुछ आधुनिक कहानियाँ भी सुनाते हैं, जिनमें लड़कियों की शिक्षा, स्वच्छता जैसी सामाजिक रूप से प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण बातें होती हैं।

यह चित्रों वाला बक्सा या पेटी आम के पेड़ की लकड़ी से बनाया जाता है। कहानी की आवश्यकता के अनुसार इस बक्से या पेटी में 8 से 16 हिस्से होते हैं। अब तक का सबसे बड़ा कवर 25 फीट लंबा बनाया गया है।

ऐसे कितने कथा वाचक थे। जो देशभर में यात्राएँ करते हुए कहानियाँ सुनाते थे और उन्होंने इस कला को जीवित रखा। कुछ ने तो अलग-अलग देशों की यात्रा भी की, जहाँ उन्होंने हमारे देश की कहानियों और परंपराओं को प्रदर्शित किया। क्या इनमें से कुछ के बारे में जानना चाहेंगे?

यद्यपि पहले ये परंपराएँ अधिक लोकप्रिय थीं, जो अब धीरे-धीरे दुर्लभ होती जा रही हैं। युवा पीढ़ी इन कलाओं को आगे बढ़ाने के लिए सीख नहीं रही है, जिस कारण बाधाएँ

काँवड़िया — खोजाराम जी

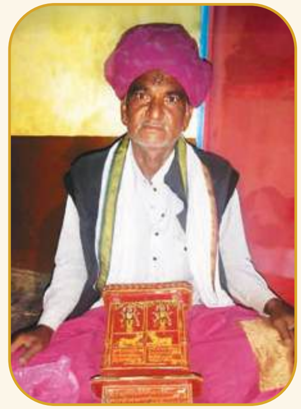

खोजाराम जी, राजस्थान के जोधपुर के पास स्थित कुमार धणी गाँव से हैं। वे बचे हुए कुछ काँवड़ियों में से वो एक हैं और पिछले 40 वर्षों से अधिक समय से काँवड़ कथा की परंपरा को निभा रहे हैं।

उनका कहना है कि— "पहले लोग ज्ञान-दान-भगवान में विश्वास करते थे। काँवड़ कथा सुनने के लिए सभी लोग एक पेड़ के नीचे इकट्ठा होते थे। काँवड़ मंदिर के रूप में उनके पास आता था और वे न केवल भगवान को देखते थे, अपितु उनकी कहानियों में निहित ज्ञान भी सुनते थे। अब वे साल में एक बार जजमान (श्रद्धालु) के घर जाते हैं। वह भी अन्य काँवड़ियों की तरह एक पुस्तक रखते हैं, जिसमें वे आस-पास के परिवारों में रहने वाले, मृत तथा नवजात लोगों का लेखा-जोखा भी रखते हैं।"

उत्पन्न हो रही हैं। आजकल सभी टीवी और स्मार्टफोन में व्यस्त हैं। ऐसे में कहानियाँ सुनने वाला कोई नहीं बचा है। यदि कथा वाचक ही नहीं बचेंगे तो कथाएँ भी इनके साथ ही चली जाएँगी। क्या आपको नहीं लगता

फड़ चित्रकला — राजस्थान

पुराणों, राजाओं और उनके द्वारा लड़े गए युद्धों की कहानियाँ पाबूजी और देवनारायण जैसे स्थानीय देवताओं की स्तुति

थांगका चित्रकला — लद्दाख, सिक्किम, जम्मू-कश्मीर और अरुणाचल प्रदेश

बौद्ध ग्रंथों की कथाएँ, संतों के जीवन की घटनाएँ और स्थानीय लोक कथाएँ

की इन परंपराओं को जीवित रखना और उन्हें दुनियाभर में प्रसारित करना आवश्यक है?

क्या आपको अच्छा लगेगा अगर आपकी विद्यालय की पुस्तकें भी ऐसे ही रोचक तरीके से पढ़ाई जाएँ? चलिए प्रयास करते हैं। अपनी अंग्रेजी या सामाजिक विज्ञान की पुस्तक से कोई भी कहानी लें और उसे चित्रों के साथ सुनने का प्रयास करें। वास्तव में, इससे आपको पाठ याद रखने में मदद मिलेगी।

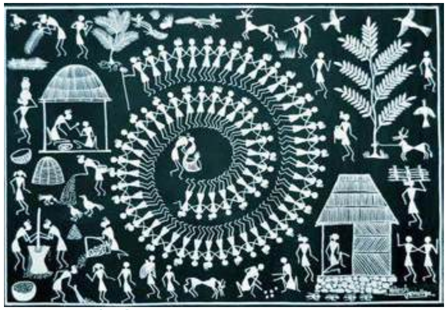

कपड़ा पेंटिंग - बस्तर (छत्तीसगढ़) के जनजीवन पर आधारित

आइए, घेरा बनाएँ

1. अगर आपको नई कथा वाचन शैली का निर्माण करना हो तो आप उसमें कौन-कौन सी चीजें जोड़ेंगे? इसे और रोचक कैसे बनाएँगे?
2. अगर आप सरकार में होते तो इन लुप्त होती कला शैलियों को लुप्त होने से बचाने के लिए कौन-कौन से दो कदम उठाते?

छत्तीसगढ़ की लोक गाथा - भरथरी

सुरूज बाई खांडे

सुरूज बाई खांडेजी का जन्म 12 जून 1949 को बिलासपुर जिले के एक गांव पौंसरी, तहसील-बिल्हा में हुआ था। उन्होंने 7 साल की उम्र से ही भरथरी गाना शुरू कर दिया था। छत्तीसगढ़ की सुप्रसिद्ध लोकगाथा 'भरथरी' को इन्होंने अपने गायन के माध्यम से विश्व में एक अलग ही पहचान दिलाई। सुरूजबाई खांडेजी को मरणोपरांत 2021 में पद्मश्री सम्मान मिला। देवी अहिल्या सम्मान, रामचंद्र देशमुख सम्मान , देवदास बंजारे सम्मान आदि के साथ ही उन्हें अनेकों सम्मान मिले। 69 वर्ष की आयु में 10 मार्च 2018 को उनका निधन हुआ।

भरथरी कथा, जिसे भर्तृहरि कथा भी कहा जाता है, एक प्रसिद्ध लोकगाथा है जो राजा भरथरी और उनकी रानी पिंगला के इर्द-गिर्द घूमती है। यह कथा नाथ पंथ के साथ भी जुड़ी हुई है और राजा भरथरी को गोरखनाथ का शिष्य बताया जाता है। यह कथा बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान जैसे कई राज्यों में लोकप्रिय है।

शुरुआत में भरथरी गायन एक ही कलाकार द्वारा किया जाता था। वह खंझेरी बजाकर गाता था। बाद में लोकवाद्यों के साथ भरथरी गायन होने लगा। पहले भरथरी गायन चिकारा बजाकर करते थे। अब वाद्यों में तबला, हारमोनियम, मंजीरा के साथ- साथ बेंजो का प्रयोग होने लगा। ये बहुत स्वाभाविक है कि गीत के साथ नृत्य भी शामिल हो गया। न सिर्फ छत्तीसगढ़ में बल्कि पूरे हिन्दी भाषी क्षेत्रों में इसे बहुत प्रेम से गाया और बजाया जाता है। लोक गाथा एक जगह से दूसरी जगह यात्रा करती है और जहाँ पहुँचती है वहाँ की परम्पराओं से प्रभावित होकर वहीं की बन जाती है। छत्तीसगढ़ की भरथरी लोकगाथा में हम देखते हैं कि "छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति" का रंग बिखरा हुआ है।

भरथरी गीत-

घोड़ा रोवय घोड़सारे म, घोड़सारे म ओ।

हाथी रोवय हाथी सार म,

मोर रानी एवो, महलों में रोवय।

मोर राजा रोवय दरबारे वो दरबारे,

भाई ये दे जी...

बोंये मा सोन जामे नहीं , मोती लूरै न डार।

हीरा तन बार-बार न मिले, खोज मिलै न उधार ।

भाई ऐ देजी...

बुद्धि के खेल

कथा वाचक बनिए।

- ❖ ये पारंपरिक चित्रकला की कुछ तस्वीरें हैं।
- ❖ इन्हें आपस में जोड़कर स्वयं की एक कहानी बनाएँ। इसे जितना संभव हो सके उतना अनोखा बनाएँ। आप चित्रों का क्रम बदल भी सकते हैं।
- ❖ इसका वर्णन करने का एक अनोखा तरीका सोचिए, जैसे— प्रत्येक पंक्ति को गाने की लय में बोलिए या कुछ नृत्य की मुद्राएँ जोड़ दीजिए या उस परिस्थिति के अनुसार कोई गीत गाइए।
- ❖ आप अपनी कहानी लिखने के लिए तुकांत शब्दों का भी प्रयोग कर सकते हैं। इससे कहानी सुनाना मनोरंजक हो जाएगा।
- ❖ इसे कक्षा के सामने प्रस्तुत कीजिए और एक-दूसरे से प्रतिक्रिया साझा कीजिए।

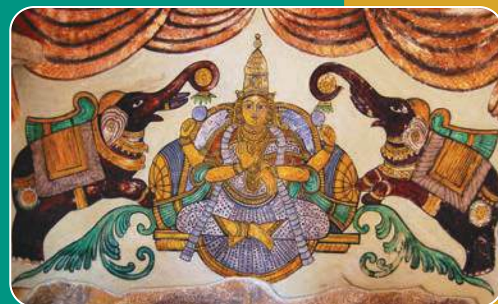
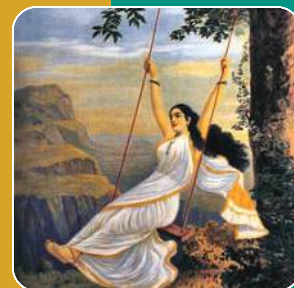
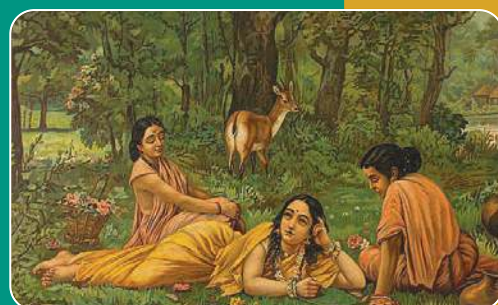

मुख्य बातें — जीवन के लिए सीख

कहानी सुनाना — परंपराओं का खजाना

आप सोच रहे होंगे कि हमें इन कथा वाचन परंपराओं को बचाने की आवश्यकता क्यों है? ये मौखिक परंपराएँ हैं। कहानियाँ पीढ़ी दर पीढ़ी बोलचाल के माध्यम से आगे बढ़ती हैं। हमारे देश के सब लोग रामायण और महाभारत के बारे में इन मौखिक परंपराओं के कारण ही जानते हैं। भले ही कोई व्यक्ति पढ़ या लिख नहीं सकता, इन कहानियों के माध्यम से वह भी जीवन के मूल्य सीख सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये हमारी संस्कृति और परंपराओं को जीवित रखती हैं। जहाँ पुस्तक या कंप्यूटर डेटा कुछ ही सेकंड में नष्ट हो सकते हैं, वहीं मौखिक परंपराओं की कहानियाँ कभी नष्ट नहीं हो सकती हैं। इसलिए आगे बढ़िए, किसी कथा वाचन शैली को सीखिए और इस परंपरा को आगे बढ़ाइए।

आकलन

अध्याय 4 — भारतीय कथा वाचन परंपरा की कहानी				
दक्षताएँ सी.-4.1 — रंगमंच के विभिन्न स्थानीय एवं क्षेत्रीय नाट्य रूपों से परिचित होने का प्रदर्शन करता है। सी.-4.2 — कुछ ऐसे रंगमंच के कलाकारों और साधकों के जीवन एवं कार्यों का वर्णन करता है, जो उनके प्रदेश तथा भारत भर में हैं।				
सी.जी.	**सी.**	**सीखने के प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
4	4.1	कथा वाचन को एक प्रदर्शन कला के रूप में समझता है जो संगीत, नृत्य और कला को एकीकृत करता है।		
4	4.1	विलुप्त हो रहे कला रूपों को संरक्षित करने और विकसित करने के लिए पहल के बारे में सोचने का प्रयास करता है।		
4	4.2	अपने अनुभव से कथावाचकों की पहचान करना और उनकी प्रदर्शन शैली का वर्णन करना।		
4	4.2	समकालीन कथा वाचन की तुलना पुराने प्रारूपों से करता है।		

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

संकलनात्मक आकलन

	आकलन के लिए गतिविधि (उदाहरण)	आकलन के लिए मापदंड
व्यक्तिगत	❖ कोई भी भाव चुनें और उसकी तीव्रता के तीन या चार स्तर सूचीबद्ध करें। ❖ इन सभी को एक कहानी में सम्मिलित करें (अन्य भावों को भी सम्मिलित कर सकते हैं)। ❖ ऐसा आलेख लिखें जिसमें दृश्य एवं संवाद सम्मिलित हों। ❖ संगीत, नृत्य या चित्रों को सम्मिलित करके नाटकीय तरीके से आलेख का वर्णन करें।	❖ कई तकनीकों तथा कौशलों को संयोजित करने की क्षमता। ❖ विचारों में रचनात्मकता और स्पष्टता।
समूह	❖ सामाजिक विज्ञान या अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक से कोई कहानी चुनें। ❖ पात्रों के अनुसार उसे दृश्यों में विभाजित करके आलेख लिखें। ❖ तीन मिनट की एक मूकाभिनय प्रदर्शन की प्रस्तुति दें।	❖ समूह में निर्णय लेना। ❖ समूह के सदस्यों के विभिन्न विचारों को सम्मिलित करना। ❖ रचनात्मकता, सहयोग और सहकारिता।

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

अवलोकन

संगीत

नकारं प्राणनामानं दकारमनलं विदुः।
जातः प्राणाग्निसंयोगात्तेन नादोऽभिधीयते ॥

— संगीत रत्नाकर, शारंगदेव

अर्थ— नाद (संगीतमय ध्वनि) शब्दों में 'ना' प्राण (जो जीवन शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है) और 'द' (जो अग्नि का प्रतिनिधित्व करता है) के संयोजन से निर्मित होता है।

नमस्ते संगीतकारो! आइए, संगीत सीखने और बनाने के एक रोमांचकवर्ष का आरंभ करें।

कुछ सामान्य संगीत शब्दावली

आधार श्रुति या आधार स्वर

वह आधार स्वर जिसके अनुसार संगीत बजाया या गाया जाता है।

स्वर

संगीत में एक स्वर, भारतीय संगीत में सात स्वर हैं—
सा रे ग म प ध नि।

राग

स्वरों का एक समूह जो एक साथ मिलकर निश्चित नियमों के अनुसार राग बनाता है।

ताल

एक लय चक्र, जिसमें कई मात्राएँ सम्मिलित होती हैं।

लय

गति या लय धीमी से तीव्र तक भिन्न हो सकती है।

आरोह या आरोहण

किसी राग का बढ़ता हुआ क्रम।

अवरोह या अवरोहण

राग का घटता हुआ क्रम।

सरगम

स्वरों का एक क्रम।

शिक्षकों के लिए

संगीत की दुनिया सुर, लय और शब्द से भरी हुई है। इन तत्वों को गीतात्मक रचनाओं को व्यक्त करने के लिए बुना जाता है, जो प्रेम, भक्ति, देशभक्ति, शिष्टता, प्रकृति की प्रशंसा, दुःख आदि के असंख्य भावों को व्यक्त करते हैं। संगीत असीम है और सभी उम्र के लोगों के बीच लोकप्रिय है। विद्यालय में बच्चों की भीड़ और कोलाहल भरी सभा अचानक शांतिपूर्ण विधि से संगीत की अभिव्यक्ति के माधुर्य और सामंजस्य से गूँज उठती है। संगीत पाठ्यक्रम की आकांक्षा है कि आप और विद्यार्थी संगीत की यात्रा का पूरी तरह से आनंद लें, जिसमें अपार संभावनाओं को प्रकट करने की क्षमता है। शिक्षकों को विद्यार्थियों के बीच संगीत के प्रति आजीवन प्रेम पैदा करने का लक्ष्य रखना चाहिए, प्रशंसा को बढ़ावा देना चाहिए, जो कक्षा से परे बढ़ेगी। साथ ही, कक्षा 7 के पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को इस लोकप्रिय और आकर्षक कला रूप से जुड़े कई पहलुओं को उजागर करने के लिए गहरी अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में सक्षम बनाना है।

यह खंड शिक्षार्थियों को संगीत बनाने के विभिन्न चरणों से अवगत कराने के लिए आरंभ किया गया है। संगीत में कई परतें होती हैं, जिसमें स्वर, सुर, गति, संगीत वाद्ययंत्रों के भागों, वाद्यवृंद और कई अन्य तत्वों में संयम के माध्यम से अभिव्यक्ति के विभिन्न रूप सम्मिलित होते हैं। गीतों की आलोचनात्मक समीक्षा किसी भी रचना को समझने में सहायक बनेगी।

विभिन्न अवसरों पर गायी गई सभी रचनाएँ महत्वपूर्ण होती हैं। संगीत समाज में कई तरह के संदेशों का प्रसार करने का एक संसाधन हो सकता है, जिसमें विभिन्न व्यवसायों और कौशलों का महत्व, सामाजिक सुधार, स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे आदि सम्मिलित हैं। यह नृत्य और अंग संचालन, रंगमंच में पार्श्व संगीत, फिल्म निर्माण आदि से संबंधित है। 'संगीत' का भाग शिक्षार्थियों को इन पहलुओं को जानने में सहायता करेगा।

पारंपरिक, लोक और शास्त्रीय संगीत अभ्यास के कुछ बुनियादी कौशल के उदाहरण दिए गए हैं, जबकि शिक्षकों को पाठ्यक्रम और बुनियादी दिशानिर्देशों का पालन करते हुए, उन्हें अपने तरीके से विषयों को पेश करने की स्वतंत्रता है। साथ ही, विद्यार्थियों को उनके पास उपलब्ध स्रोतों से शोध करने और अधिक जानकारी प्राप्त करने दें।

दैनिक जीवन में संगीत की अलग-अलग विधाओं का अनुभव करने के कई अवसर हैं। उत्साहपूर्ण भागीदारी से उन्हें कला के इस रूप से सच्चा प्यार करने और भारतीय संदर्भ में विविधता की खोज करने में सहायता मिलेगी। इस पुस्तक का उद्देश्य विद्यार्थियों को संगीत की सराहना करने के लिए प्रेरित करना है।

- विद्यार्थियों को संगीत के प्रति जागरूक करने के लिए उन्हें लाइव (प्रदर्शन) संगीत प्रदर्शन दिखाने ले जाने पर विचार करें।
- किसी संगीतकार को अपने विद्यालय में आमंत्रित करें और उसके साथ बातचीत करें।

प्रत्येक अध्याय के अंत में रचनात्मक आकलन के लिए दिशानिर्देश दिए गए हैं, जिन्हें मुख्य रूप से कक्षा में अवलोकन के माध्यम से ध्यानपूर्वक और व्यस्त तरीके से आयोजित किया जाना चाहिए। संगीत क भाग के अंत में संकलनात्मक आकलन के लिए सुझाव दिए गए हैं। इस चरण के लिए आवश्यक योग्यताएँ नीचे दी गई हैं। आकलन का उद्देश्य विशेष रूप से यह देखना है कि क्या विद्यार्थी बताई गई योग्यताओं तक पहुँचने में सक्षम हैं अथवा क्या अधिक सहायता की आवश्यकता है। बच्चों को आगे विकसित होने में सहायता करने के लिए गुणात्मक प्रतिक्रिया दें।

सी.जी.-1 विभिन्न कला रूपों के माध्यम से स्वयं का अवलोकन और अभिव्यक्त करने के लिए स्पष्टता को विकसित करता है।

सी.-1.1 विभिन्न प्रकार की सांगीतिक गतिविधियों के माध्यम से अपने व्यक्तिगत और दैनिक जीवन के अनुभवों को आत्मविश्वास के साथ व्यक्त करता है।

सी.-1.2 संगीत परंपराओं को सहयोगात्मक रूप से विकसित करने की प्रक्रिया में लचीलापन प्रदर्शित करता है।

सी.जी.-2 कला के माध्यम से वैकल्पिक अवधारणाओं का पता लगाने के लिए अपनी कल्पना और रचनात्मकता का प्रयोग करता है।

सी.-2.1 ऐसे गीत और संगीत रचनाएँ बनाना और प्रस्तुत करना, जो उनके आस-पास देखी जाने वाली रूढ़ियों (जैसे— जेंडर भूमिकाएँ) को चुनौती देती हों।

सी.-2.2 संगीत के तत्वों (गीत, राग, लय, मात्रा, गति और पैटर्न) को व्यक्तिगत अनुभवों, भावों एवं कल्पनाओं से जोड़ना।

सी.जी.-3 कलात्मक तत्वों, प्रक्रियाओं और तकनीकों को समझना है और उनका प्रयोग करना।

सी.-3.1 मंच शिष्टाचार एवं संगीत वाद्ययंत्रों की देखभाल का प्रदर्शन करना और संगीत में संसाधनों एवं तकनीकों का उपयोग करते समय सूचित विकल्प बनाना।

सी.-3.2 योजना चरण से लेकर अंतिम प्रदर्शन तक संगीत अभिव्यक्ति के विचारों और तरीकों को परिष्कृत करता है और पूरी प्रक्रिया की समीक्षा करता है।

सी.जी.-4 क्षेत्रीय कलाओं और सांस्कृतिक परंपराओं में सौंदर्य संबंधी संवेदनशीलता की एक श्रृंखला से स्वयं को परिचित कराता है।

सी.-4.1 संगीत के विभिन्न स्थानीय और क्षेत्रीय रूपों से परिचित होना दर्शाता है।

सी.-4.2 अपने क्षेत्र और पूरे भारत में कुछ स्थानीय संगीतकारों और कलाकारों के जीवन और कार्य का वर्णन करता है।

5 संगीत बनाना

0780CH05

आइए, हम सब मिलकर कोई लोकप्रिय गीत गाना प्रारंभ करें। यहाँ कुछ सुझाव दिए गए हैं—

1. *बरसो रे मेघा मेघा*
2. *भारत हमको जान से प्यारा है*
3. *आ चलके तुझे मैं लेके चलूँ*
4. *जिंदगी एक सफर है सुहाना*
5. *ओ पालन हारे निर्गुण और न्यारे*

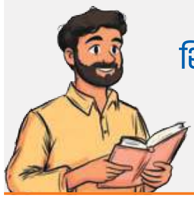

शिक्षकों के लिए निर्देश— उपरोक्त फिल्मी गीत कुछ सुझाव हैं। यद्यपि, आप इस गतिविधि के लिए अन्य उपयुक्त और आयु-उपयुक्त गीत चुनने के लिए स्वतंत्र हैं।

संगीत बनाने में कई तत्व योगदान करते हैं। जब आप संगीत सुनते हैं तो सोचें कि यह कैसे बनाया गया है। इन पर ध्यान दीजिए—

- गायन
- संगीत वाद्ययंत्र
- मेलोडी
- संगति
- गीत के शब्द

किसी रचना में आप जितनी भी अलग-अलग तरह की ध्वनि सुनते हैं, उन्हें **परत** कहते हैं। क्या आप भिन्न-भिन्न ड्रम बीट्स और भिन्न-भिन्न वाद्ययंत्रों की ध्वनियाँ सुन सकते हैं? ये सभी परतें (लेयर्स) हैं और गाने में इनकी अपनी भूमिका होती है।

- वे कौन-सी परतें हैं जिन्हें आप सुन सकते हैं?
- क्या आपने देखा है कि संगीत की विभिन्न शैलियों में विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ और वाद्य होते हैं?
  - किसी फिल्मी गीत में आप कौन-सी परतें सुनते हैं?
  - एक भक्ति गीत में आप कौन-सी परतें सुनते हैं?

गतिविधि 5.1 — गीतों की खोज

चार समूह बनाएँ और प्रत्येक समूह को सांगीतिक नाम दें। विभिन्न शैलियों के तीन भिन्न-भिन्न गीत चुनें, जिन्हें आप सुनना पसंद करते हैं। उनमें से प्रत्येक के लिए यह टेम्पलेट भरें और अपने सहपाठियों के साथ समानताओं और विभिन्नताओं पर चर्चा करें।

गीत का शीर्षक — ------------------------------------
रिलीज का साल — ------------------------------------
विषय — ------------------------------------
फॉर्म/शैली — ------------------------------------
कलाकार — ------------------------------------
संगीतकार — ------------------------------------
गीतकार — ------------------------------------

संगीत के तत्व — स्वर, ध्वनि, वाद्ययंत्र और गति

- क्या यह गीत पुरुष स्वर में गाया गया है या महिला स्वर में या फिर यह युगल गीत है?
- आप कौन-से वाद्ययंत्र सुन सकते हैं?
- इस गीत की गति क्या है? क्या यह तेज है या धीमी? क्या गीत के दौरान इसमें परिवर्तन होता है?

- क्या यह अधिकतर ऊँची, मध्यम या नीची ध्वनि में होता है? क्या गीत के दौरान इसमें परिवर्तन होता है?

मन:स्थिति, भाव (रस) एवं विषय

- गीत का मनोभाव क्या है?
- आपको इस गीत में क्या पसंद आया?
- क्या आप गीत का मनोभाव बदलना चाहेंगे? कैसे?
- क्या आयोजन भारी है (बहुत सारे वाद्ययंत्रों और ताल के साथ) या हल्का?
- आप एक ही समय में कितनी परतें और कितनी अलग-अलग पंक्तियाँ सुन सकते हैं?

गतिविधि 5.2 — अपनी सटीकता मापें

- वह गीत गाएँ जिसमें आप सहज हों।
- यदि आपके पास कराओके ट्रैक है तो आप उसका उपयोग कर सकते हैं।
- अपना गायन रिकॉर्ड करिए और सुनिए। देखिए कि आप सुर और लय में कहाँ हैं और कहाँ नहीं।
- अपने संस्करण की तुलना मूल ऑडियो से कीजिए और सुधार के क्षेत्रों पर ध्यान दीजिए।
- किसी अन्य व्यक्ति (जैसे— सहपाठी, मित्र, शिक्षक या परिवार के सदस्य) को गीत सुनाएँ एवं उससे प्रतिक्रिया प्राप्त करें।

अपने प्रदर्शन को उत्तम बनाने के लिए इस जानकारी का उपयोग कीजिए।

शिक्षकों के लिए निर्देश— यह गतिविधि व्यक्तिगत या सामूहिक गतिविधि के रूप में की जा सकती है। विद्यार्थी अपनी ध्वनि को रिकॉर्ड कर सकते हैं या तो स्वयं का आकलन कर सकते हैं या फिर किसी सहकर्मी से आकलन की माँग कर सकते हैं।

साथ मिलकर संगीत बनाना

हार्मनी और कैनन

जब आप कई ध्वनियों को एक साथ गाते हुए सुनते हैं, जो विभिन्न सुरों का एक सुखद मिश्रण बनाती हैं तो इसे गायन में **हार्मनी** कहा जाता है। गायन या वादन में हार्मनी जैसी विशेषता प्रचलित है।

हार्मनी के गायन की विधि को समझने के लिए कैनन की पद्धति सहायक है। कैनन वह होता है जिसमें गायकों के विभिन्न समूह एक ही धुन गाते हैं, परंतु भिन्न-भिन्न समय पर आरंभ करते हैं। कैनन के रूप में लिखे गए गाने इस प्रकार से लिखे जाते हैं कि एक ही समय में आप जो अलग-अलग सुर सुनते हैं, वे एक साथ अच्छे लगते हैं।

आप कोई भी देशभक्ति गीत, लोक गीत चुन सकते हैं, उदाहरण के लिए—

- कुट्टनादन पुंजयिले कोचू पेने कुयिलाले (आपने कक्षा 6 में सीखा था)
- हम होंगे कामयाब (अपने कक्षा तीसरी में सीखा था)

सबसे पहले, एक साथ गाना गाएँ। समय का ध्यान रखें, ताकि आप सब एक साथ गाएँ। फिर दो समूहों में विभाजित हो जाएँ।

समूह 1— *हम होंगे कामयाब (2)*

समूह 2— *हम होंगे कामयाब एक दिन*

समूह 1— *हम होंगे कामयाब एक दिन*

समूह 2— *हम होंगे कामयाब (2)*

समूह 1 पहली पंक्ति गाता है और दूसरी पंक्ति तक निरंतर रखता है।

समूह 1 जब तीसरी पंक्ति गाना आरंभ करता है तो समूह 2 पहली पंक्ति गाना प्रारंभ करता है। गीत को कई बार दोहराएँ जिससे सभी सुरों को सुन सकें।

यदि यह सरल लगता है तो चार समूह बनाने का प्रयास करें। समूह 1 पहली पंक्ति से आरंभ करता है और जब वे दूसरी पंक्ति गाते हैं तो समूह 2 पहली पंक्ति से प्रारंभ करता है और इसी तरह आगे बढ़ता है। जब सभी एक साथ गाते हैं तो कैसा लगता है?

संगीत — एक सामूहिक कार्य

संगीत एवं मंत्र उच्चारण कई सदियों से प्रचलित है। आइए, वैदिक युग में पदार्पण करके इसे समझें। यह युग भक्ति और संगीत से ओत-प्रोत था। क्षितिज पर जब सूर्य की पहली किरण का आभास होता था ऋत्विज जो चारों वेदों की ऋचाओं को गाते थे, यजमान और उनकी पत्नी यज्ञशाला में सम्मिलित होते थे। श्रौत यज्ञ क्रिया करते थे।

इन ऋत्विजों के समूह में सामवेद में विशेष दक्षता प्राप्त चार ऋत्विजों का एक विशिष्ट उप-समूह होता था। इनके प्रमुख सामवेदी ऋत्विज को '*उद्गात*' कहा जाता था और सभी मिलकर '*उद्गातृगण*' कहलाते थे। ये ऋत्विज सामवेद के साथ-साथ भक्ति संगीत और पारंपरिक वाद्ययंत्र बजाने में भी निपुण थे। वे सामवेद संहिता के मंत्रों को सुर में पिरोकर गाते थे, जो वैदिक अनुष्ठानों की नींव मानी जाती थी।

यज्ञशाला में पूर्व दिशा (जो उगते सूर्य की दिशा है और जिसे दिव्यता व नवीकरण का प्रतीक समझा जाता है) की ओर मुख करके सामवेदी ऋत्विज अपनी-अपनी विशेष भूमिकाओं में विभाजित होते थे। प्रत्येक भूमिका ने सामवेद के मंत्रों के गान '*सामगान*' की जटिल रचना और सुरों से जुड़ी परंपरा को सुंदर और सुसंगठित बनाने में अपना योगदान दिया। '*सामगान*' की रचना सामान्यतः पाँच भागों में बँटी होती थी, जिन्हें भक्ति कहा गया है —

1. **प्रस्ताव** — गान की भूमिका, जिसका आरंभ प्रस्तोता द्वारा किया जाता था।
2. **उद्गीथ** — सामगान का मुख्य भाग, जिसे प्रमुख ऋत्विज उद्गाता द्वारा गया जाता था।
3. **प्रतिहार** — यह भाग उद्गीथ की अंतिम पंक्ति से आगे प्रतिहार्ता गाता था।
4. **उपद्रव** — यह एक संगीतमय अंतराल होता था, जिसमें वाद्ययंत्र और लय प्रस्तुत की जाती थीं और इसे फिर उद्गाता ही गाता था।
5. **निधन** — समापन का भाग, जिसे सभी ऋत्विज मिलकर एक स्वर में गाते थे, जिससे एक गहरा और एकजुट अंत होता था।

इसके अतिरिक्त, चौथे सामवेदी ऋत्विज सुब्रह्मण्य की एक विशेष भूमिका होती थी। वे सुब्रह्मण्याह्वान का उच्चारण करते थे। इसी तरह, यजमान-पत्नी की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। वे सामगान के दौरान *शततंत्री वीणा* बजाती थीं और सामगान के कुछ आवश्यक अंशों को भी गाती थीं।

इसके अतिरिक्त, चौथे सामवेदी ऋत्विज सुब्रह्मण्य की एक विशेष भूमिका होती थी। वे सुब्रह्मण्याह्वान का उच्चारण करते थे। इसी तरह, यजमान-पत्नी की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। वे सामगान के दौरान शततंत्री वीणा बजाती थीं और सामगान के कुछ आवश्यक अंशों को भी गाती थीं।

गतिविधि 5.3 — समूह में श्लोक का जाप करें

ॐ असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्मा अमृतं गमय । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

मुझे असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर,
मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

महत्वपूर्ण अवधारणाएँ—

परतें, सामंजस्य, कैनन, जप, ऋत्विज, उपगायक

आकलन

अध्याय 5 — संगीत बनाना				
सी.जी.	**सी.**	**सीखने के प्रतिफल**	**अध्यापक**	**स्वयं**
1	1.1	स्पष्ट उच्चारण और समन्वय के साथ श्लोकों के जाप में भाग लेता है।		
1	1.2	कैनन की अवधारणा को समझता है और एक सरल कैनन गायन में भाग लेने में सक्षम है।		
2	2.2	अपनी पसंद के गीत का विश्लेषण करने और उसके संगीत तत्वों की पहचान करने में सक्षम है।		

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

6 संगीत, भाव और रचनात्मकता

0780CH06

संगीत विभिन्न भावों (रसों) को व्यक्त करता है। जब आप गाते हैं या संगीत बजाते हैं तो आप एक भावना या भाव व्यक्त कर रहे होते हैं। भारतीय प्रदर्शन कलाओं में, भावों को ही रस कहा जाता है। यह भाव कलाकारों और दर्शक, दोनों द्वारा एक साथ अनुभव किया जाता है। यह भाव ही है जो कलाकारों और दर्शकों को जोड़ता है। इसलिए, सदैव उत्साह और भाव के साथ गीत गाना स्मरण रखें।

आइए, हम संगीत के विभिन्न रूपों और उनके द्वारा अभिव्यक्त रस को सीखने की इस यात्रा को निरंतर रखें।

नंदिकेश्वर द्वारा लिखित *अभिनय दर्पण* में कहा गया है, 'सभा कल्पतरु भाति' जिसका अर्थ है, दर्शक एक वृक्ष की तरह है जो आपकी आंतरिक इच्छाओं को पूरा करता है। यद्यपि यह नृत्य के संदर्भ में लिखा गया है, परंतु यह सभी कला रूपों पर लागू होता है।

भक्ति संगीत

लोग विभिन्न तरह से प्रार्थना करते हैं। संगीत लोगों को भक्ति की भावना व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। लोग प्रायः समूहों में एक साथ आते हैं एवं विभिन्न प्रकार के शब्दों, धुनों और लय का उपयोग करके गायन की विभिन्न शैलियों में भक्ति गीत गाते हैं। आइए, समझे कि जब हम कोई भक्ति गीत गाते हैं तो शब्द, धुन एवं लय कैसे एक साथ आते हैं।

यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

शबद— शबद सिख धर्म की संगीतमय प्रार्थनाएँ हैं और गुरुद्वारे में गाई जाती हैं। आइए, हम यह गीत सीखें।

कोई बोले राम राम,कोई खुदाए।
कोई सेवै गुसइयाँ कोई अल्लाहए।।
कारण करन करीम।
कृपा धर रहीम ।।1।।

कोई नावे तीर्थ, कोई हज जाए।
कोई करे पूजा, कोई सिर नवाए ।।2।।

कोई पढ़ै बैद कोई कतैब।।
कोई औढ़े नील, कोई सुपैद ।।3।।

कोई कहै तुरक, कोई कहे हिंदू ,
कोई बांचै बिस्त, कोई सीर बिंदु ।।4।।

कहै नानक जिन हुकम पछाता
प्रभु साहिब का तिन भेद न जाता ।।5।।

गुरुद्वारे में चल रहा शबद कीर्तन

अर्थ

हम विभिन्न नामों से प्रार्थना करते हैं, जैसे— राम, गुरु, अल्लाह आदि, इसका उद्देश्य हमें इतनी सुंदर दुनिया देने के लिए सर्वशक्तिमान को धन्यवाद देना है।

जस गीत

थैया- थैया नाचे मोर अंगना,
 लंगुरवा तोर अजब बने हैं पलना।
काहेन के मैय्या तोरे पलना बने हे,
काहेन के लागे हावय डोरवा।
चंदन काठ के तोरे पलना बने हे,
 रेशम लागे हावय डोरवा।
कोने ह झूले मैय्या कोने झुलावे,
कोन ह खींचे रेशम डोरवा।
बड़े माई झूले मैय्या छोटे माई झुलावे,
लंगुरे ह खींचे रेशम डोरवा।

अर्थ

मातृशक्ति की आराधना है | जो कि नवरात्र के समय जागरण करते हुए समूह में गाया जाता है, इसमें मैया के दिव्य स्वरूप का वर्णन है जो कि चंदन के पालने में विराजमान है।

उर्दू गीत

यह उर्दू में एक भक्ति और देशभक्ति गीत है।

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी

ज़िंदगी शम्मा की सूरत हो खुदाया मेरी
लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी
हो मेरे दम से यूँ ही मेरे वतन की ज़ीनत

जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत
ज़िंदगी हो मेरे परवाने की सूरत या रब
इल्म की शम्मा से हो मुझको मुहब्बत या रब

हो मेरा काम गरीबों की हिमायत करना
दर्दमंदों से ज़ईफों से मुहब्बत करना

मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको
नेक जो रहा हो उस राह पे चलाना मुझको

अर्थ

मैं अपने होठों पर शब्दों के साथ हृदय में एक कामना करता हूँ कि जीवन सभी के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश की तरह चमकता रहे। मेरा काम ऐसा हो कि कुछ लोगों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने की सामर्थ्य रख सके, जैसे फूल प्रकृति में सुंदरता लाते हैं। मेरे कर्तव्य दूसरों के जीवन को उत्तम बनाने में सक्षम हों। जीवन को देखभाल और करुणा से चिह्नित करूँ और मेरा उद्देश्य मेरे साथियों को आशा की किरण प्रदान करना हो।

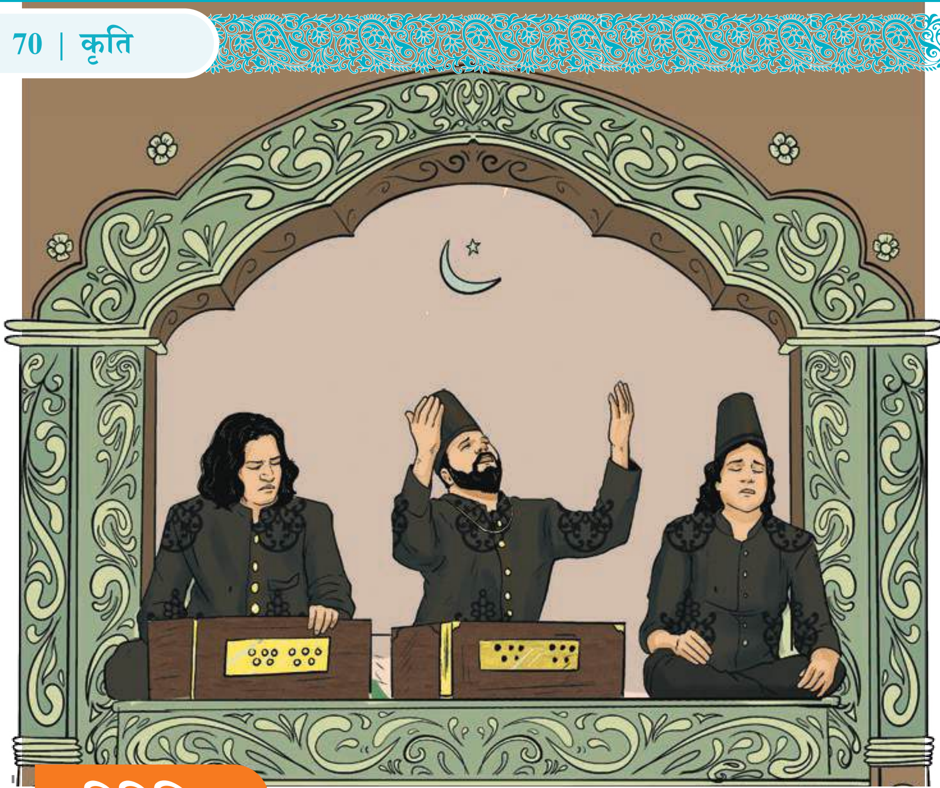

गतिविधि 6.1

आपने जो भक्ति गीत सीखा है, उसके बारे में विचार कीजिए—

- आपने जो गीत गाया है उसमें क्या भाव है?
- यह किस भाषा में गाया जाता है?
- गीत के महत्वपूर्ण शब्दों को नोट कीजिए और उनका अर्थ समझिए। यह किसी भाषा में अपनी शब्दावली बढ़ाने की एक उत्तम विधि है।

शिक्षकों के लिए निर्देश— विद्यार्थी एक या दोनों गीत सीख सकते हैं या फिर अपनी संस्कृति अथवा आस्था से भक्ति गीत चुनिए।

रचनात्मकता एवं कथा-कथन

गतिविधि 6.2 — संगीत के माध्यम से चित्रकारी को समझना

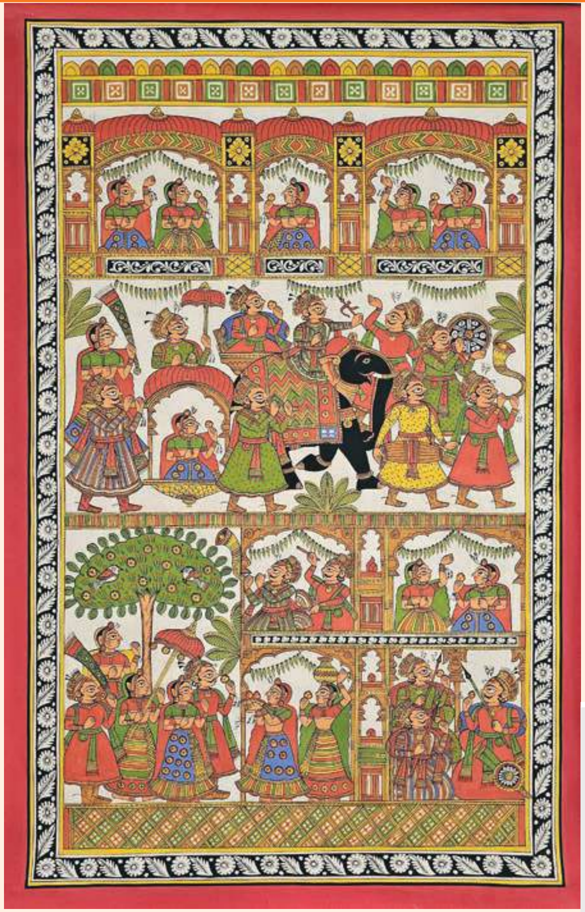

प्रकाश जोशी द्वारा फड़ चित्रकला

अपनी बाईं ओर के चित्र को देखिए—

- इसे ध्यान से देखिए। इस चित्रकारी की शैली के आधार पर क्या आप पहचान सकते हैं कि यह किस राज्य या क्षेत्र की है?
- दो पंक्तियाँ बनाएँ जो एक-एक करके प्लेटों का वर्णन करें। यह आपकी मूल भाषा में हो सकता है। पंक्तियाँ लयबद्ध होनी चाहिए, गाना गाने में सरलता होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, "देखो देखो सखी द्वार पे सज संवार के कौन खड़ा"
- इसे समूह में गाएँ और अगली प्लेट का अवलोकन करें। दृश्य छवियों के अनुसार पंक्तियाँ बनाना निरंतर रखें और पूरी रचना गाएँ।
- आप समूहों में काम कर सकते हैं, जैसे-जैसे आप किसी विशेष धुन और लय में पंक्तियाँ बनाते और गाते हैं, आपको यह अभ्यास रोचक लगेगा। पूरी प्रक्रिया को रिकॉर्ड करें एवं उसका दस्तावेजीकरण करें, तब आप समझ पाएँगे कि कैसे शब्द और संगीत मिलकर भावों को जगाते हैं।

शिक्षकों के लिए निर्देश—

- यह चित्रकारी एक संदर्भ के रूप में उपलब्ध कराई गई है।
- आप अपनी पसंद या अपने क्षेत्र से कोई भी चित्रकला का चयन कर सकते हैं।
- इस गतिविधि में चित्रकला के विषय को जानने के लिए संगीत का उपयोग करें।
- विभिन्न संग्रहालयों में प्रदर्शित कुछ रागमाला चित्रकलाओं को देखने का प्रयास करें।

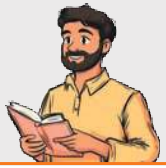

गतिविधि 6.3 — संगीतमय कथा

- अपनी सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक के इतिहास भाग से कोई विषय चुनिए। यहाँ कुछ विकल्प दिए गए हैं—
  - चंद्रगुप्त मौर्य एवं कौटिल्य।
  - प्रभावती गुप्ता।
  - चंद्रगुप्त द्वितीय, विक्रमादित्य एवं उनके नवरत्न।
  - पृथ्वीराज चौहान।
- घटना का वर्णन करने वाला एक अनुच्छेद लिखिए।
- घटना को चित्रित करने के लिए एक चित्र बनाइए।
- अपनी पसंद की किसी भी भाषा का उपयोग करते हुए कुछ वाक्यों में दृश्य का वर्णन कीजिए।
- अपनी पसंद की धुन में अपनी लिखी हुई पंक्तियाँ गाएँ। अद्‌भुत! इसी प्रकार संगीतिक एवं संगीतमय कथा रची जाती है।
- भारत में संगीतमय कथा कहने के बहुत-से ऐसे रूप हैं जिनमें पोवाड़ा, कावड़ कथा, आल्हा-ऊदल और अन्य सम्मिलित हैं। आप इनके विषय में और अधिक शोध पढ़ सकते हैं।
- इसे उन अन्य कला रूपों से जोड़िए, जिन्हें आप सीख रहे हैं एवं अपने अनुभव साझा कीजिए।

नाता पुंग बजाता एक कलाकार

शिक्षकों के लिए निर्देश— कला एकीकरण शैक्षणिक दृष्टिकोण से एक अंतर-पाठ्यचर्या है जो विषयों में अवधारणाओं को सीखने के आधार के रूप में कला और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं और रूपों का उपयोग करता है। अनुभवात्मक सीखने पर बल देने के एक भाग के रूप में कला-एकीकृत शिक्षा को न केवल आनंदमय कक्षाएँ बनाने के लिए, अपितु प्रत्येक स्तर पर शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में भारतीय कला और संस्कृति के एकीकरण के माध्यम से भारतीय लोकाचार को आत्मसात करने के लिए कक्षा के लेन-देन में सम्मिलित किया जाएगा। यह कला-एकीकृत दृष्टिकोण शिक्षा और संस्कृति के बीच संबंधों को सशक्त करेगा (एन.ई.पी. 2020, 4.7)।

उपरोक्त निर्देश के अनुसार, इस सत्र की योजना बनाइए। इसे इतिहास के पाठ के साथ सहयोग करने दीजिए, जिससे विद्यार्थी देश में प्रचलित कलात्मक परंपराओं को आत्मसात करें और इसे अन्य पाठ्यचर्या क्षेत्रों से जोड़ सकें।

गतिविधि 6.4 — सक्रिय श्रवण

सक्रिय श्रवण एक शब्द है जिसका उपयोग तब किया जाता है जब आप किसी चीज को ध्यान से सुनते हैं और उसे समझने का प्रयास करते हैं। संगीत में सक्रिय श्रवण बहुत महत्वपूर्ण है, जितना अधिक आप संगीत की एक विस्तृत शृंखला सुनते हैं, उतना ही आप विभिन्न शैलियों, संरचनाओं एवं तकनीकों को समझना आरंभ करते हैं, जिन पर आपने पहले ध्यान नहीं दिया था। यह आपके कानों को विभिन्न शैलियों, लय और यहाँ तक कि उत्पादन में बारीकियों के लिए खोलता है जिन्हें आप अन्यथा नहीं पहचान पाते।

- अपनी पसंद का कोई लोक, जनजातीय, आधुनिक अथवा समकालीन गीत या अपने शिक्षक द्वारा दी गई सूची में से कोई गीत सक्रियता से सुनिए।
- पता लगाएँ कि गीत एवं धुन किस प्रकार कहानी कहते हैं।
- गीत एवं धुन की मनोदशा तथा भाव क्या हैं?
- अब इसी क्रियाकलाप को वाद्य संगीत के साथ दोहराएँ।
- मनोदशा एवं भावों में आप क्या अंतर देखते हैं?

वीणा बजाती हुई एक कलाकार

गतिविधि 6.5 — अभिनय करके दिखाएँ

- किसी फिल्म का वाद्य संगीत या पृष्ठभूमि संगीत सुनिए।
- संगीत के अंश का विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए बारी-बारी से कार्य कीजिए।
- वे कौन-से भाव हैं, जिन्हें आप पहचान सकते हैं?
- विभिन्न रचनाओं में भावों को प्रस्तुत करने का प्रयास कीजिए।
- संगीत के भावों एवं कहानी को व्यक्त करने के लिए रंगमंच तथा नृत्य में सीखे गए तत्वों का उपयोग करने में संकोच न करें।

इकतारा बजाता एक कलाकार

संतूर बजाता एक कलाकार

शिक्षकों के लिए निर्देश— इस गतिविधि के लिए, आप शक्ति, पंडित रविशंकर, डॉ. एल. सुब्रमण्यम या विभिन्न राज्यों के लोक वाद्य वादन के एल्बमों से वाद्य संगीत के अंश का उपयोग कीजिए।

आकलन

अध्याय 6 — संगीत, भाव और रचनात्मकता				
सी.जी.	सी.	सीखने के प्रतिफल	अध्यापक	स्वयं
1	1.2	गीत एवं संगीत के माध्यम से कथा-कथन को समझने में सक्षम है।		
1	1.2	संगीत के किसी अंश में व्यक्त भावों को रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत करने में सक्षम है।		
2	2.1	नए गीत एवं संगीत के नए रूप सीखने के लिए उत्सुक है।		
2	2.2	एक चित्रकला की शब्दों एवं कथाओं में व्याख्या करने में सक्षम है।		
3	3.1	संगीत की विभिन्न भूमिकाओं को समझने एवं स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में सक्षम है।		

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

7 राग और ताल

0780CH07

षड्जश्च ऋषभश्चैव गान्धारो मध्यमस्तथा ।
पञ्चमो धैवतश्चैव सप्तमोऽथ निषादवान् ॥

– नाट्यशास्त्र,28/23

नाट्यशास्त्र के समय से प्रचलित सात स्वर इस प्रकार हैं— षडज्, ऋषभ, गंधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद।

प्रत्येक वर्ष हम भारतीय शास्त्रीय संगीत की दोनों शैलियों हिंदुस्तानी और कर्नाटक के बारे में अपनी समझ बढ़ाते हैं। इस वर्ष हम और अधिक बंदिशों, रागों और तालों का पता लगाएँगे। यह देखें कि आप दो शैलियों के शास्त्रीय संगीत के बीच कैसे संबंध स्थापित कर सकते हैं और शास्त्रीय संगीत एवं अन्य संगीत शैलियों, जिन्हें आप सुनते हैं बीच कैसे संबंध बना सकते हैं।

गंगूबाई हंगल

क्या आप जानते हैं?

भारतीय शास्त्रीय संगीत के स्वरों की उत्पत्ति प्रारंभ में *सामवेद* की अनुष्ठानिक ऋचाओं (गान) से हुई थी। प्रारंभ में वेदों का उच्चारण तीन स्वरों में किया जाता था— उनके नाम हैं, उदात्त (साधारण या माध्यम स्वर), अनुदात्त (कम तीव्रता वाला नीचा स्वर) और स्वरित (उठते और ऊँचे स्वर)।

बाद में यही तीन स्वर धीरे-धीरे विकसित होकर सात स्वरों (सप्त स्वर) में परिवर्तित हो गए, जो आगे चलकर संगीत की आधारशिला बनें, जिसे हम संगीत में प्रयोग करते हैं।

कर्नाटक संगीत

सप्त ताल अलंकार

स्वर क्षमता को विकसित करने और तालों की समझ को बढ़ाने के लिए स्वर अभ्यास का एक लोकप्रिय संग्रह है— सप्त ताल अलंकार।

कर्नाटक तालें

कर्नाटक संगीत में सात मुख्य तालें हैं। ये हैं—

1. ध्रुव
2. मत्त
3. रूपक
4. झम्प
5. त्रिपुट
6. अठ
7. एक

ताल बनाने के लिए तीन मुख्य अंग या भाग होते हैं—

1. अणुद्रुत (खाली)— इसे (U) संकेत से लिखा जाता है।
2. द्रुत (ताली और हाथ हिलाना)— इसे (O) संकेत से लिखा जाता है।
3. लघु (ताली अथवा उंगली की गिनती*)— इसे (I) संकेत से लिखा जाता है।

नोट— एक 'लघु' में मात्राओं की संख्या अलग-अलग हो सकती है जिसे जाति कहा जाता है। इस स्तर पर, प्रत्येक लघु में चार मात्राएँ हैं। इस पाठ में, हम पहले तीन अलंकार गाएँगे और ये ताल रखेंगे—

ध्रुव ताल

I_4	0	I_4	I_4	
सा रे ग म	ग रे	सा रे ग रे	सा रे ग म	||
रे ग म प	म ग	रे ग म ग	रे ग म प	||
ग म प ध	प म	ग म प म	ग म प ध	||
म प ध नि	ध प	म प ध प	म प ध नि	||
प ध नि सां	नि ध	प ध नि ध	प ध नि सां	||
सां नि ध प	ध नि	सां नि ध नि	सां नि ध प	||
नि ध प म	प ध	नि ध प ध	नि ध प म	||
ध प म ग	म प	ध प म प	ध प म ग	||
प म ग रे	ग म	प म ग म	प म ग रे	||
म ग रे सा	रे ग	म ग रे ग	म ग रे सा	||

मत्त ताल

I_4	0	I_4	
सा रे ग रे	सा रे	सा रे ग म	||
रे ग म ग	रे ग	रे ग म प	||
ग म प म	ग म	ग म प ध	||
म प ध प	म प	म प ध नि	||
प ध नि ध	प ध	प ध नि सां	||
सां नि ध नि	सां नि	सां नि ध प	||
नि ध प ध	नि ध	नि ध प म	||
ध प म प	ध प	ध प म ग	||
प म ग म	प म	प म ग रे	||
म ग रे ग	म ग	म ग रे सा	||

रूपक ताल

0			I_4				
सा	रे	|	सा	रे	ग	म	॥
रे	ग	|	रे	ग	म	प	॥
ग	म	|	ग	म	प	ध	॥
म	प	|	म	प	ध	नि	॥
प	ध	|	प	ध	नि	सां	॥
सां	नि	|	सां	नि	ध	प	॥
नि	ध	|	नि	ध	प	म	॥
ध	प	|	ध	प	म	ग	॥
प	म	|	प	म	ग	रे	॥
म	ग	|	म	ग	रे	सा	॥

आप देख सकते हैं कि ये सभी अलंकार कुछ विशेष ढाँचों (पैटर्न) पर आधारित होते हैं। क्या आप गायन के अभ्यास रूप में अपने स्वर या सरगम के पैटर्न बनाने का प्रयास कर सकते हैं?

अब हम एक स्वरजाति गाते हैं।

इस रचना को गाने से पहले, आरोह और अवरोह गाएँ। रचना को गाते समय ताल में रहने का प्रयास करें। आदिताल 8 मात्राओं की आवृत्ति वाली लय संरचना (ताल) है।

एक संगीत समारोह में कर्नाटक गायिका अरुणा साईंराम

स्वरजाति कर्नाटक संगीत की अति प्राचीन विधा है जो स्वर और कभी-कभी शब्दों से मिलकर बनी होती है। सामान्यतः इसके तीन भाग होते हैं— पल्लवी (स्थायी अथवा कोरस), अनुपल्लवी (पल्लवी के बाद छोटा-सा भाग) तथा एक अथवा ज्यादा चरणं (छंद)।

रा रा वेणु

राग— बिलाहारी
ताल— आदि
भाषा— तेलुगु
रचनाकार— पटनम सुब्रमण्यम अय्यर

आरोह— सा रे$_2$ ग$_3$ प ध$_2$ सां
अवरोह— सां नि$_3$ ध$_2$ प म$_1$ ग$_3$ रे$_2$ सा

पल्लवी

सा	,	,	रे	ग	,	प	,	ध	,	सां	,	नी	,	ध	,	|	
रा	,		रा	वे		णु		गो		पा		बा		ला		|	
प	,	ध	प	म	ग	रे	स।	रे	सा	ऩी	ध़	सा	,	,	,	||	
रा		जी	ता	स	द	गु	ण।	ज	य	श	ई	ल				||	

अनुपल्लवी

सा	,	,	रे	ग	,	प	,	म	,	,	ग	प	,	ध	,	|	
स			र	स		क्ष		नी			रे	मे		मी		|	
रें	,	,	सां	नी	,	,	ध।	प	,	,	म	ग	,	,	रे	||	
म			रु	बा			री।	को		रवा	ले				रा	||	(रा रा)

चरणं

1.	ग	प	ध	रें	सां	सां	सां	,	गं	गं	गं	,	रें	रें	रें	,	|	
	ना	ना	वी	लु	तु	नी	गा		र	वा	मा	दन	ची	स	दा		|	
	प	प	प	,	म	ग	ग	,।	रे	सा	सा	,	रे	सा	ऩी	ध़	||	
	ना	नु	नी		य	दा	पा	ई।	दा	य	तो		पो	दु	कु	रा	||	(रा रा)

2.	सा	,	,	रे	ग	,	ग		ग	,	,	,	,	,	रे	ग	।	
	ना	न		द	गो		पा		ला						ने		।	
	प	,	,	प	प	,	प	, ।	प	,	,	,	,	,	ध	प	।।	
	नै			दु	पो		जा	।	ला						नी		।।	
	सां	,	,	सां	सां	,	सां	,	गं	रें	सां	नी	नी	ध	प	,		
	वी			दु	रा		रा		सा	द	म	ला	ल	दी	तो			
	प	ध	प	म	ग	ग	रे	, ।	ग	प	म	ग	रे	सा	रे	ग	।।	
	मु	द	मु	ला	रा	गा	ना	।	के	दु	रु	गा	गा	ती	य	रा	।।	(रा रा)
3.	प	प	प	,	रे	रे	रे	,	ग	प	म	ग	ग	,	,	,	।	
	पा	लु	मा		रु	नु	गा		रा	वा	मु	ना	नीन				।	
	ग	प	म	ग	म	ग	रे	सा	रे	ग	रे	सा	सा	,	,	,	।।	
	दा	ला	ची	ना	पा	लु	का	वु	ना	लु	गु	कु	रा				।।	
	रे	सा	ऩी	ध़	सा	,	,	,	म	ग	रे	ग	प	,	,	,	।	
	का	री	वा	रा	दा				मा	री	मा	री	ना				।	
	ध	प	ध	रें	सां	,	,	,	रें	सां	नी	ध	प	म	ग	रे	।।	
	य	ध	अर	आमु	कर	०			ला	रा	का	नी	का	रा	मु	गा	।।	(रा रा)

4.	प	,	,	,	म	ग	रे	ग	ध	,	,	,	म	ग	रे	ग	|
	रा				ना	ग	दा	रा	रा				मु	रा	हा	रा	|
	प	,	,	,	म	ग	रे	ग।	प	,	प	,	प	,	,	,	||
	रा				भा	व	हा	रा	रा		वे		रा				||
	गं	,	,	,	रें	सां	नी	ध	रें	,	,	,	रें	सां	नी	ध	|
	ऐ				मा	गु	व	नु	ए				ला	ला	ला	नु	
	सां	,	,	,	रें	सां	नी	ध	सां	,	सां	,	सां	,	,	,	||
	ऐ				सो	गा	सी	नी	च	अई	को		रा				
	गं	,	रें	सां	रें	,	रें	,	रें	,	,	,	रें	,	सां	नी	|
	को		री	का	लीम		पोन		दा				देन		दा	मु	
	ध	,	ध	,	ध	,	,	, ।	प	,	म	ग	ग	,	ग	,	||
	नी	यन	दा					।	जे		रे	नु	नी		च	एन	

हिंदुस्तानी संगीत

ताल

यहाँ हिंदुस्तानी संगीत के कुछ आधारभूत तालों के बारे जानकारी दी जा रही है। इनकी ताली/गिनती सीखिए और शिक्षक की सहायता से इन्हें गिनना और बोलों को बोलने का अभ्यास कीजिए।

ताल–झपताल — इस ताल में 10 मात्राएँ होती हैं।

मात्रा/संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ठेका/बोल	धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
ताल चिह्न	x		2			0		3		

ताल–रूपक— इस ताल में 7 मात्राएँ होती हैं।

मात्रा/संख्या	1	2	3	4	5	6	7
ठेका/बोल	ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
ताल चिह्न	0			1		2	

ताल–एकताल— इस ताल में 12 मात्राएँ होती हैं।

मात्रा/संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
ठेका/बोल	धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	कत	ता	धागे	तिरकिट	धिं	ना
ताल चिह्न	x		0		2		0		3		4	

राग

क्या आप जानते हैं कि हिंदुस्तानी संगीत पद्धति में 12 स्वर हैं।

सात सुर— सा रे ग म प ध नि

चार कोमल— रे ग ध नि (नीचे की ओर रेखांकित स्वर कोमल स्वर दर्शाते हैं)

एक तीव्र — म (तीव्र म को इस तरह दर्शाते हैं)

समय चक्र (हिंदुस्तानी रागों का समय चक्र)

शास्त्रीय संगीत हमारी धरोहर, हमारा खजाना है, जो एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी में हस्तांतरित होता है। संगीत में राग विभिन्न भावनाओं को व्यक्त करते हैं तथा मनोदशा बनाते हैं। हिंदुस्तानी संगीत में अलग-अलग राग को दिन के अलग-अलग समय में गाया जाता है। स्वरों की एक विशेष संरचना यानी राग दिन के एक विशेष समय में प्रभावशाली होते हैं। उदाहरण के लिए, राग भैरव प्रात: समय का राग है, जबकि राग यमन साधारणतया शाम में गाया जाता है।

राग माला चित्रकला

राग भैरवी

थाट — भैरवी
आरोह — सा, रे, ग, म, प, ध नि, सां
अवरोह — सां नि ध प म ग रे सा
पकड़ — म ग सा रे सा ध नि सा (ध और नि मंद्र सप्तक के हैं)
वर्जित स्वर — कोई स्वर नहीं

जाति — संपूर्ण-संपूर्ण
कोमल स्वर — रे ग ध नि
वादी स्वर — मध्यम (म)
संवादी स्वर — षडज (सा)
गायन समय — प्रात: काल

राग — भैरवी सरगम गीत (एकताल)

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बोल	धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	न	क	ता	धागे	तिरकिट	धी	ना
चिह्न	X		0		2		0		3		4	

स्थायी

ध	-	प	ध	म	प	ग	म	ग	रे	सा	ऩि
ध़	-	ऩि	सा	-	रे	ग	म	ग	रे	सा	-
ग	म	ध	नि	सां	नि	सांनि	धप	निध	पम	गरे	सासा

अन्तरा

म	ग	म	ध	-	नि	सां	नि	सां	रें	सां	-
ध	-	नि	सां	-	रें	गं	मं	गं	रें	सां	-
सां	-	सां	नि	ध	प	सांनि	धप	निध	पम	गरे	सासा
X		0		2		0		3		4	

राग भैरवी — छोटा ख्याल (तीनताल)

स्थायी— कैसी ये भलाई रे कन्हाई पनिया भरत मोरी गगरी गिराई करा के लराई........

अन्तरा — सनद कहे ऐसो ढीट भयो कन्हाई का करू माने नाही मानत कन्हाई करत लराई

राग भैरवी – तीनताल

(क्रमिक पुस्तक मालिका भाग – 2)

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
चिह्न	X				2				0				3			
													ऩि[सा]	सा	ग	म
		स्थायी											कै	सी	ये	भ
	(ध)	-	ध	प	-	ध	प	प	म[प]	प	म	ध	प	म	ग[म]	रे
	ला	ऽ	ई	रे	ऽ	क	न्हा	ई	प	नि	याँ	भ	र	त	मो	री
	ग[म]	प	ध	नि	ध	प	ग[म]	म	ग[रे]	रे	सा	सा				
	ग	ग	री	गि	रा	इ	क	र	के	ल	रा	इ				
		अन्तरा							ध	म	ध	नि	सां	-	सां	नि
									स	न	द	क	हे	ऽ	ऐ	सो
	सां रें	गं	रें	गं	सां[रें]	रें[गं]	सां	सां	ध[प]	-	ध	ध	प	ग[प]	ग[म]	रे
	ढीऽ	ऽ	ठ	भ	यो	क	न्हा	ई	का	ऽ	क	रूँ	मा	ने	न	हिं
	ग	प	ध	नि	ध	प[म]	ग	म	ग[रे]	रे	सा	सा				
	मा	न	त	क	न्हा	ई	क	र	त	ल	रा	इ				
	X				2				0				3			

राग भैरवी — तराना (तीनताल)

स्थायी— दिर दिर तन देरे न तन दीम तन
तन देरे तन नन त दीम त देरे न

अन्तरा— अलली अलली तोम तन देरे न त दीम त देरे न त दीम त देरे न
धा किट धुम किट ता का धे तट सांनि धप निध पम धप मग रेरे सा

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
चिह्न	X				2				0				3			
स्थायी									नि	सा	ग	म	प	ध	प	-
									दिर	दिर	त	न	दे	रे	न	ऽ
	प	ध	प	नि	ध	म	ग	-	ग	प	म	ध	प	म	ग	रे
	त	न	त	दी	ऽ	म	त	न	त	न	दे	रे	त	न	न	न
	रे	ग	प	म	ग	रे	सा	-								
	त	दी	म	त	दे	रे	न	ऽ								
अन्तरा									ग	ग	म	म	ध	ध	नि	ध
									अ	ल	ली	अ	ल	ली	अ	ल
	सां	सां	सां	सां	नि	रें	सां	-	सां	गं	रें	गं	सां	रें	सां	-
	तो	म	त	न	दे	रे	न	ऽ	त	दी	म	त	दे	रे	न	ऽ
	सां	गं	रें	गं	सां	रें	सां	-	प	ध	नि	सां	नि	ध	प	म
	त	दि	म	त	दे	रे	न	ऽ	ध	किट	धुम	किट	ता	क	धे	तट
	सां नि	धप	निध	पम	धप	मग	रेरे	सासा								
	X				2				0				3			

उस्ताद जाकिर हुसैन (1951–2024)

जाकिर हुसैन भारत के महान तबला वादक थे। वह जाने-माने तबला वादक उस्ताद अल्ला रक्खा खाँ के पुत्र थे। जाकिर हुसैन ने बचपन से ही तबला बजाना शुरू कर दिया था। उन्होंने अपने पिता से उच्च कोटि की तालीम प्राप्त की। उनके पिता कहते थे, "आप एक संगीतमय वातावरण में बड़े हो रहे हैं और आपको कुछ और करने की जरूरत नहीं है।" उन्होंने सात वर्ष की अवस्था में ही समारोहों में तबला वादन प्रारंभ कर दिया था तथा मात्र 12 वर्ष से यात्राएँ करना प्रारंभ कर दिया था।

उन्होंने पंडित रविशंकर जैसे महान हिंदुस्तानी संगीतकारों के साथ संगत करने से लेकर एकल तबला वादन तक, विभिन्न प्रारूपों में संगीत बजाया। वह अग्रणी विश्व संगीत बैंड 'शक्ति' के संस्थापक सदस्य थे। उन्होंने कई दशकों तक अपने बैंड के साथ दौरा किया। उन्होंने दुनियाभर के कई संगीतकारों के साथ समन्वय किया और संगीत के सबसे प्रतिष्ठित स्थानों पर प्रदर्शन किया। उन्हें अनगिनत पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए, जिनमें भारत सरकार से पद्म विभूषण, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और तीन ग्रेमी अवार्ड भी सम्मिलित हैं।

गतिविधि — 7.1 तबला वादन

यदि आपके विद्यालय में तबला के शिक्षक हैं तो उनसे कुछ साधारण लय सीखिए।

अभ्यास

1. (क) तीन ताल में कितने विभाग होते हैं?

   (i) 3 (ii) 2

   (iii) 6 (iv) 4

   (ख) रूपक ताल में कितने विभाग होते हैं?

   (i) 6 (ii) 2

   (iii) 3 (iv) 4

   (ग) रूपक के बोल हैं....

   (i) ती ती ना धी धी ना

   (ii) ती ती ना धी ना धी ना

   (iii) ना धी ना धी ना

   (iv) ना तिं तिं

2. अंगों के आधार पर कर्नाटक तालों को पहचानें।

   (क) I 0 I I

   (ख) I 0 I

   (ग) 0 I

3. रागों के नाम व्यवस्थित करें—

   (क) र भै व

   (ख) न म य

   (ग) मा ख ज

   (घ) ह न मो

   (ङ) री ह ला बि

   (च) शं र रा भ न म् क

आकलन

अध्याय 7 — राग और ताल				
सी.जी.	सी.	सीखने के प्रतिफल	अध्यापक	स्वयं
1	1.1	संगीत के बुनियादी शब्दों, जैसे— नाद, ध्वनि की समझ।		
1	1.1	क्या हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के स्वरों से परिचित हैं?		
1	1.1	क्या राग के सही स्वरों और सही ताल का उपयोग करके भारतीय शास्त्रीय संगीत की चुनिंदा रचना गाने में सक्षम है?		
1	1.1	क्या कुछ कर्नाटक और हिंदुस्तानी तालों की समझ है।		

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

---

8 लोक संगीत

0780CH08

हमारे देश का संगीत अविश्वसनीय रूप से विविधतापूर्ण है, जो प्रत्येक राज्य की अनूठी सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है एवं वहाँ के लोगों की रचनात्मकता से आकार लेता है। यह विविधता दृश्य कला, नृत्य एवं रंगमंच जैसे अन्य कला रूपों में भी दिखाई देती है।

आपने हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित संगीत सुना होगा। दिए गए स्तंभ में बस सही (✓) या गलत (✗) का चिह्न लगाइए।

1. प्रत्येक गाने की धुन प्रायः एक जैसी होती है। ☐
2. प्रत्येक रचना की लयबद्ध संरचना भिन्न-भिन्न होती है। ☐
3. गीतों का कोई विषय नहीं होता है। ☐
4. गीत हमें क्षेत्रीय जीवन तथा प्रकृति के बारे में बताते हैं। ☐

लोक का मतलब है— लोग। इसलिए लोक संगीत हमारे देश के लोगों का एवं उनके द्वारा गाया जाने वाला संगीत है। लोक संगीत विभिन्न भावों या रसों को व्यक्त करता है और आपको गीतों के माध्यम से त्योहारों, अनुष्ठानों, परंपराओं, रोजगारों, आस्थाओं और विश्वासों आदि के बारे में बताता है।

1. विलावेल 2. सारंगी एवं डमरू 3. देसी सेक्सोफोन 4. एकतारा एवं गोपी जंत्र 5. चेंड़ा

लोकगीत एवं समुदाय

आइए, नीचे दिए गए इस करमा गीत को सुनें। यह एक छत्तीसगढ़ी गीत है और इसकी विधा करमा है। विधा क्या है? हमने पिछली कक्षाओं में इस पर चर्चा की है। एक विधा संगीत को गायन अथवा सांगितीक वाद्ययंत्र बजाने की शैली को संदर्भित करती है।

गीत गाएँ, परंतु सबसे पहले पढ़ने का प्रयास कीजिए। सभी शब्दों को ठीक से गाएँ। गाते समय ताली बजाएँ, इससे आपको गीत की लय, ताल समझने में मदद मिलेगी। आप सभी करमा शैली में नृत्य कर सकते हैं।

करमा सम्राट-
(कोदूरामवर्मा)

करमा गीत

हाय रे हाय जॅवारा डोंगरी म रे....
मांदर वाला रे.......
डोंगरी म रे ssss
हाय जॅवारा डोंगरी म ना
तेंदू पाना टोरे ल जाबो डोंगरी म रे।
लउहा जाबो चार पाबो,
तेंदू खाबों का रे जॅवारा,
बॉही म बॉही जोर के
अमरइया जाबो कारे जॅवारा
तेंदू पाना टोरे ल जाबो
करिया कोइली कुहुकी मारे
मंजूर के मीठ बोली जंवारा
डोंगरी बीच म गाये ददरिया
जीवरा ल मारे गोली जंवारा
तेंदू पाना टोरे..........

करमा नर्तक

गीत का भाव

इस करमा गीत में प्रकृति का वर्णन है। जिसमें कहा गया है,कि चलो साथी तेंदू पत्ता तोड़ने के लिए जंगल जायेंगे। जल्दी जायेगे तो चार खायेंगे, तेंदू खायेंगे फिर बांह में बांह जोड़कर करमा नाचेंगे। जंगल में काली कोयल की और मयूर की कुहुक की मीठी आवाज गूंज रही है। जंगल के बीच ददरिया गीत गायेंगे। चलो साथी तेंदू पत्ता तोड़ने के लिए जंगल जायेंगे।

गतिविधि 8.1

जैसे आपने पहले छत्तीसगढ़ी करमा लोकगीत सीखा, वैसे ही अलग-अलग क्षेत्रों के लोग विभिन्न लोकगीत गाते हैं। क्या आप अपने क्षेत्र का कोई लोकगीत जानते हैं?

- अपने क्षेत्र का कोई और लोकगीत या उत्सव का गीत सीखिए।
- गीत की पृष्ठभूमि के बारे में सोचिए तथा यह समझिए कि यह गीत समुदाय में किस उद्देश्य से गाया जाता है।
- इस क्षेत्रीय गीत के साथ कौन-कौन से सांगितिक वाद्ययंत्र प्रयोग किए जाते हैं। इन्हें नाम और ध्वनि के साथ पहचानिए।
- इस गीत को कक्षा में गाइए एवं विद्यालय की सभा में प्रस्तुत कीजिए।
- गीत के विशेष तत्वों, इसे गाने वाले लोगों एवं समुदायों की विशेषताओं पर एक प्रस्तुति भी तैयार कीजिए।
- इस गीत को मोबाइल फोन से रिकॉर्ड कीजिए एवं अपने दोस्तों के साथ साझा कीजिए।
- भारत के किसी अन्य क्षेत्र का ऐसा ही कोई गीत सुनिए।
- गीत के साथ उपयुक्त शारीरिक हाव-भाव (movements) का प्रयोग कीजिए।

लोकवाद्य दफडा, गुदुम बजाते कलाकार

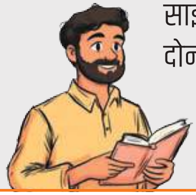

शिक्षकों के लिए निर्देश— ऐसी परियोजना को अपने समूह के विद्यालयों के साथ साझा कीजिए। बस्तारहित दिनों में विद्यार्थियों के साथ चर्चा एवं प्रस्तुति दोनों कराइए। विद्यार्थियों को भूपेन हज़ारिका के अन्य गीत सुनने के लिए प्रेरित कीजिए, जिन्हें उनके संगीत के लिए 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया है।

विशिष्ट स्वर

- अपनी कक्षा में अपने दोस्तों के स्वर को ध्यान से सुनिए, क्या ये सभी स्वर विशिष्ट हैं या फिर कुछ स्वर समान हैं? शायद नहीं। आप कई तरह की स्वर सुनेंगे— तीखे और स्पष्ट, गूँजदार और गहरे, कोमल और मीठे। हमारे चेहरों की तरह ही प्रत्येक स्वर भी विशिष्ट तथा भिन्न होता है। जिस प्रकार दो लोग बिल्कुल एक जैसे नहीं दिखते, उसी तरह दो स्वर बिल्कुल एक जैसे नहीं होते।

- क्या आपने कभी यह सोचा है कि पुरुष एवं महिला स्वर में क्या अंतर होता है? हम प्राय: मानते हैं कि पुरुषों का स्वर भारी एवं महिला का स्वर ऊँचा होता है। जबकि ऐसा सदैव नहीं होता। जब आप अपने सहपाठियों के स्वर सुनेंगे तो आपको अलग-अलग तरह के स्वरों का अच्छा अनुभव मिलेगा।

गतिविधि 8.2 — विशिष्ट गायक

यहाँ कुछ पुरुष एवं महिला गायकों के उदाहरण दिए गए हैं, जिनके स्वर आम या परंपरागत नहीं हैं। कई प्रसिद्ध कलाकारों के स्वर अलग और अनोखे होते हैं— यही बात उन्हें अद्वितीय तथा विशेष बनाती है। इनके स्वर ऑनलाइन सुनिए—

ऊषा उत्थुप

तीजन बाई

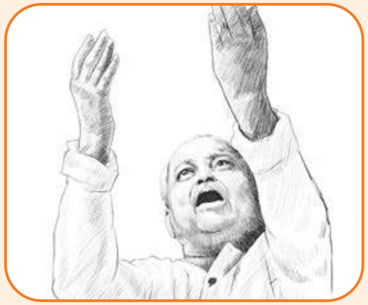

कुमार गंधर्व

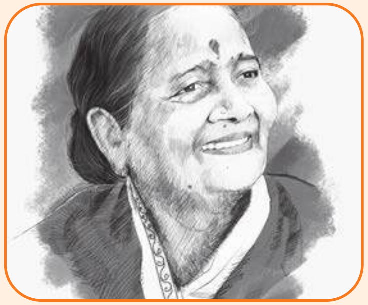

डी.के. पट्टामल

रूढ़िवादिता को तोड़ना

अब आइए, एक अन्य प्रकार का गीत, लोरी गाएँ।

लोरी एक ऐसा गीत होता है जिसे बच्चों को सुलाने के लिए गाया जाता है। सामान्यत: यह माँ द्वारा गाया जाता है, परंतु क्या आप परिवार के अन्य सदस्यों के बारे में सोच सकते हैं जो एक बच्चे को लोरी सुना सकते हैं?

गतिविधि 8.3 ★

- अपने परिवार के सदस्यों से कोई एक लोरी सीखिए।
- अपने माता-पिता या दादा-दादी या फिर नाना-नानी से पूछिए कि जब आप छोटे थे तो उन्हें कौन-सी लोरी पसंद थी।
- लोरी के बोल और उसकी विशेष धुन को नोट कीजिए।
- फिल्मों की एक लोरी है जिसे प्रसिद्ध गायिका गीता दत्त ने गाया था। इस गीत के बोल हैं— *नन्ही कली सोने चली, हवा धीरे आना, नींद भरे पंख लिए झूला झुला जाना।* इस गीत को ऑनलाइन सुनिए।

गतिविधि 8.4

- चलिए अब कव्वाली सुनते हैं। कव्वाली एक भक्ति संगीत की विधा है जो सूफी इस्लामी परंपरा से संबंधित है। पारंपरिक रूप से कव्वाली को पुरुष संगीतकारों के समूह द्वारा गाया जाता है, परंतु अब कई महिला संगीतकार भी कव्वाली प्रस्तुत कर रही हैं, जिससे यह समझ आता है कि संगीत की विधाएँ समय के साथ और विकसित और अनुकूलित होती हैं।
- कुछ प्रसिद्ध महिला कव्वाल गायिकाओं में रोशनआरा बेगम का नाम प्रमुख है, जिनका जन्म कोलकाता में हुआ था।
- किसी महिला कव्वाल गायिका की प्रस्तुति ऑनलाइन खोजकर सुनिए।
- कव्वाली सीखिए। किसी रिकॉर्डिंग से या अपने आस-पास के किसी कलाकार से सीखिए।

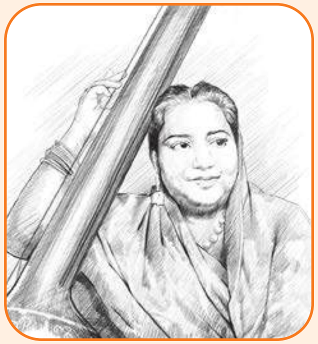

रोशनआरा बेगम

संगीत में महिलाएँ

भारत की कई महिलाओं ने अपने काव्य और रचनाओं के माध्यम से संगीत में अमिट छाप छोड़ी है।

मीराबाई

पन्द्रहवीं शताब्दी में मीराबाई एक कवयित्री और श्रीकृष्ण की भक्त थीं, वह राजस्थान के एक राजघराने में जन्मीं थीं और मेवाड़ के राजकुमार भोजराज से उनका विवाह हुआ था। छोटी आयु से ही वह भगवान श्रीकृष्ण की भक्त थीं और बाद में उन्होंने द्वारका तथा वृंदावन जैसे श्रीकृष्ण से जुड़े स्थलों की यात्रा की। वह एक प्रसिद्ध कवयित्री थीं और उन्होंने श्रीकृष्ण की स्तुति में सैकड़ों भजन (भक्ति गीत) रचे। आज भी उन्हें भक्ति आंदोलन की महान संत के रूप में याद किया जाता है और उनके भजन शास्त्रीय और भक्ति, दोनों ही शैलियों में गाए जाते हैं। आइए, एक प्रसिद्ध मीरा भजन सीखते हैं—

पायो जी मैंने राम रत्न धन पायो (2)
वस्तु अमोलक दी मेरे सद्गुरु, कृपा कर अपनायो
(पायोजी)
जनम-जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवयो
(पायोजी)
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरष-हरष जस गायो
(पायोजी)

गीत का भाव

इस गीत में मीरा अपने प्रभु श्रीकृष्ण के प्रति अपनी भक्ति को व्यक्त करती हैं। वह कहती हैं कि उन्होंने सबसे अनमोल वस्तु गुरु कृपा को पा लिया है। वह यह भी कहती हैं कि भले ही उन्होंने सांसारिक वस्तुएँ खो दी हों, यह भक्ति उन्हें जन्म-जन्मांतर का फल दे चुकी है। अंत में, वह कहती हैं कि श्रीकृष्ण उनके प्रभु हैं और वह आनंद से उनका गुणगान करती रहेंगी।

गतिविधि 8.5

आइए, लालदेढ़ को जानिए।

लल्लेश्वरी, जिन्हें सामान्यत: 'लालदेढ़' कहा जाता है, कश्मीर की एक रहस्यवादी कवयित्री थीं। उन्होंने कई वाख (छोटी कविताएँ) रचीं, जो दार्शनिक अर्थों में भरपूर हैं।

लालदेढ़ के बारे में ऑनलाइन या अपने पुस्तकालय से अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए।

- वह किस शताब्दी से थीं?
- उनकी कविताओं के विषय क्या थे?
- उन्होंने संगीत और काव्य में क्या योगदान दिया?
- उनकी किसी एक कविता का हिंदी अनुवाद पढ़िए और उस पर अपने विचार साझा कीजिए।

संगीत और सामाजिक सुधार

संगीत का उपयोग किसी दृष्टिकोण को व्यक्त करने और समाज में परिवर्तन लाने के लिए किया जा सकता है। कई संगीतकारों और कवियों ने सामाजिक परिस्थितियों का विरोध करने और समानता एवं एकता जैसे संदेशों को फैलाने के लिए गीतों का उपयोग किया है।

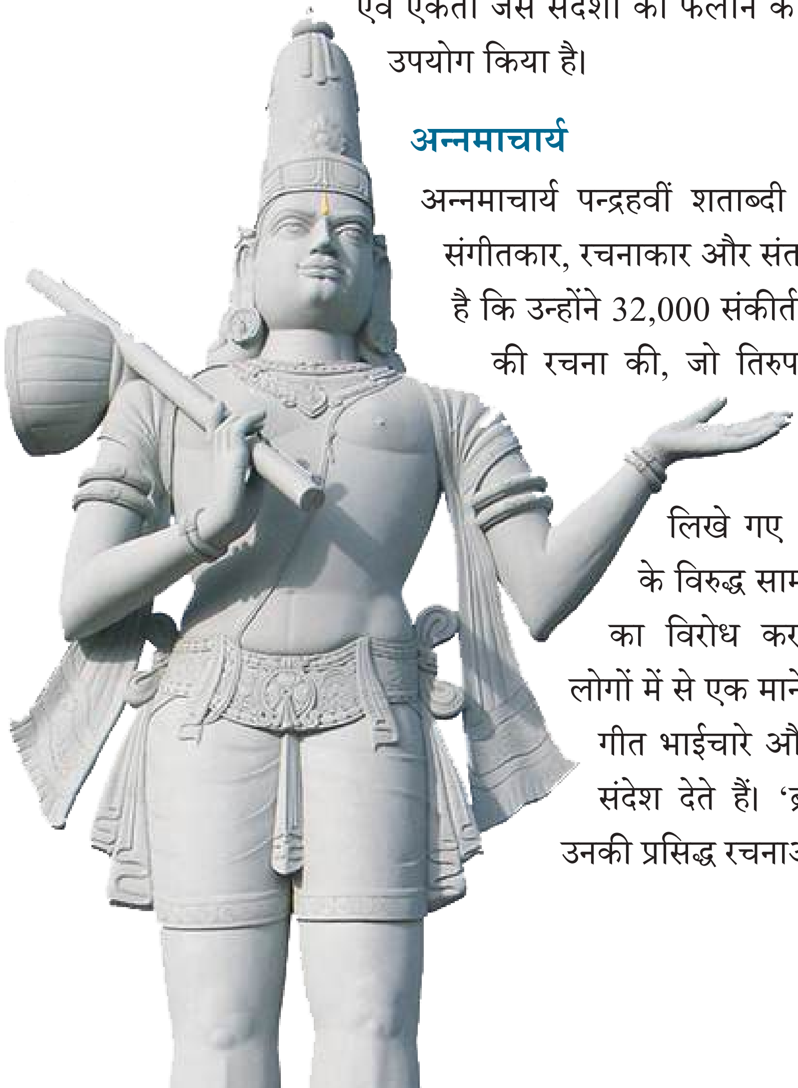

अन्नमाचार्य

अन्नमाचार्य पन्द्रहवीं शताब्दी के एक तेलुगू संगीतकार, रचनाकार और संत थे। कहा जाता है कि उन्होंने 32,000 संकीर्तन (भक्ति गीत) की रचना की, जो तिरुपति के भगवान वेंकटेश्वर की स्तुति में लिखे गए थे। वह अछूतों के विरुद्ध सामाजिक भेदभाव का विरोध करने वाले पहले लोगों में से एक माने जाते हैं। उनके गीत भाईचारे और नैतिकता का संदेश देते हैं। 'ब्रहमम ओकट' उनकी प्रसिद्ध रचनाओं में से एक है।

गीत— ब्रहमम ओकट

तंदनन अही तंदनन पुरे
तंदनन अही तंदनन पुरे
तंदनन भला तंदनन

ब्रहमम ओकट, परब्रह्मं ओकट पर
ब्रहमम ओकट, परब्रह्मं ओकट ...
कंदुवगु हीनाधिकमुलिंदु लेवु

अंदरिकी श्री हरे अंतरात्मा
इंदुलो जन्तुकुलमिंत नोकेटे
अंदरिकी श्री हरे अंतरात्मा
हरे अंतरात्मा,

श्री हरे अंतरात्मा...
कडगी एनुगु मीदा कायु एंदोकाटे
पुदमि शुनकमु पीडा पोलायु एंदोकाटे
कडु पुण्यालु, पापा कर्मुलनु सरिगावा

जडियु श्री वेंकटेश्वरु नाममोकाटे
वेंकटेश्वरु नाममु ओकाटे...

गीत का भाव

यह गीत बताता है कि ईश्वर एक ही है। समाज में कोई ऊँच-नीच या भेदभाव नहङ्होना चाहिए, क्योंकि सभी प्राणियों में ईश्वर का वास होता है।

धनी धरमदास

धनी धरमदास, संत कबीर के प्रमुख शिष्य और कबीर पंथ के प्रवर्तक थे। उनका जन्म संवत् 1452 में बांधोगढ़ में एक धनी वैश्य परिवार में हुआ था। एक शोध पत्र के अनुसार उन्होंने संत कबीर से दीक्षा प्राप्त की और कबीर पंथ को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने संत कबीर की वाणी को संग्रहितऔर लिपिबद्ध करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। यहाँ उनके द्वारा लिखा एक गीत दिया गया है—

गीत—

आज घर आए साहब मोर
तुलसी तुलसी घर अंगना बहारौ,मोतियन चौक पुराई |
चरन धोए चरनामृत ले के , सिंहासन बैठाई॥
पांच सखी मिल मंगल गावे शब्द में सुरती समाई |
बांधागढ़ के अमिन बिनवै,धनि हो कबीर गोसाई ॥
गुरु बिन कौन हर मोड़ पीरा
राहत अली मालिन जुगनू जुगनी बिना पायेंव एक हीरा |
पायेंव हीरा रहै न धीरा, लेइ के चलैंव वोहि पारख तीरा
सो हीरा साधू सब परखे तब से भयेव मन धीरा |
धर्मदास बिनवै कर जोरी,अजर अमर गुरू पाये कबीरा ॥

गीत का भाव

प्रभु के आने से मन पुलकित है | आज मेरे घर साहब (परमात्मा) आये हैं, उनके स्वागत में प्रसन्न होकर घर अंगना को साफ बुहार रहा हूं ,मोतियन चौक पुर रहा हूँ| उनके चरण धोकर चरणामृत लेकर उच्च सिंहासन में बिठा रहा हूं ,उनके सम्मान में पांचो इंद्रियां रूपी सखियां मंगल गीत गा रही हैं |

गतिविधि 8.6 — परिवर्तन के लिए आवाज

तुम समाज में परिवर्तन लाने के लिए संगीत और कविता का उपयोग कैसे कर सकते हो?

तुम अपने विद्यालय या समुदाय में क्या परिवर्तन लाना चाहते हो?

एक आठ पंक्तियों की कविता या रैप लिखिए, जिसमें वर्णन हो की यह परिवर्तन क्यों महत्वपूर्ण है? और दूसरों को भी प्रेरित कीजिए।

वाद्ययंत्र और क्षेत्र

"देशे देशे जनानां यद्रुच्या हृदयरञ्जकम्। गीतं च वादनं नृत्तं तद्देशीत्यभिधीयते।"

— संगीत रत्नाकर

अर्थ

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में लोगों की विभिन्न रुचियाँ और पसंद देश की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता को दर्शाती हैं। यह विविधता कई प्रकार की कलाओं को प्रेरित करती है, जैसे— संगीत, सांगीतिक वाद्ययंत्र और नृत्य। ये कलाएँ स्थानीय परंपराओं, विश्वासों और जीवनशैली के साथ जुड़ी होती हैं और एक गहरी अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न वाद्ययंत्र हैं जो उस क्षेत्र की विशेषता बताते हैं।

कोपोंग— लद्दाख का एक सांगीतिक वाद्ययंत्र

नोट— कुछ वाद्ययंत्र एक से अधिक राज्यों में भी बजाए जाते हैं और कभी-कभी एक ही वाद्ययंत्र को विभिन्न नामों से जाना जाता है।

गतिविधि 8.7 — वाद्ययंत्रों को श्रेणियों में बाँटें

1. कक्षा 6 में वाद्ययंत्रों की श्रेणियाँ बताई गई थीं। इन वाद्ययंत्रों के चित्र ऑनलाइन खोजिए। नीचे दिए गए वाद्ययंत्र किस श्रेणी में आते हैं—

वाद्ययंत्र	श्रेणी
मोहूरी	
नूट	
दामामातू	
चिमटा	
तरपो	

गतिविधि 8.8 ★

भारत का एक बड़ा मानचित्र प्रिंट कीजिए या लाइए। वाद्ययंत्र के चित्रों को देश के उन क्षेत्रों पर चिपकाएँ, जिनसे वे संबंधित हैं।

मोहूरी
(छत्तीसगढ़)

नूट
(जम्मू और कश्मीर)

कोपोंग
(लद्दाख)

ढोलक/ ढोलकी
(पंजाब)

दामामाटू
(हिमाचल प्रदेश)

चिमटा
(चंडीगढ़)

नफीरी
(उत्तराखंड)

पेपा
(असम)

पुंग
(मणिपुर)

पिपाही
(बिहार)

खुआंग
(मेघालय)

मादल
(झारखंड)

खंजीरा
(कर्नाटक)

पावरी
(दादरा एवं नगर हवेली)

घुम्मट
(गोवा)

पेपा
(अरुणाचल प्रदेश)

तरपा
(दमन और दीव, लक्षद्वीप)

झांझ
(असम, उड़ीसा)

गतिविधि 8.9 — अपने संगीतकार को जानिए

अपने क्षेत्र में किसी संगीतज्ञ को खोजिए और उसका साक्षात्कार लीजिए। नीचे उदाहरण स्वरूप कुछ प्रश्न दिए गए हैं, आप चाहें तो इनमें अपने प्रश्न जोड़ सकते हैं या इनमें परिवर्तन भी कर सकते हैं—

1. आपका नाम क्या है?
2. आपके संगीत की शैली क्या कहलाती है और यह कहाँ की है?
3. यदि आप कोई वाद्ययंत्र बजाते हैं तो क्या आप अपने वाद्ययंत्र के बारे में थोड़ा बता सकते हैं? यह कैसे बनाया जाता है और इसकी ध्वनि कैसे उत्पन्न होती है?
4. आपने संगीत सीखना कब शुरू किया और किससे सीखा?
5. आपने जब सीखना प्रारंभ किया तब आप कितना अभ्यास करते थे और अब कितना करते हैं?
6. आपकी संगीत शैली सामान्यतः कैसे प्रस्तुत की जाती है?
7. आपकी सबसे अविस्मरणीय प्रस्तुतियों में से कौन-सी सबसे अविस्मरणीय रही और क्यों?
8. आप युवा संगीतज्ञों को क्या परामर्श देना चाहेंगे?
9. यदि कोई इस संगीत शैली को सीखना चाहे तो वह कैसे सीख सकता है?
10. क्या आप कुछ और भी साझा करना चाहेंगे?

अपने क्षेत्र के संगीतज्ञों का एक कोलाज बनाइए और उसे अपने सूचना-पट पर लगाइए।

आकलन

अध्याय 8 — लोक संगीत				
सी.जी.	**सी.**	**सीखने के प्रतिफल**	**अध्यापक**	**स्वयं**
2	2.1	क्या संगीत में विविधता के महत्व को सराहने में सक्षम हैं?		
2	2.2	क्या सामाजिक सुधार में संगीत की भूमिका के बारे में बोलने में सक्षम हैं?		
2	2.2	कविता या रैप के रूप में अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं।		
4	4.1	क्या स्थानीय लोक गीत गाने में सक्षम हैं?		
4	4.2	क्या एक संगीतज्ञ के बारे में जानकारी प्रस्तुत करने में सक्षम हैं?		

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

----

9 प्रदर्शन

0780CH09

एक सफल प्रदर्शन के लिए कई चरणों से गुजरना होता है। यह समझना आवश्यक है कि एक सफल प्रदर्शन केवल गाने या बजाने तक सीमित नहीं होता। यदि आप मंच पर न भी हों, तब भी एक सफल प्रदर्शन में आप विभिन्न प्रकार से अपना योगदान दे रहे होते हैं।

सफल प्रदर्शन की ओर आपकी यात्रा को सरल बनाने के लिए इस अध्याय को तीन भागों में विभाजित किया गया है— योजना, तैयारी और प्रदर्शन!

भाग अ— योजना

अन्य गतिविधियों की तरह, किसी प्रदर्शन को तैयार करने में योजना सबसे महत्वपूर्ण चरण होता है। आपका प्रदर्शन प्रभावी और सफल हो सके, इसके लिए योजना के सभी चरणों का पालन कीजिए।

गतिविधि 9.1 — एक प्रदर्शन की कल्पना कीजिए

अपनी योजना प्रारंभ करने के लिए इन बातों पर विचार कीजिए—

- यह प्रदर्शन कहाँ होगा?
- यह प्रदर्शन कब होगा?
- इसकी समयावधि कितनी होगी?
- आपके दर्शक कौन होंगे?
- क्या प्रदर्शन का कोई विषय और शीर्षक होगा?
- क्या यह प्रदर्शन किसी विशेष कार्यक्रम या अवसर के लिए तैयार किया जा रहा है?
- किन्हीं अन्य प्रदर्शनों में से क्या कोई ऐसा तत्व भी है जिसे आपने विशेष रूप से पसंद किया और अपने प्रदर्शन में सम्मिलित करना चाहेंगे?

गतिविधि 9.2 — गीतों की एक सूची तैयार कीजिए

अपने शिक्षक के साथ मिलकर प्रदर्शन के लिए उपयोग किए जाने वाले गीतों की एक सूची बनाइए। सभी लोग ऐसे गीतों का सुझाव दे सकते हैं, जो वे जानते और पसंद करते हैं और प्रदर्शन के लिए उपयुक्त हो सकते हैं। आप इस पुस्तक में दिए गए गीतों को चुन सकते हैं या ऐसे गीत सम्मिलित कर सकते हैं जो आप पहले से जानते हैं।

यहाँ एक गीत दिया गया है जिसे आप प्रारंभिक या स्वागत गीत के रूप में गा सकते हैं।

स्वागतम् शुभ स्वागतम्

स्वागतम् शुभ स्वागतम्।
अथ स्वागतम्, शुभ स्वागतम्।
आनंद मंगल मंगलम (×2)
नित प्रियं भारत भारतम्।
अथ स्वागतम्, शुभ स्वागतम् (×2)

नित्य निरंतरता, नवता, मानवता, समता, ममता।
सारथि साथ मनोरथ का जो अनिवार नहीं थमता।
संकल्प अविजित अभिमतम् आनंद मंगल मंगलम्।।1।।

अथ स्वागतम्, शुभ स्वागतम्
कुसुमित नई कामनाएँ सुरभित नई साधनाएँ
मैत्रीमात क्रीडांगन में प्रमुदित बन्धु भावनाएँ
शाश्वत सुविकसित इति शुभम् आनंद मंगल मंगलम्

संगीत कई महत्वपूर्ण आयोजनों का भाग रहा है। एक अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजन, 1982 के एशियाई खेल, नई दिल्ली में आयोजित किए गए थे। इसके उद्घाटन समारोह में प्रसिद्ध सितार वादक पंडित रविशंकर द्वारा रचित गीत, "स्वागतम शुभ स्वागतम्" गाया गया था।

गतिविधि 9.3 — लोक संगीत को सम्मिलित करना

छत्तीसगढ़ के नृत्य

अपने प्रदर्शन की योजनाओं को ध्यान में रखते हुए, अपनी परंपरा के अतिरिक्त किसी अन्य परंपरा का एक लोक गीत खोजिए। आप इसके लिए ऑनलाइन शोध कर सकते हैं या अपने किसी जानने वाले संगीतज्ञ और संगीत के शिक्षकों से पूछ सकते हैं। आप उन गीतों में से भी कोई गीत चुन सकते हैं जो आपने पहले से सीखे हैं।

उदाहरण के लिए, यहाँ एक लोक गीत दिया गया है जिसे आप सीख सकते हैं—

उड़िया गीत

यह ओड़िशा के कोरापुट क्षेत्र के जनजातीय लोगों का एक लोक गीत है। इसे चैत परबा उत्सव के दौरान बड़े पैमाने पर गाया जाता है। यह गीत एक साथ आकर प्रेम और उत्साह के साथ उत्सव मनाने के बारे में है।

ई ला या लोरी ला ला ला लोरी
ई ला या लोरी ला ला ला लोरी

लोरी दांगुडा लोरी बुलाई दे
लोरी दांगुडा लोरी बुलाई दे

बराने बराने सीता कनिया
बराने बराने सीता कनिया
सीता कनिया मागी अइलु

लखमी कनिया बिभा है बू
सीता कनिया बिभा है बू
आचे बोइले आचे बाला हां

पुरुबा नीति के मागी अइलु
पुरुबा नीति के मागी अइलु

लोरी के लोरी ला ला लोरी
लोरी के लोरी ला ला लोरी

लोरी के लोरी ला ला ला लोरी

बेतु दांगुडा बेतु बुलाई दे
बेतु दांगुडा बेतु बुलाई दे

बराने बराने लखमी कनिया
बराने बराने लखमी कनिया

लखमी कनिया मागी अइलु

नई बाइले नायब आला या

पुरुबा नीति के बुलि अइलु
पुरुबा नीति के बुलि अइलु

ई ला या लोरी ला ला लोरी
ई ला या लोरी ला ला लोरी

भाग ब — तैयारी

गतिविधि 9.4 — पूर्वाभ्यास एवं प्रतिक्रिया

- एक बार जब आप अपना गीत या गीतों का समूह चुन लें तो उसका अभ्यास कीजिए।
- यदि आप समूह के साथ प्रदर्शन कर रहे हैं तो एक साथ अभ्यास कीजिए ताकि सभी लोग अच्छा प्रदर्शन कर सकें।
- प्रथम अध्याय में आपके द्वारा सीखे गए तत्वों को उपयोग में लाने के तरीके खोजिए, जैसे— टुकड़ों या कैनन (बार-बारी से) में गाना या शरीर से ताल और समन्वय का उपयोग करना।
- यदि आप गायक हैं तो गीत के बोल, भावनाओं और कहानी के बारे में सोचिए, जिन्हें आप व्यक्त करना चाहते हैं।
- यदि आप वादक हैं तो इस बारे में सोचिए कि कैसे आप उतार-चढ़ाव और भावनाओं को अभिव्यक्त कर सकते हैं। यह समझने का प्रयास कीजिए कि कब आप मुख्य भूमिका में हैं और कब आप दूसरों का साथ दे रहे हैं।
- सभी प्रदर्शनकर्ताओं के लिए संगीत के भाग निर्धारित कीजिए। देखिए कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता का उपयोग कैसे कर रहा है और प्रदर्शन को बेहतर बना रहा है। यदि आपके पास वाद्ययंत्र नहीं हैं तो सोचिए कि आप प्रदर्शन का समर्थन अन्य किस प्रकार से कर सकते हैं। कुछ समय के लिए आप ताल देने के लिए एक छड़ी का भी उपयोग कर सकते हैं।
- आप जब तैयार हों तो अपने शिक्षक या किसी मित्र के सामने प्रदर्शन करें और उनकी प्रतिक्रिया माँगें। यह आपकी क्षमता को बढ़ाने और कमजोरियों पर काम करने में सहायता करेगा।
- प्राप्त हुई प्रतिक्रिया के आधार पर एक अभ्यास योजना बनाइए।

असम से ऑर्केस्ट्रा — कला उत्सव

गतिविधि 9.5 — निर्माण, प्रचार और सहयोग

एक सफल प्रदर्शन के लिए अभी और भी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है—

- आप मंच को अपनी विषयवस्तु के अनुरूप कैसे सुसज्जित कर सकते हैं?
- क्या प्रकाश और ध्वनि उपकरण की आवश्यकता है?

- आप प्रदर्शन स्थल का सर्वोत्तम उपयोग कैसे कर सकते हैं?
- क्या आपको किसी सहायक सामग्री की आवश्यकता होगी?
- क्या आपको घोषणा करने के लिए और दर्शकों को जोड़े रखने के लिए एक सूत्रधार (एंकर) की आवश्यकता है?

- क्या दर्शकों के लिए कुर्सियों की आवश्यकता होगी?
- सफल प्रदर्शन के लिए और क्या आवश्यक है? प्रत्येक बात की योजना बनाइए और तैयारी कीजिए।
- आप लोगों तक प्रदर्शन के बारे में सूचना का प्रचार कैसे करेंगे?

- क्या आप अपने विद्यालय में प्रत्येक जगह लगाने के लिए आकर्षक पोस्टर बना सकते हैं? इसके लिए आप अपनी दृश्य कला कक्षाओं से सहायता ले सकते हैं।
- क्या आप सोशल मीडिया पर अपने प्रदर्शन को बढ़ावा देने के लिए सामग्री तैयार कर सकते हैं?

भाग स — प्रदर्शन

गतिविधि 9.6 — अंतिम प्रदर्शन

अंतिम प्रदर्शन के दिन दर्शकों का स्वागत कीजिए और कार्यक्रम का परिचय दीजिए, प्रस्तुति का प्रदर्शन कीजिए और एक धन्यवाद संदेश के साथ इसे समाप्त कीजिए। प्रस्तुति को रिकॉर्ड करने का प्रयास कीजिए।

प्रस्तुति के पश्चात, अपने दर्शकों से प्रतिक्रिया प्राप्त कीजिए और अपने समूह के साथ इस पर चर्चा कीजिए।

बधाई हो! अब आप एक युवा कलाकार बन गए हैं।

एक संगीतमय प्रदर्शन चल रहा है

आकलन

अध्याय 9 — प्रदर्शन				
सी.जी.	**सी.**	**सीखने के प्रतिफल**	**अध्यापक**	**स्वयं**
3	3.1	आत्मविश्वास और सहयोग की भावना के साथ प्रदर्शन में स्वेच्छा से भाग लेता है।		
3	3.1	प्रदर्शन की योजना बनाने में सक्रिय भूमिका निभाता है, जिसमें प्रदर्शनों की सूची का चयन भी सम्मिलित है।		
3	3.1	अभ्यास और पूर्वाभ्यास के माध्यम से उत्साहपूर्वक प्रदर्शन की तैयारी करता है।		
3	3.2	तैयारी के दौरान एक पत्रिका का नियोजन करता है।		

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

संकलनात्मक आकलन

	संकलनात्मक आकलन के उदाहरण	संकलनात्मक आकलन के मानदंड
व्यक्तिगत	❖ विद्यार्थी से कहा जाता है कि वह दिए गए विषय पर एक गीत चुने और उसे प्रस्तुत करे। ❖ विद्यार्थी से कहा जाता है कि वह एक कहानी बनाए और उसे ध्वनि और संगीत से सजाए। ❖ विद्यार्थी से कहा जाता है कि वह आरोहण एवं अवरोहण के साथ एक सरल शास्त्रीय रचना प्रस्तुत करे और ताल का ध्यान रखे।	❖ स्वरों और ताल में सामंजस्य रखते हुए, उपयुक्त रूप से गाना चुनने और सहजता से गाने की क्षमता। ❖ रचनात्मकता, अभिव्यक्ति, संगीत चयन और समग्र प्रस्तुति। ❖ राग के सही स्वरों और ताल के साथ गाने की क्षमता।
समूह	❖ कक्षा एक प्रदर्शन की तैयारी करती है, जिसमें गानों के चयन की योजना बनाना, कार्यक्रम का प्रचार करना और आयोजन की अन्य योजनाएँ सम्मिलित होती हैं। ❖ कक्षा वर्षभर में सीखे गए गीतों को सम्मिलित करते हुए एक परिदृश्य प्रस्तुत करती है।	❖ रचनात्मक विचार, समन्वय, समूह और उत्साह।

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

अवलोकन

नृत्य और अंग संचालन

विना तु नृत्यशास्त्रेण चित्रसूत्रं सुदुर्विदम् ।।३।।

नृत्यशास्त्र के ज्ञान के परे, चित्रकला (या मूर्तिकला) के सिद्धांतों को समझ लेना अत्यंत जटिल है।

— विष्णुधर्मोत्तर पुराण

शिक्षकों के लिए

कृपया बच्चों को चलने और नृत्य करने के लिए पर्याप्त स्थान के साथ एक विशाल सभागार प्रदान करें, जो हवादार हो, साथ ही प्रकाश की उसमें उत्तम व्यवस्था हो। बच्चों को उनकी योग्यता के अनुसार सिद्धांतों को अपनाने के लिए प्रेरित करें। उन्हें समूह बनाने और समूह के रूप में कार्य करने में सहायता करें।

शैक्षणिक सिद्धांत

1. शारीरिक गतिविधियों को ज्यामितीय आकृतियों के संदर्भ एवं समझाने में बच्चों की सहायता करें, जिससे वे सहज और चुनौतीपूर्ण मुद्राओं को करने का प्रयास कर सकें।
2. कला और मूर्तिकला के परस्पर संबंध को समझना, विशेष रूप से शरीर और ज्यामितीय आकृतियों के संदर्भ में।
3. पैरों की गति एवं ताल पर ध्यान रखते हुए नृत्य की कुछ मूल इकाइयों को समझना, तालों की गणितीय विविधताओं और उसके संयोजनों का अन्वेषण करना।
4. नृत्य में उछलने और चक्कर लगाने का परिचय देना एवं बच्चों को विभिन्न प्रकार के उछलने का अभ्यास कराने में सहज बनाना। यह बच्चों के लिए शारीरिक रूप से लाभकारी होगा।
5. भावों की अभिव्यक्ति — बच्चे सकारात्मक एवं नकारात्मक, दोनों दृष्टि से स्वयं अपने भावों को अभिव्यक्त कर सकें, इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित करना, जिससे उनकी भावाभिव्यक्ति की क्षमता में विकास हो।
6. हस्त मुद्राओं का उपयोग संचार-माध्यम के रूप में करना।
7. भारतीय नृत्य-शैली, जिसमें शास्त्रीय और पारंपरिक रूप हैं, उसके बारे में जानना, जिससे भारत की सांस्कृतिक विविधता को समझा जा सके।
8. जेंडर संवेदनशीलता के साथ यह सीखना और समझना कि पारंपरिक नृत्यों की भूमिका निभाने में जेंडर की कोई बाध्यता न रहे।
9. समकालीन भारतीय नृत्य और लोकप्रिय संस्कृति में नृत्य के चलन का परिचय देना। गतियों के माध्यम से रचनात्मकता का अन्वेषण करना।
10. प्रसिद्ध भारतीय नृत्य कलाकारों के बारे में जानकारी प्राप्त करना और उन पर शोध करना।
11. नृत्य निर्माण में समूह कार्य और सहयोगात्मक प्रयास के महत्व को समझना।
12. प्रकृति का महत्व समझते हुए नृत्य और अंग-संचालन की संपूर्ण सराहना करना।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य और दक्षताएँ नीचे दी गई हैं—

सी.जी. 1 — विभिन्न कला रूपों के माध्यम से स्वयं को खोजने और अभिव्यक्त करने के प्रति स्पष्टता विकसित करना।

सी.1.1 — नृत्य एवं अंग-संचालन गतिविधियों की विविधता के माध्यम से, अपने व्यक्तिगत और दैनिक जीवन के अनुभवों को आत्मविश्वास के साथ व्यक्त करना।

सी. 1.2 — नृत्य और अंग-संचालन के अभ्यासों को सहयोगात्मक रूप से विकसित करने की प्रक्रिया में लचीलापन प्रदर्शित करना।

सी.जी. 2 — कला के माध्यम से वैकल्पिक विचारों की खोज करने के लिए अपनी कल्पना और रचनात्मकता का उपयोग करना।

सी. 2.1 — नृत्य एवं अंग-संचालन के ऐसे अनुक्रमों का निर्माण और प्रदर्शन करना, जो उनके आस-पास देखी जाने वाली रूढ़िवादिता को चुनौती देते हैं (जैसे कि जेंडर भूमिकाएँ)।

सी. 2.2 — नृत्य एवं अंग-संचालन, मुद्राओं, भावों और भंगिमाओं के तत्वों को व्यक्तिगत अनुभवों के साथ भावों और कल्पनाओं से जोड़ना।

सी.जी. 3 — कलात्मक तत्वों, प्रक्रियाओं और तकनीकों को समझना और प्रयोग करना।

सी. 3.1 — शिष्टाचारयुक्त मंच प्रदर्शन, मंच उपकरण, सहायक वस्तुओं और वस्त्रों की देखभाल का प्रदर्शन तथा नृत्य एवं अंग-संचालन तकनीकों का उपयोग करते समय विकल्प बनाना।

सी. 3.2 — योजना बनाने से लेकर अंतिम प्रस्तुति तक नृत्य और अंग-संचालन में प्रयोग किए गए विचारों तथा अभिव्यक्तियों की पुनर्रचना करना एवं पूरी प्रक्रिया की समीक्षा करना।

सी.जी. 4 — क्षेत्रीय कलाओं और सांस्कृतिक अभ्यासों में सौंदर्य अनुभूति के विभिन्न प्रकारों से स्वयं को परिचित करना।

सी. 4.1 — नृत्य एवं अंग-संचालन के विभिन्न स्थानीय एवं क्षेत्रीय रूपों से परिचित कराना और प्रदर्शित करना।

सी. 4.2 — अपने क्षेत्र और पूरे भारत के कुछ स्थानीय नर्तकों और संचारित कलाकारों के जीवन एवं कार्य का वर्णन करना।

10 नृत्य और मूर्तिकला

0780CH10

मूर्तिकला में नृत्यरत शरीर

विष्णुधर्मोत्तर पुराण विभिन्न कला रूपों के बीच अंतर्संबंध और अंतर्निर्भरता पर बल देता है।

लगभग 400 से 600 ईसवी के बीच, गुप्त काल जिसे भारतीय कलाओं का स्वर्ण युग भी कहा जाता है, के अंत में प्रदर्शन कला की स्थानिक अवधारणाओं के महत्व को समझा गया है।

इस ग्रंथ में, राजा वज्र और ऋषि मार्कंडेय के बीच चित्रकला और नाट्यकला पर एक चर्चित संवाद होता है। यह प्रदर्शन कला और दृश्य कला के बहुआयामी पारस्परिक संबंध को दर्शाता है।

ऋषि मार्कंडेय कहते हैं—

"जो व्यक्ति चित्रकला (चित्र) के नियमों को नहीं जानता, वह मूर्तिकला (शिल्प) के नियमों को नहीं समझ सकता और नृत्यकला (नृत्य) की तकनीक को जाने बिना, चित्रकला (चित्र) के नियमों को समझना कठिन है।"

ज्यामितीय आकारों की सूक्ष्मता, नृत्यकला और मूर्तिकला में संभवत: इसी अंतर्विषयक समझ के कारण विकसित हुई होगी।

एलोरा गुफाओं में नृत्य करते शिव की नक्काशी (महाराष्ट्र)

नृत्य में ज्यामितीय आकृतियाँ

नृत्य और गणित का जुड़ाव प्राय: एक-दूसरे से देखा गया है, जहाँ संतुलित और दृष्टिगत रूप से आकर्षक गतिविधियों को बनाने में ज्यामितीय आकृतियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

जब आप नृत्य में मुद्राओं का अवलोकन करते हैं तो आप शरीर द्वारा बनाई गई विभिन्न ज्यामितीय आकृतियाँ और कोण को पहचान सकते हैं, जैसे— त्रिभुज, वृत्त और रेखाएँ। नृत्य की गतिविधियों को आपने अपने विभिन्न शारीरिक अंगों के उपयोग के साथ देखा।

नृत्यकला-पाठ में शरीर के छोटे, मध्यम और बड़े अंगों का उल्लेख किया गया है।

आप शरीर के ऊपरी भाग को मुड़ने या धड़ द्वारा बनाए गए आकारों की पहचान से परिचित हैं।

ऊपरी धड़ से शारीरिक भंगिमाएँ बनाना

समाभंग | *द्विभंग* | *अभंग* | *त्रिभंग* | *अतीभंग*

भुजाएँ एवं कोण

आपने पहले अपने हाथों का उपयोग विभिन्न प्रकार से किया है, वृत्तों में घुमाया है, आधे वृत्त बनाए हैं, तिरछी रेखाएँ बनाई हैं। अब ध्यान दीजिए कि जब आप नृत्य में अपने हस्तों का उपयोग करते हैं तो वे कैसे विभिन्न ज्यामितीय कोण बनाते हैं।

शिक्षक के लिए निर्देश— इन क्रियाओं को ज्यामितीय पाठों से जोड़ने पर बच्चों को रेखाओं और कोणों की अवधारणा को एक आनंददायक विधि से समझने में सहायता मिलेगी। ज्यामिति के शिक्षक को भी इस पद्धति में सम्मिलित किया जा सकता है।

अब, समय है आपके निचले धड़ पर ध्यान केंद्रित करने और इसकी गतिविधियों और भंगिमाओं के माध्यम से बनने वाली ज्यामितीय आकृतियों का पता लगाने का—

घुटने को मोड़कर निचले धड़ से शारीरिक भंगिमाएँ बनाना

दोनों पैरों पर खड़े रहें, घुटने न मोड़ें।

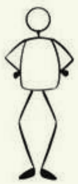
घुटनों को एक चौथाई मोड़ें।

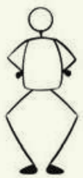
घुटनों को आधा मोड़ें।

घुटनों को तीन चौथाई मोड़ें।

पैर की अँगुलियों पर पूरी तरह बैठें।

पैरों के बीच की दूरी के साथ

दोनों पैरों पर एकसमान भार के साथ खड़े हों।

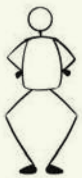
घुटनों को आधा मुड़ें और एड़ियाँ एक-दूसरे के पास हों।

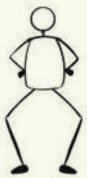
पैरों को अलग-अलग करके खड़े हों और चौकोर आकार बनाएँ।

पैरों को अधिकतम चौड़ाई पर रखें।

गतिविधि 10.1 — हमारा शरीर विभिन्न आकारों में

अपने ऊपरी तथा निचले धड़ एवं भुजाओं को मिलाकर विभिन्न आकृतियाँ और भंगिमाएँ बनाइ और मित्रों को आकृतियों की पहचान करने दें। वर्ग, त्रिभुज, आयत, समांतर रेखाएँ या समचतुर्भुज?

भरतनाट्यम

कथक

कथकली

गतिविधि 10.2 — नृत्य करती मूर्तियाँ

भारतीय मंदिरों की मूर्तियों में नृत्य का सुंदर चित्रण है। कुछ प्रमुख मंदिरों में तमिलनाडु का चिदंबरम मंदिर, ओडिशा का कोणार्क सूर्य मंदिर, राजस्थान का दिलवाड़ा मंदिर और महाराष्ट्र की एलिफेंटा गुफाएँ सम्मिलित हैं।

जैसा कि पहले विचार-विमर्श किया गया है, क्या आप नृत्य-चित्रों में ऊपरी और निचले धड़ के संयोजन को देख सकते हैं? क्या आप चित्रों में दिखाई गई मुद्राओं को कर सकते हैं?

क्या आप विभिन्न कोणों की पहचान कर सकते हैं? आप मूर्तिकला के चित्रों में कौन-से कोण पहचान सकते हैं?

क्या आपको कुछ मुद्राएँ दूसरों की तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण लगती है? आप एक ऐसी भंगिमा बनाने का प्रयास करें जो सरल हो और एक ऐसी जो चुनौतीपूर्ण हो?

1

2

3

4

5

6

7

बाएँ से दाएँ, ऊपर से नीचे —

1. नृत्य करती हुई हिंदू देवी, होयसलेश्वर कर्नाटक के हलेबिडु में मंदिर
2. कर्नाटक के हम्पी से नर्तकियाँ, कर्नाटक
3. जांजगीर चांपा का 11 वी सदी का विष्णुमंदिर, छत्तीसगढ़
4. होयसलेश्वर में हिंदू मंदिर हलेबिडु, कर्नाटक
5. नृत्य करते शिव, केदारेश्वर मंदिर, हलेबिडु, कर्नाटक
6. जैन मंदिर, हरिद्वार, उत्तराखंड
7. महिला नर्तकी, सूर्य मंदिर कोणार्क, ओडिशा

हस्त मुद्राएँ

आपने कृति, कक्षा 6 में असम्युता हस्त (एकल हस्त मुद्राएँ) और सम्युता हस्त (संयुक्त हस्त मुद्राएँ) मुद्राओं के बारे में सीखा होगा, उन हस्त मुद्राओं का स्मरण करें।

असम्युता हस्त (एकल हस्त मुद्राएँ)

पताका

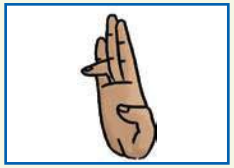
त्रिपताका

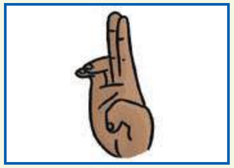
अर्धपताका

कर्तरीमुख

मयूरा

अर्धचंद्र

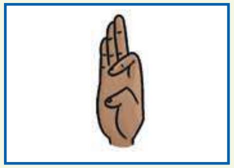
अराल

शुकतुंड

मुष्टि

शिखर

कपित्थ

कटकामुख

सूचि

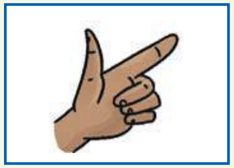
चंद्रकला

पद्मकोश

सर्पशीर्ष

मृगशिरशा

सिंहमुखं

कांगूल

अलपद्म

चतुर

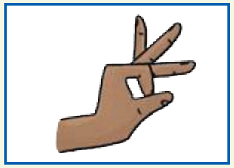
भ्रमर

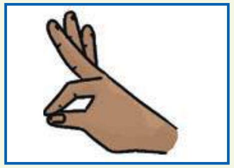
हंसास्य

हंसपक्ष

समदमशा

मुकुला

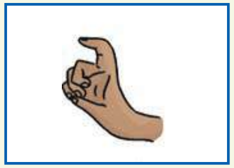
ताम्रचूड

त्रिशूल

सम्युता हस्त (संयुक्त हस्त मुद्राएँ)

अंजलि

कपोत

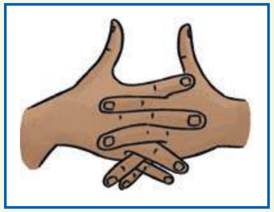
कर्कट

स्वास्तिक

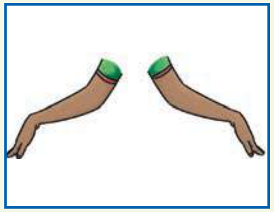
डोला

पुष्पपुट

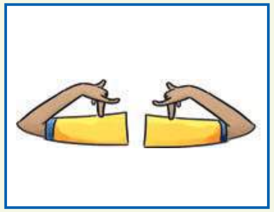
उत्संग

शिवलिंग

कटकवर्धन

कर्तरीस्वास्तिक

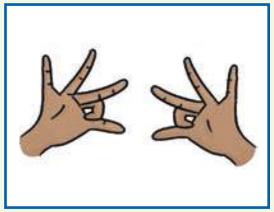
शकट

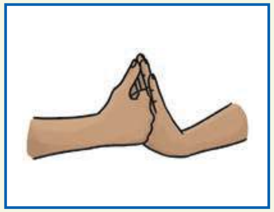
शंख

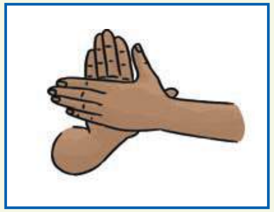
चक्र

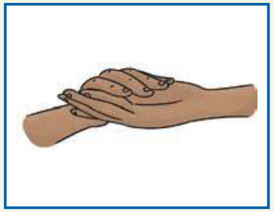
संपूट

पाश

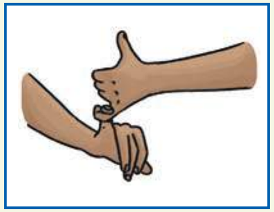
कीलक

मत्स्य

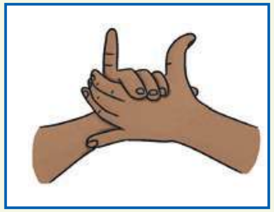
कूर्म

वराह

गरुड़

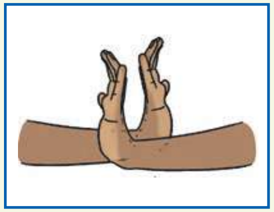
नागबंध

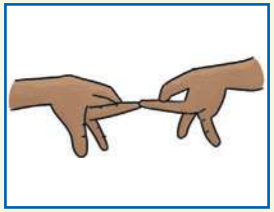
खट्वा

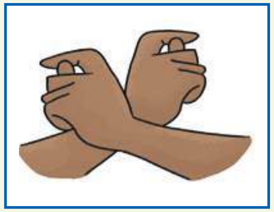
बेरूंडा

अवहित्त

गतिविधि 10.3 — मूर्तिकला में हस्त मुद्राएँ

भारतीय मूर्तिकला अपने उत्कृष्ट कला-कौशल को जटिल मुद्राओं, अभिव्यक्तिपूर्ण भावों और सुशोभित हस्तों (हस्त की मुद्राओं) के माध्यम से दर्शाती है। मूर्तिकला में प्रयुक्त हस्त मुद्राएँ, बिना शब्दों के प्रयोग के, शरीर की सौंदर्यता को दर्शाने के साथ-साथ भावों को प्रभावी रूप से व्यक्त करने का माध्यम बनती हैं।

क्या आप नीचे दी गई मूर्तिकलाओं में हस्त मुद्राएँ देख सकते हैं? इन्हें स्वयं करके देखें और पता लगाएँ कि क्या आप इन्हें हस्त मुद्राओं की चित्रावलियों से मिला सकते हैं? यह समझना महत्वपूर्ण है कि ये हस्त मुद्राएँ नृत्यकला ग्रंथों से ली गई हैं, मूर्तिकला ग्रंथों में कुछ हस्त मुद्राओं के नाम अलग हैं।

अपने मित्रों के साथ इस पर विचार-विमर्श करें, देखी गई हस्त मुद्राओं को करने और कुछ नई मुद्राओं को बनाने का प्रयास करें।

नवरस — नौ रसों की अनुभूति

भाव और अभिव्यक्ति भारतीय नृत्य का एक अभिन्न भाग है। ये मूल भाव एक भावनात्मक वातावरण उत्पन्न करता है, जिसका आनंद सभी हैं। यही रस है।

शृङ्गारहास्यकरुणा रौद्रवीरभयानकाः ।
बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः ॥ १५॥

श्रृंगार -हास्य-करुणा-रौद्र-वीर-भयानकाः।
विभत्साऽद्भुत-सञ्ज्ञौ चेत् अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः॥

— नाट्यशास्त्र

सौंदर्य (श्रृंगार), हँसी (हास्य), करुणा (दया), क्रोध (रौद्र), वीर, भय (भयानक), घृणा (वीभत्स) और आश्चर्य (अद्भुत) — ये नाट्यशास्त्र में वर्णित आठ रस हैं।

यह श्लोक *नाट्यशास्त्र* से लिया गया है, जो आठ रसों के बारे में बताता है। नौवाँ रस 'शांत' को 10वीं शताब्दी में अभिनवगुप्त के द्वारा जोड़ा गया था।

क्या आपको याद है कि *कृति* कक्षा 6 में हमने इन नवरसों के नाम सीखे थे? क्या आपको उन्हें अभिव्यक्त करना याद है?

आइए, हम नवरसों और उनकी अभिव्यक्तियों को स्मरण करते हैं—

जब आप सुंदर फूलों की सुगंध को सूँघते हैं तो आपको कैसा अनुभव होता है?— श्रृंगार (प्रेम भाव)।

क्या गिलहरियों को एक-दूसरे के पीछे भागते देखकर आपको प्रसन्नता होती है और आपके चेहरे पर मुस्कान आ जाती है?— हास्य (हँसी या आनंद)।

जब कोई सुंदर फूलों को नष्ट कर देता है तो क्या आपको दुख होता है?— करुणा (दया/ दुख)।

जब कोई बगीचे के पेड़ों को काट देता है तो क्या आपको क्रोध आता है?— रौद्र (क्रोध)

आप साहसपूर्वक पेड़-पौधों के विनाश को रोकने के लिए विरोध में खड़े होते हैं— वीर (साहस)।

बगीचे में खतरा हो सकता हैं। मान लीजिए कि एक पेड़ की शाखाओं में साँप है, क्या आपको भय लगता है?— भयानक (भय)।

बगीचे में कुछ पौधें सड़ रहे हैं और दुर्भाग्यवश, वे एक तीव्र दुर्गंध छोड़ते हैं जो आपको घृणा दे सकती है।— वीभत्स (घृणा)।

क्या आपको प्रकृति की सुंदरता हमेशा आश्चर्यचकित करती है।— अद्‌भुत (आश्चर्य)।

आइए, हम सभी प्रकृति में शांति प्राप्त करें।— शांत (शांति)।

गतिविधि 10.4 — हमारी दैनिक दिनचर्याओं के साथ भावों का मिलान

सामग्री

दो कटोरों में पर्ची लें।

- कटोरा 1— नौ रसों की अवस्थाएँ (प्रसन्नता, उदासी, क्रोध, आश्चर्य, डर, उत्साह, शांत, भ्रमित, गर्व)।
- कटोरा 2— दैनिक गतिविधियाँ (जैसे— दाँत ब्रश करना, कपड़े पहनना, स्कूल जाना, दोपहर का भोजन करना, गृहकार्य करना, योग करना)।

निर्देश

1. प्रत्येक बच्चा, कटोरा 1 और कटोरा 2 से एक-एक पर्ची उठाता है।
2. बच्चा फिर उठाई पर्ची की दैनिक गतिविधि का अभिनय करता है, वह उसे उस भावनात्मक अवस्था के साथ निभाता है, जो दूसरी पर्ची से निकली है।

इस विधि को प्रभावशाली बनाने के लिए हस्त मुद्राओं का उपयोग करें।

उदाहरण के लिए—यदि आपने कटोरा 1 से 'भ्रमित' भावनात्मक अवस्था और कटोरा 2 से 'गृहकार्य' गतिविधि निकाली है तो उसे ऐसे प्रस्तुत करें जैसे आपको गृहकार्य करने की इच्छा तो हैं, लेकिन अभी नहीं करना चाहते (आप अपने सर को खुजा सकते है, कलम को छोड़ कर पुन: उठा सकते हैं, किताब को बंद कर पुन: खोल सकते हैं)।

आकलन

अध्याय 10 — नृत्य और मूर्तिकला				
सी.जी.	सी.	सीखने के प्रतिफल	शिक्षक	स्वयं
1	1.1	नृत्य में ऊपरी और निचले धड़ के उपयोग को समझना।		
1	1.2	शरीर द्वारा निर्मित ज्यामितीय आकृतियों को समझना।		
1	1.2	आत्मविश्वास से रस-भावों को व्यक्त करना।		
2	2.1	मूर्तिकला से संबंधित।		
2	2.2	मूर्तिकला में हस्त मुद्राओं को समझना।		

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी के अवलोकन

----

11 नृत्य शब्दावली और तकनीक

0780CH11

नृत्त, नृत्य एवं नाट्य

नृत्य में कई इकाइयाँ सम्मिलित हैं जो एक-दूसरे के साथ सुंदरता से जुड़ी हुई हैं। कुछ में केवल आनंदपूर्ण गतियाँ होती हैं तो कुछ में कहानी या परिस्थिति का वर्णन होता है और कुछ में पूरी कहानी होती है। नीचे नृत्त, नृत्य और नाट्य की परिभाषाएँ *अभिनय दर्पण* नामक ग्रंथ से ली गई है, जो शास्त्रीय नर्तकों द्वारा व्यापक रूप से अनुसरण किया जाने वाला ग्रंथ है।

नृत्तं — भावाभिनयहीनं तु नृत्तमित्यभिधीयते ॥ १५॥

नृत्त में केवल गतियों वाला नृत्य होता है, जिसमें कोई विशिष्ट भावात्मक विषयवस्तु या कथा नहीं होती।

नृत्यं — रसभावव्यञ्जनादियुक्तं नृत्यमितीर्यते ॥ १६॥

नृत्यकला रस एवं भाव के साथ नृत्य को कहानी कथन या परिस्थिति के साथ जोड़ती है।

नाट्यं — नाट्यं तन्नाटकं चैव पूज्यं पूर्वकथायुतम् ।

नाट्य एक नृत्य नाटक है, जिसमें प्रदर्शन के सभी पहलुओं को एकीकृत कर एक पूरी कहानी व्यक्त की जाती है।

इस अध्याय में आप नृत्त और नृत्य की कुछ शब्दावलियों का अन्वेषण करेंगे।

किसी नृत्य शैली की सबसे महत्वपूर्ण इकाई मूल चरण हैं, जिन्हें सीखना आवश्यक है। ये चरण नृत्य शब्द भंडार को बनाते हैं। फिर विभिन्न चरणों को एक साथ जोड़कर नृत्य बनाया जाता है।

नृत्त

गतिविधि 11.1 — मूल चरण एवं लय-नृत्त

आप अपनी पिछली कक्षाओं से चरण और लय के बारें में सीखते चले आ रहे हैं, अब कुछ अलग लयबद्ध मात्रा, यानी 5, 6 और 7 मात्रा को समझने का प्रयास करें। इसमें कुछ क्रम परिवर्तन और संयोजन जोड़ें। नीचे कुछ विभिन्न तालों की खोज करते हुए चरणों के सुझाए गए संयोजन दिए गए हैं। क्या आप इन्हें विभिन्न लय के साथ अपने स्वयं के चरण संयोजन का प्रयास कर सकते हैं?

पैरों का उपयोग विभिन्न प्रकार से किया जा सकता है, जिनका विवरण नीचे दिया गया है—

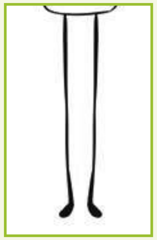

पैर
एक साथ

एड़ी — सामने,
बगल

पैर का
उँगलियाँ —
आगे और पीछे

सामने
क्रॉस करें

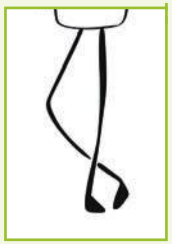

पीछे क्रॉस
करें

एक पैर ऊपर
उठाकर कूदें

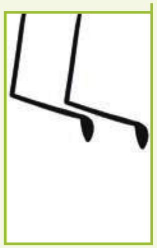

दोनों पैरों से
कूदें

आप अपने नृत्य को उत्तम बनाने के लिए इन पैर की स्थितियों और गतियों का उपयोग करेंगे।

शिक्षक के लिए निर्देश— सुझावात्मक चरण संयोजन पृष्ठ 118 पर दिए गए हैं। वास्तविक अभ्यास क्षेत्र, सीखने के स्तर, उपयुक्तता और सुविधा के आधार पर किया जा सकता है। आरंभ में बच्चे शिक्षक द्वारा तय किए गए सरल चरणों के साथ लय का प्रयास कर सकते हैं। गिनती और ताल को उत्तम ढंग से समझने के लिए इसे गणित के साथ जोड़ा जा सकता है। बोल (लयबद्ध शब्दांश) और मात्रा की गिनती शिक्षक या बच्चों द्वारा निश्चित की जा सकती है।

पाँच मात्रा 2 और 3 मात्रा का संयोजन है

उदाहरण के लिए, 5 मात्रा या कदम संख्या

1	2	3	4	5

कदम संयोजन 1

दाहिने पैर से आरंभ करें

दाएँ	बाएँ	दाएँ	बाएँ	दाएँ
पैर की थाप	पैर की थाप	एड़ी	पैर की थाप	पैर की थाप

अब बाएँ पैर से दोहराएँ

बाएँ	दाएँ	बाएँ	दाएँ	बाएँ
पैर की थाप	पैर की थाप	एड़ी	पैर की थाप	पैर की थाप

कदम संयोजन 2

दाहिने पैर से आरंभ करें

दाएँ	दाएँ	बाएँ	दाएँ	बाएँ
उछलना	कदम	क्रॉस	कदम	पैर की थाप

अब बाएँ पैर से दोहराएँ

बाएँ	बाएँ	दाएँ	बाएँ	दाएँ
उछलना	कदम	क्रॉस	कदम	पैर की थाप

उपरोक्त पाँच मात्रा कदम के संयोजन की तरह, एड़ी को आगे, एड़ी को बगल में तथा अन्य विविधताओं के साथ अधिक कदम को संयोजित करें।

छह मात्रा दो बार तीन मात्रा का संयोजन है (3 + 3)

उदाहरण के लिए, छह मात्रा या कदम संख्या

1	2	3	4	5	6

कदम संयोजन 1

दाहिने पैर से आरंभ करें

दाएँ	बाएँ	दाएँ	बाएँ	दाएँ	बाएँ
पैर की उँगलियों को क्रॉस करना	पैर की थाप	एड़ी आगे	पैर की थाप	पैर की थाप	पैर की थाप

अब बाएँ पैर से दोहराएँ

बाएँ	दाएँ	बाएँ	दाएँ	बाएँ	दाएँ
पैर की उँगलियों को क्रॉस करना	पैर की थाप	एड़ी आगे	पैर की थाप	पैर की थाप	पैर की थाप

कदम संयोजन 2

दाहिने पैर से आरंभ करें

दाएँ	बाएँ	दाएँ	दाएँ	बाएँ	दाएँ
एड़ी	पैर की थाप	पैर की थाप	पैर की उँगलियों को क्रॉस करना	पैर की थाप	पैर की थाप

अब बाएँ पैर से दोहराएँ

बाएँ	दाएँ	बाएँ	बाएँ	दाएँ	दाएँ
एड़ी	पैर की थाप	पैर की थाप	पैर की उँगलियों को क्रॉस करना	पैर की थाप	पैर की थाप

उपरोक्त उदाहरण का अनुसरण करें और पैर की गतिविधियों के विभिन्न संयोजनों का प्रयास करें।

सात मात्रा तीन बार चार मात्रा का संयोजन है (3 + 2 + 2) या (4 + 3)

उदाहरण के लिए, सात मात्रा या कदम संख्या

1	2	3	4	5	6	7

कदम संयोजन 1

दाहिने पैर से आरंभ करें

दाएँ	बाएँ	दाएँ	बाएँ	बाएँ	दाएँ	दाएँ
पैर की थाप	पंजा	पैर की थाप	एड़ी	पैर की थाप	एड़ी	पैर की थाप

अब बाएँ पैर से दोहराएँ

बाएँ	दाएँ	बाएँ	दाएँ	दाएँ	बाएँ	बाएँ
पैर की थाप	पंजा	पैर की थाप	एड़ी	पैर की थाप	एड़ी	पैर की थाप

कदम संयोजन 2

दाहिने पैर से आरंभ करें

दाएँ	बाएँ	दाएँ	बाएँ	दाएँ	बाएँ	दाएँ
एड़ी	पैर की थाप	पैर की थाप	क्रॉस	पैर की थाप	पैर की थाप	पैर की थाप

अब बाएँ पैर से दोहराएँ

बाएँ	दाएँ	बाएँ	दाएँ	बाएँ	दाएँ	बाएँ
एड़ी	पैर की थाप	पैर की थाप	क्रॉस	पैर की थाप	पैर की थाप	पैर की थाप

ऊपर बताई गई लय का अभ्यास अलग-अलग स्वरूप में करें। आप संगीत कक्षा में दी गई गायन बंदिशों का उपयोग कर सकते हैं और अपनी पसंद के अनुसार हस्त गति भी जोड़ सकते हैं।

नृत्य

कृति कक्षा 6 की पाठ्यपुस्तक का आरंभ आपने *अभिनय दर्पण* के एक श्लोक से किया था जिसमें हस्त के हाव-भाव के प्रयोग की अवधारणा को दिया गया था। यह सफल प्रदर्शन के लिए रसों को जाग्रत करने हेतु भाव में मन की एकाग्रता और कथन से जुड़ा है। आइए, अब हम आपके नृत्य को प्रस्तुत करने के लिए श्लोक और उसके अर्थ को फिर से दोहराते हैं।

यतो हस्त स्ततो दृष्टि । यतो दृष्टि स्ततो मनः
यतो मनः स्ततो भावः । यतो भाव स्ततो रसः

जहाँ हस्त होता है वहीं दृष्टि होती है, जहाँ दृष्टि होती है वहाँ मन होता है, जहाँ मन होता है, वहीं पर भाव होता है, जहाँ भाव होता है, वहीं रस होता है।

क्या आप इसे पहले दिए गए नृत्य के वर्णन से जोड़ सकते हैं?

नृत्य

हस्त प्रयोग द्वारा बातचीत

अध्याय 1 में आपने सीखा कि कैसे हस्तों का उपयोग मूर्तियों में भावों को व्यक्त करने और विशिष्ट संदेश संप्रेषित करने के लिए कुशलता से किया जाता था। ये हस्त दृश्य और प्रतीकात्मक विधियों से भावों और कथाओं को चित्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आप असम्युता हस्त के प्रयोगों से परिचित हैं, जो आपने पहले भी सीखा है।

— कृपया असम्युता हस्त के प्रयोग के लिए कृति कक्षा 6 की पाठ्यपुस्तक देखें।

गतिविधि 11.2

आइए, अब समझें कि आप संयुक्त हस्तों का किस प्रकार से उपयोग कर सकते हैं। यहाँ विभिन्न उपयोगों वाले कुछ संयुक्त हस्त दिए गए हैं।

नाम : अंजलि

उपयोग

- नमस्कार

नाम : कर्कट

उपयोग

- लोगों का समूह
- उदर दर्शाएँ
- अंगों को मोड़ें और खींचें

नाम : पुष्पपुट

उपयोग

- पुष्प अर्पण
- जलपान
- वस्तु ग्रहण
- आरती

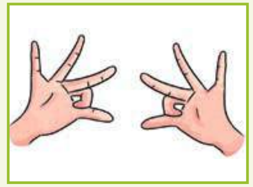

नाम : शकट

उपयोग

- क्रोध
- असुर

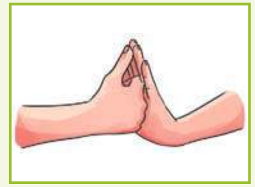

नाम : शंख

उपयोग

- शंख फूँकना

नाम : पाश

उपयोग

- मतभेद
- कसी हुई गांठ
- सांकल

नाम : कीलक

उपयोग

- मित्रता
- स्नेह

नाम : सम्पूता

उपयोग

- वस्तु को छुपाना
- पासा पलटना

नाम : मत्स्य

उपयोग

- मछली

नाम : गरुड़

उपयोग

- बाज
- चिड़िया

गतिविधि 11.3

अब कक्षा में असंयुक्त और संयुक्त हस्तों की वर्तनी या भाषा का उपयोग करके बातचीत करें (कक्षा 6 से असंयुक्त हस्तों के उपयोगों का संदर्भ लें)।

अपने मित्रों के सम्मुख असंयुक्त और संयुक्त, दोनों हस्तों का उपयोग करके एक सार्थक वाक्य का प्रदर्शन करें और उन्हें इसके अर्थ का अनुमान लगाने दें।

पहले छोटे वाक्यांश उपयोग करें, जैसे—

मेरे मित्र आपका स्वागत है

स्वागत है

मेरे मित्र

हम साथ हैं

हम हैं

साथ

लड़ाई एवं क्रोध न करें

न करें

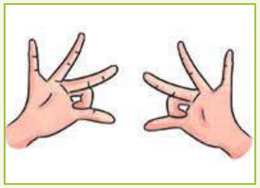
क्रोध

लड़ाई

यहाँ वन में हिरण था

वन में

यहाँ था

हिरण

यहाँ नदी में मछलियाँ हैं

यहाँ हैं

मछलियाँ

नदी में

अब मिलकर पूर्ण वाक्य बनाइए। आप दोनों हस्त संकेतों से अपनी रचनात्मकता को दिखा सकते हैं।

उदाहरण—

- स्वागत है मेरे मित्र। क्रोध एवं लड़ाई न करें, चलो साथ में खेलते हैं।
- वन में एक हिरण था, उड़ती हुई चिड़िया और मछलियाँ थीं।

आनंदमयी बातचीत करें —

1. क्या आप कराटे जानते हैं? आओ मित्र, चलो गेंद से खेलते हैं।
2. क्या आपको अनुभव किया कि यह संचार की एक महत्वपूर्ण विधि हो सकता है?

शिक्षक के लिए निर्देश– शिक्षक द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी को वाक्य दिया जा सकता है।

उछलना और पैर की उँगलियों पर घूमना (चक्कर लगाना)

आप नृत्य में कितनी विधियों से कूद और घूम सकते हैं?

उछाल, उत्प्लावन, पैर की उँगलियों पर घूमना और भ्रामरी (चक्कर) नृत्य प्रदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उछाल और पैर की उँगलियों पर घूमने का निष्पादन नृत्य शब्दावली की एक और इकाई है, जिसका उपयोग शुद्ध नृत्य में या भावनात्मक सामग्री को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

उछाल और पैर की उँगलियों पर घूमने का दोनों को संगीत की लय के साथ किया जा सकता है, जिससे नृत्य का समग्र प्रभाव बढ़ जाता है। नृत्य, कहानियों के साथ बिना लय के हो सकता है।

यक्षगान में उछाल और पैरों की उँगलियों पर नृत्य

गतिविधि 11.4 — उछलने और घूमने के साथ अपने नृत्य को बढ़ाएँ

आपने खेलते समय, नृत्य करते समय या दैनिक गतिविधियों में भाग लेते समय उछलना और घूमना किया होगा। नीचे कुछ उदाहरण उछलने और घूमने के लिए दिए गए हैं।

उछलना

एक पैर उठाकर उछाल

एक पैर को आगे की ओर ले जाने के लिए उछाल

दोनों पैरों को पीछे मोड़कर उछाल

पैरों को मोड़े बिना उछाल

सोचें, कूदें और अपने मित्रों के साथ घूमें (चक्कर लगाएँ)।

चक्रदार

एक पैर पर घूमना

दोनों हाथों को हवा में फैलाकर घूमना

नृत्य में उछाल की विभिन्न शैलियाँ

जानवरों की छलांगें और पैर की उँगलियों पर घूमना

अवलोकन करें कि विभिन्न जानवर अपनी प्राकृतिक गतियों में कैसे छलाँगें और चक्कर लगाते हैं, उदाहरण के लिए—

बंदर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कैसे छलाँग लगाता है?

कैसे बिल्ली धीरे से भूमि पर उतरने के लिए सहजता से उछलती-कूदती है?

खरगोश और कंगारू ऐसे कूदते हैं लगता है जैसे उनके पैरों में स्प्रिंग लगी है।

मयूर कितनी सुंदरता से अपने पंख फैलाते हुए चक्कर लगाता है।

यह अंग-संचालन हमारे लोक, पारंपरिक और शास्त्रीय नृत्य रूपों का अभिन्न अंग हैं। कर्नाटक के यक्षगान में, कलाकार खड़े होकर और घुटनों के बल पर नृत्य करते हैं, प्राय: वे इसे अलग-अलग समय में करते हैं। कालबेलिया, राजस्थान का एक पारंपरिक नृत्य है, जिसमें वृत्ताकार गति में नृत्य किया जाता है, गोलाकार पथ पर नृत्य करते हुए नृत्य किया जाता है। मणिपुर के पुंग चोलोम नृत्य में ढोल बजाने वाले ढोल पकड़कर उछलते और घूमते हैं और उत्तर भारत के शास्त्रीय नृत्य रूप कथक की विशेषता नर्तक द्वारा किए जाने वाले चक्करों से होती है।

यक्षगान में उछलना

कालबेलिया में पैर की उँगलियों पर चक्कर लगाना

पुंग चोलोम बजाते हुए उछलना और चक्कर लगाना

छत्तीसगढ़ की नृत्य शैली ककसार नृत्य (गोलाकार कतार में नृत्य)

कथक में चक्रदार

गतिविधि 11.5

नीचे दिए गए नृत्य रूपों को खोजें और देखें। चर्चा करें और चिह्नित करें कि क्या वे उछलना, पैर की उँगलियों पर घूमना या दोनों में सम्मिलित हैं।

नृत्य रूप	उछलना	पैर की उँगलियों पर घूमना
अरुणाचल प्रदेश से अंजी लामू		
छत्तीसगढ़ से छेरछेरा		
तमिलनाडु से पोइक्कल कुथितई अट्टम		
हरियाणा से गूगा घमोड़ा		
लद्दाख से चाम		
गोवा से फुगड़ी नृत्य		

विद्यार्थियों को चार समूहों में विभाजित करें एवं प्रत्येक समूह कुछ इस प्रकार उछलना और पैर की उँगलियों पर घूमने का प्रयास करें, जैसा आपने इन नृत्यों में देखा है।

गतिविधि 11.6 — कथा वाचन

स्वयं के नृत्य तकनीकों के साथ कथा वाचन

अब जब आप मूल चरण सीख चुके हैं तो स्थिति के आधार पर, भावों को उचित रूप से व्यक्त करते हुए, हस्तकों के प्रभावी उपयोग को उछलने और पिरौएट से जोड़ें। सभी तत्वों को समाविष्ट करते हुए स्थितियों का अनुक्रम बनाएँ और इसे संकेत के माध्यम से कुशलता से व्यक्त करें।

खेल का समय — मुकाभिनय

दो समूह को बनाएँ। पहला समूह भावों और हस्तों के संकेतों का उपयोग करके एक छोटी स्थिति का अभिनय करेगा। दूसरे समूह को स्थिति का अनुमान लगाना है। कुछ देर तक के लिए खेल जारी रखें और फिर विजेता समूह का चयन करें।

यह बहुत आनंदमयी होगा।

शिक्षकों के लिए निर्देश— बच्चों को उनके स्तर और क्षमता के आधार पर विभिन्न परिस्थितियों का सुझाव दें।

आकलन

अध्याय 11 — नृत्य शब्दावली और तकनीक				
सी.जी.	सी.	सीखने के प्रतिफल	शिक्षक	स्वयं
1	1.1	गति के लिए पैरों के विभिन्न भागों को संयोजित करने की मूलभूत तकनीकों का ज्ञान।		
1	1.2	मूलभूत नृत्य चरणों का अभ्यास करने के लिए उपयोग किए जाने वाले लयबद्ध तत्वों का ज्ञान।		
1	1.2	संचार के साधन के रूप में हस्त-मुद्राओं या संकेतों के महत्व का ज्ञान।		
2	2.2	उछलने और घूमने का अभ्यास करने में सहज अनुभव करना।		
2	2.2	विभिन्न नृत्यों में उछलने और घूमने को सह-संबंधित करना।		
2	2.2	स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए सभी तकनीकों का उपयोग करना।		

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी के अवलोकन

----

12 आप, नृत्य और रचनात्मकता

0780CH12

नृत्य में कटि-संचलन

ऊपरी धड़, निचले धड़, हस्त एवं पैरों की गतियों का अन्वेषण करने के बाद अब आप नाट्यशास्त्र में उल्लिखित अन्य अंगों— नितंबों और कटि की गतियों से परिचित होंगे।

नितंबों की गतियाँ भारतीय नृत्य परंपराओं में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये ताल, लय और गीत की भावना को व्यक्त करने में सहायक होती हैं। यद्यपि इनकी विशिष्ट उपयोगिता और शैली प्रत्येक नृत्य शैली में भिन्न होती है, फिर भी इनकी गति में लयात्मकता, सटीकता और सहज प्रवाह होता है। नीचे भारतीय नृत्य परंपराओं में समाहित विभिन्न प्रकार की नितंबों की गतियाँ दी गई हैं—

नितंबों का घुमाव

गरबा नृत्य में नितंबों के घुमाव की गति का प्रयोग होता है, जिसमें शरीर को घुमाने की एक विशिष्ट शैली ग्रहण की जाती है।

एक ओर से दूसरी ओर

हमारे देश के कई लोक नृत्यों में नितंबों की एक ओर से दूसरी ओर की गति देखी जा सकती है। उदाहरण के लिए, कालबेलिया नृत्य में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

आगे और पीछे

कुछ भारतीय नृत्य परंपराओं में नितंबों की आगे और पीछे की गति देखने को मिलती है। आप इस तरह की गति को बीहू और छऊ जैसे नृत्यों में देख सकते हैं।

परिपत्र

आप हुला हूप को कैसे घुमाते हैं? क्या आपने इसे उपयोग करते समय नितंबों की घूर्णन गति को देखा है? उदाहरण के लिए, क्या सर्प नृत्य में नितंबों की गोल घूमने वाली गति हो सकती है?

राजस्थान का सपेरा नृत्य

हुला हूप

गतिविधि 12.1 — नितंबों की गति के साथ नृत्य

अब विभिन्न भारतीय नृत्य शैलियों में नितंबों की गतियों को ध्यान से देखें और उन्हें दोहराने का प्रयास करें। स्वयं के किसी पात्र या जानवर पर आधारित नृत्य बनाएँ और उसमें उपयुक्त नितंबों की गतियाँ जोड़ें।

विद्यार्थी नितंबों की गति अनुसार नृत्य का अभ्यास करते हुए

शिक्षकों के लिए निर्देश— कुछ नृत्य रूपों को देखने की एक गतिविधि आयोजित करें और विद्यार्थियों को समूहों में बाँट दें। वे नृत्य में नितंबों की गतियों के विभिन्न तरीकों की पहचान कर सकते हैं। अध्याय की शुरुआत में दिए गए क्यूआर कोड में इन गतियों के वीडियो लिंक भी उपलब्ध हैं।

सीमाओं से परे परंपरा और परिवर्तन

वेदांतम सत्यनारायण शर्मा

एकल परंपराओं में एकल नर्तक विभिन्न पात्रों की भूमिका निभाता है और एक चरित्र से दूसरे चरित्र में स्थानांतरित होता है। पूरे भारत में महिला नर्तकों की एक प्रबल परंपरा रही है, जिन्होंने कथाएँ और कविताएँ अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत की हैं तथा विभिन्न भूमिकाएँ निभाई हैं। साथ ही, ऐसे पुरुष नर्तक भी रहे हैं जो कभी-कभी महिला वेश-भूषा धारण करके प्रदर्शन करते थे। इसी प्रकार के एक प्रसिद्ध 'कुचिपुड़ी नर्तक' हैं, वेदांतम सत्यनारायण शर्मा, जिन्होंने महिला वेश में नृत्य प्रस्तुत किया।

परंपरागत नृत्य— नाट्य परंपराओं में पुरुष नर्तक प्राय: महिला पात्रों की भूमिका ग्रहण करते हैं और उनके वस्त्र ही उस चरित्र की प्रस्तुति निर्धारित करते हैं। कुछ नृत्य परंपराएँ, जैसे— छऊ (जिसके बारे में हमने *कृति* कक्षा 6 में सीखा), पात्रों के अभिनय के लिए मुखौटे भी उपयोग करती हैं।

हम ऐसी दो और परंपरागत प्रदर्शन कलाओं के बारे में जानेंगे जिनमें पुरुष पारंपरिक रूप से महिला पात्र निभाते आए हैं, यद्यपि अब दोनों परंपराएँ अपने अभ्यास में महिलाओं का भी स्वागत कर रही हैं।

मेलत्तूर, तमिलनाडु से भगवता मेला नाटकम्

एन. श्रीकंठ नटराजन

यह दक्षिण भारत की एक नृत्य-नाट्य परंपरा है। आंध्र प्रदेश के कुचिपुड़ी गाँव में इस शैली की उत्पत्ति हुई, जहाँ मुख्य नायक तीर्थ नारायण याति और सिद्धेंद्र योगी थे। विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद कुछ भगवतर आंध्र से मेलत्तूर, थंजावुर चले आए, जिन्हें नायक शासकों ने संरक्षण दिया और इस प्रकार मेलत्तूर परंपरा आरंभ हुई। प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान गोपाल कृष्ण शास्त्री और उनके पुत्र वेंकटरामा शास्त्री, संत नारायण तीर्थ याति के शिष्य बने। संरक्षक आच्युतप्पा नायक और सेवप्पा नायक ने इन ब्राह्मणों को मेलत्तूर गाँव भेंट किया और यह कलाओं का एक केंद्र बन गया। बीसवीं शताब्दी की आरंभिक अवधि में सबसे प्रसिद्ध भगवतर नटेश अय्यर थे और उनकी मृत्यु के पश्चात इस मंडली का संचालन जी. स्वामीनाथन ने किया। अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तित्व बालू भगवतर और टी.वी. नटेश भगवतर थे। ई. कृष्ण अय्यर ने 1950 में मद्रास म्यूजिक अकादमी के साथ इस परंपरा के पुनरुद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मुख्य प्रस्तुति मई या जून में नरसिंह जयंती के अवसर पर वरदराजा परुमल मंदिर में 'प्रह्लाद चरितम्' के नाम से होती थी। पारंपरिक रूप से पुरुष नर्तक ही स्त्रियों की भूमिका निभाते हैं।

असम का अंकिया भाव

अंकिया नाट्य एक नृत्य-नाटक परंपरा है जो असम से उत्पन्न हुई। यह पंद्रहवीं शताब्दी ईस्वी में विकसित हुई। वैष्णववाद के गायन और नृत्य की परंपरा के बाद, नामघर और सतत्र स्थापित किए गए, जहाँ भक्तों ने भागवत पुराण के माध्यम से संगीत और नृत्य के माध्यम से कहानियाँ सुनाई। अंकिया नाट की प्रस्तुति का एक विशेष रूप 'भोना' कहलाता है, जो जीवंत वाद्ययंत्रों, गायकों, नृत्य और विस्तृत वेशभूषा को मिलाकर प्रस्तुत किया जाता है। मुखौटा इस नाट परंपरा में महत्वपूर्ण रंगमंच सामग्री है। 'भोना' संस्कृत मंत्रोच्चार के साथ आरंभ होता है और गीत ब्रजभाषा में होते हैं। सबसे महत्वपूर्ण नामघर कमलाबारी सतारा माजुली, असम में है।

गतिविधि 12.2

सीता मास्क इन अंकिया भोना

पुरुलिया छउ

मेरा चरित्र मेरी वेशभूषा और हाव-भाव को निर्धारित करता है— सीमाओं से परे

एक चरित्र चुनें। उदाहरण के लिए, एक महिला की चाल या मास्क, जिसमें साइड-टू-साइड नितंबों की गतियाँ या एक मयूर की वेशभूषा या फिर मुखौटे सम्मिलित हो सकते हैं। इसमें सामने और पीछे के नितंबों की गतियाँ सम्मिलित हो सकती हैं। पहले आपने रंगमंच में मुखौटा बनाना सीखा था। क्या आप उसे स्मरण कर सकते हैं कि मुखौटा कैसे बनाया जाता है?

अब, अपने नितंबों की गतियाँ और/या मुखौटा को चुनें ताकि आप अपने पसंद के चरित्र को प्रदर्शित कर सकें।

छत्तीसगढ़ की नाट्य परंपरा -'नाचा'

'नाचा' शब्द 'नाच' से बना है और नाच नृत्य का बोधक है। नाचा पूरी तरह से लोकनाट्य है और नाट्य या गम्मत प्रदर्शन से पहले नृत्य या नाच होता है। इसलिए इसे नाचा कहा गया है। नाचा को नाचा - गम्मत भी कहा जाता है। गम्मत का आशय हंसी-ठिठोली से है। नाचा की शुरुआत खड़े - साज नाचा से हुई, जिसमें सभी कलाकार खड़े होकर बाजा बजाते और गम्मत करते थे।

प्रारम्भिक दौर में मंच में प्रकाश व्यवस्था के लिए नाचा के कलाकार मशाल पकड़कर नाचते थे। चिकारा और तबला नाचा के प्रमुख लोक वाद्य थे। नाचा प्रदर्शन की यह परंपरा वर्तमान में लुप्त हो गई है।

दाऊ मंदराजी रवेली (राजनांदगांव) ने चिकारा के स्थान पर हारमोनियम का प्रयोग कर इसे नया रूप दिया, तब से नाचा की लोकप्रियता देश और विदेशों में बढ़ गई। नाचा में स्त्री पात्र की भूमिका पुरुष द्वारा ही किया जाता है, जिसे परी या डांसर कहते हैं। इनके द्वारा प्रारम्भ में ही गीत- नृत्य प्रस्तुत किया जाता है।

नाचा में जोक्कड़ों की भूमिका विशेष होती है, वे अपने वाक चातुर्य और वेशभूषा से दर्शकों को हंसा- हंसा कर लोटपोट कर देते हैं। तुरंत जवाब इनकी विशेषता होती है। नाचा के संवाद हास-परिहास से भरपूर होते हैं। बात से बात पैदा करना जोक्कड़ों की विशेषता होती है। नाचा के संवाद लिखित नहीं होते।

जोक्कड़ नाचा के जान होते हैं, साज परी या नजरिया की इसमें केंद्रीय भूमिका होती है। यह भूमिका पुरुष कलाकार ही निभाते हैं। नाचा का सबसे प्रबल पक्ष उसका तमाशा या गम्मत है। नाचा में गम्मत के माध्यम से छुआछूत, शोषण, कुप्रथाओं एवं बालविवाह जैसे अनेक सामाजिक बुराइयों पर प्रहार करते हैं। हंसी- ठिठोली में कही गई बातें समाज के सच को प्रतिबिम्बित करती हैं।

मनोरंजन और अर्थपूर्ण संदेश नाचा की विशेषता है। नाचा को विश्व प्रसिद्धि दिलाने में दाऊ मंदराजी , हबीब तनवीर,मदन निषाद, लालूराम , भुलवा राम , माला बाई, फिदा बाई , झुमुक दास, नियाइक दास , गोविंद निर्मलकर,सुखी राम निषाद आदि अनेकों लोक कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

नाचा गीत

तोला जोगी जानेंव रे भाई, तोला साधु जानेंव गा
का जानंव लंकापति रावन ल, जोगी जानेंव।
हरर हरर सीता भाई रोयें
सरन -सरन गोहराई|
तीनों लोक म हे कोई जोद्धा
रथ राखे बिलमाई|
तोला जोगी........

नृत्य परंपराओं में संपर्क एवं रूपांतरण

सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के दौरान, पारंपरिक गतिविधियों का पुनर्जीवन हुआ और समकालीन नृत्य के नए शब्द-भंडार का उदय हुआ।

रवींद्रनाथ टैगोर

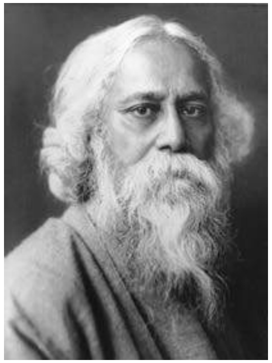

रवींद्रनाथ टैगोर ने वर्ष 1921 में भारत के प्रथम कला विश्वविद्यालयों में से एक 'विश्वभारती' की स्थापना की जो शांति निकेतन में स्थित है। यह संस्थान पारंपरिक नृत्य-शैलियों से एक नवीन नृत्य-शब्दावली विकसित करने में सहायक बना। उन्होंने रवींद्र नृत्य नामक एक नवीन शैली का निर्माण किया, जिसने महिलाओं के लिए व्यावसायिक नृत्य के अवसर खोले।

रवींद्रनाथ नृत्य

अब, आप रवींद्र नृत्य में किसी नृत्य की दो पंक्तियों को प्रस्तुत करने का प्रयास करें।

उदय शंकर

उदय शंकर संभवतः आधुनिक भारतीय नृत्य के प्रथम अग्रदूत थे। उन्होंने 1920 के दशक में अन्ना पावलोवा के साथ नृत्य करना आरंभ किया। कोई औपचारिक प्रशिक्षण न होते हुए भी उन्होंने भारतीय नृत्य की विभिन्न परंपराओं— शास्त्रीय, लोक, और आदिवासी शैलियों को एक साथ मिलाकर एक नई नृत्य-शैली प्रस्तुत की, जिसे अब उदय शंकर शैली कहा जाता है। 1948 में बनी उनकी फिल्म, *कल्पना* आज भी चर्चित है।

उदय शंकर और अमाल शंकर एक प्रस्तुति देते हुए

उदय शंकर और रेखा शंकर की कुछ प्रस्तुति क्लिप्स को क्यू.आर. कोड की सहायता से देखें और कुछ चरणों को नृत्य में प्रस्तुत करने का प्रयास करें।

नृत्यसंयोजन — मंच से परदे तक

अब तक आपने 'नृत्य संयोजन' शब्द का अभ्यास किया है। अब आप इसे परदे पर भी होते हुए देख सकते हैं।

भारतीय सिनेमा में प्रारंभ से ही नृत्य का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। कई प्रसिद्ध भारतीय फिल्में अद्भुत नृत्य संयोजन के लिए जानी जाती हैं, जैसे— मुग़ल-ए-आज़म, जिसका नृत्य संयोजन लच्छू महाराज ने किया था और 'झनक-झनक पायल बाजे' का नृत्य संयोजन गोपी कृष्ण ने किया था।

कई दक्षिण भारतीय अभिनेत्रियाँ निपुण नृत्यांगनाएँ थीं, जिन्होंने फिल्मों में खूबसूरती से नृत्य प्रस्तुत किए। भारत रत्न से सम्मानित एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी में अभिनय की विशेष प्रतिभा थी और उन्होंने अपनी कई फिल्मों में ऐसे दृश्य निभाए।

हाल के दिनों में बीरजू महाराज द्वारा कोरियोग्राफ किया गया नृत्य 'काहे छेड़-छेड़ मोहे' बहुत लोकप्रिय हुआ है। आज भी देश के हर हिस्से में खूबसूरत गरबा नृत्य और अन्य लोकरूप कई फिल्मों में देखने को मिलते हैं।

गतिविधि 12.3 — मेरा रचनात्मक नृत्य

अपना रचनात्मक नृत्य उन गतियों के आधार पर तैयार करें, जिनका आपने पहले अभ्यास किया है। विद्यार्थियों को 2, 3 और 4 के समूह में बाँटें। अपने समूह के लिए एक विषय चुनें। अब संगीत, लय और संयोजन के साथ अपनी रचना का प्रारंभ करें।

आप अपनी पसंद से कोई भाव-स्थिति भी चुन सकते हैं और पहले से सीखे हुए नृत्य के अंशों को जोड़कर एक पूरा नृत्य बनाएँ। इस गतिविधि से आप नृत्य निर्माण और नृत्य संयोजन की प्रक्रिया को समझ पाएँगे।

विद्यार्थी रचनात्मक नृत्य करते हुए

शिक्षकों के लिए निर्देश— बच्चों को ऊपर दी गई फिल्मों या शिक्षक द्वारा चयनित फिल्मों, जैसे— अप्पू राजा, अप्पालम चप्पलम, थिलाना मोहानाम्बाल, बाजे संतूर, शंकराभरणम के कुछ नृत्य अंश दिखाएँ।

आकलन

अध्याय 12 — आप, नृत्य और रचनात्मकता				
सी.जी.	सी.	सीखने के प्रतिफल	शिक्षक	स्वयं
2	2.2	कक्षा में भागीदारी।		
3	3.1	अपने चरित्र के अभिनय प्रदर्शन में मुखौटे या अन्य किसी सामग्री का उपयोग करके उसे और समृद्ध बनाना।		
3	3.2	अपने नृत्य में नितंबों की गति का रचनात्मक रूप से उपयोग करना।		
3	3.2	नितंबों और गतियों का उपयोग करते हुए विभिन्न चरित्र और मुद्राओं को का उपयोग करने में रुचि रखना।		
3	3.2	सभी सीखी गई तकनीकों का रचनात्मकता से प्रयोग कर नृत्य करना।		
4	4.1	पारंपरिक और लोकप्रिय नृत्य के समकालीन विकास की संस्कृति को समझने में रुचि रखना।		

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

---

13 व्यक्तित्व

0780CH13

शंभू महाराज

‘कथक’ लखनऊ घराने के वंशज शंभू महाराज पारंपरिक रूप से कथक नर्तकों के परिवार से संबंध रखते हैं। उनके पूर्वज अवध के नवाब वाजिद अली शाह के दरबार में गुरु और नर्तक थे। उनके पिता कालका प्रसाद और चाचा बिंदा दीन थे, जिन्होंने कथक के लखनऊ घराने को सशक्त किया। उन्होंने अपने चाचा बिंदा दीन से प्रशिक्षण प्राप्त किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात उन्होंने अपने बड़े भाई अच्छन महाराज के साथ मिलकर नृत्य की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शंभू महाराज ने 1926 में लखनऊ में ‘अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन’ पहली प्रस्तुति दी, जिसके बाद वे एकल कलाकार के रूप में और अपने बड़े भाइयों अच्छन और लच्छू महाराज के साथ नियमित रूप से प्रदर्शन करते रहे। वे 1955 में दिल्ली चले गए और ‘श्रीराम भारतीय कला केंद्र’ में कथक सिखाया, इस प्रकार दिल्ली में लखनऊ घराने की परंपरा स्थापित हुई। वे अपने ‘अभिनय और भाव बताने’ के लिए बहुत प्रसिद्ध थे साथ ही वे दरबारी शैली में बैठकर अभिनय करते थे। उन्होंने अपने भतीजे, प्रसिद्ध नर्तक बिरजू महाराज और भारत के कई अन्य प्रसिद्ध कथक नर्तकों को प्रशिक्षित किया। उनके बेटे राम मोहन और किशन मोहन भी कुशल नर्तक और गुरु हैं। उन्हें 1958 में ‘पद्मश्री’ और 1967 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

शंभू महाराज

बिरजू महाराज

केदार नाथ साहू

केदार नाथ साहू 'सरायकेला छऊ' के प्रमुख प्रतिपादकों में से एक थे। वे कनसारी जाति से संबंधित छऊ नर्तकों की एक पारंपरिक परिवार से आते हैं, जो प्रमुखतः घरेलू बर्तन बनाने के अपने मुख्य व्यवसाय के साथ-साथ इन नृत्य परंपराओं से जुड़े हुए हैं। उन्होंने बहुत कम आयु से ही अपने पिता और दादा से नृत्य सीखना आरंभ कर दिया था। यह नृत्य शैली गुरु-शिष्य परंपरा का अनुसरण करती थी और कला मौखिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी प्रसारित होती थी। उन्होंने कुमार बिजॉय प्रताप सिंह देव की मंडली में प्रदर्शन किया, लेकिन बाद में अपने शिष्यों को साथ लेकर अपनी मंडली बनाई। उन्हें 1981 में 'संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार' और 2005 में 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया। उनके प्रदर्शनों को भारत और दुनिया भर में प्रशंसा मिली। कई प्रसिद्ध नर्तकों ने उनके शिष्य के रूप में उनसे प्रशिक्षण भी लिया। जिनमें शशधर आचार्य, गोपाल प्रसाद दुबे और शेरोन लोवेन जैसे उल्लेखनीय नाम सम्मिलित हैं।

सरायकेला छऊ मुखौटा

गतिविधि 13.1

बालासरस्वती, पंडित हजारीलाल, केरेमने शिवराम हेगड़े, गुलाबो सपेरा इनमें से किसी एक महान नृत्य व्यक्तित्व के बारे में शोध करें और लिखें।
कक्षा में इसे परियोजना कार्य के रूप में प्रस्तुत करें।

आकलन

अध्याय 13 — व्यक्तित्व				
सी.जी.	**सी.**	**सीखने के प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
4	4.2	नृत्य व्यक्तित्व के बारे में जानने में रुचि दिखाना।		
4	4.2	कम से कम एक अन्य नृत्य व्यक्तित्व के बारे में सक्रिय रूप से शोध करना।		
4	4.2	किसी परियोजना कार्य या पत्रिका में रचनात्मक प्रस्तुति करना।		

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

----

14 नाट्य

0780CH14

नाट्य प्रदर्शन के माध्यम से कहानी सुनाना है। आपने पहले भी पुस्तक में नाट्य प्रदर्शन के बारे में और दो नाट्य परंपराओं के बारे में पढ़ा है।

इस अध्याय में आप जानेंगे कि नृत्य तत्वों को नाट्य में किस प्रकार सम्मिलित किया जा सकता है।

एक कहानी को नृत्य और नृत्य संयोजन, संवाद, गीतों के साथ संगीत तत्वों, संगीत वाद्ययंत्रों, वेशभूषा और श्रृंगार के साथ एक प्रस्तुति बनाया जा सकता है। अपने मित्रों के साथ कहानी सुनाने और नाट्य में नृत्य मुद्राओं को कैसे सम्मिलित करें, इस पर चर्चा करें? आपके विचार के लिए नीचे एक कहानी दी गई है या आप प्रस्तुति के लिए अपनी स्वयं की कहानी चुन सकते हैं और उसे प्रस्तुत कर सकते हैं।

आइए, हम एक कहानी पढ़कर और फिर उस पर नृत्य करके इस अध्याय में आगे बढ़ें। यह रोचक और आनंदायक होगा। एक दोपहर दादी ने बच्चों को कृष्ण और कालिया नाग की कहानी सुनाने के लिए एकत्र किया। दादी ने अपनी कहानी का शुभारंभ एक मधुर, जीवंत आवाज में किया और अपने नाटकीय वर्णन से कहानी को जीवंत बना दिया।

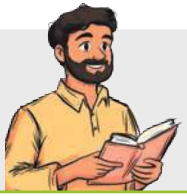

शिक्षकों के लिए निर्देश— इस गतिविधि को अपनी क्षेत्रीय भाषाओं और परिपाटियों व अभ्यासों के अनुसार करें।

"बहुत समय पहले, कालिंदी नदी के तट पर कालिया नाग नाम का एक *राक्षस* नाग रहता था। वह एक भयानक प्राणी था, जो फुंफकारता था और कुंडली मारकर अपने पास आने वाले सभी लोगों को डराता था। यहाँ तक कि पक्षी भी नदी के ऊपर से उड़कर नहीं जाते थे और बच्चे भी नदी के किनारे खेलने से डरते थे। लेकिन एक दिन, नन्हे कृष्ण वहाँ आए।"

"अब, कृष्ण को किसी बात का भय नहीं था। उन्होंने सहमे हुए बच्चों को देखा और उनकी मदद करने का फैसला लिया। वह नदी के किनारे सबसे ऊँचे पेड़ पर चढ़ गए, हाथ में बाँसुरी ली और उसे बजाना आरंभ कर दिया। संगीत इतना मधुर और मनमोहक था कि यह पानी पर ऐसे बह रहा था जैसे लहरों पर सूरज का प्रकाश। यहाँ तक कि कालिया भी विरोध नहीं कर सका। महान सर्प धुन पर झूमता हुआ नदी से ऊपर उठा, क्रोध भूल गया और उसकी आँखें खुशी से बंद हो गईं। फिर, कृष्ण कालिया के फन पर चढ़ गए और नृत्य करना आरंभ कर दिया। ओह! वह कैसे नाच रहा था! उसके कोमल पैर इतनी सुंदरता और लय के साथ चल रहे थे कि कालिया, जो कि बहुत ही भयंकर था, वह भी उसके साथ सम्मिलित होने से स्वयं को नहीं रोक सका। शीघ्र ही, पक्षी चहचहाने लगे, छुपे हुए जानवर बाहर आ गए और बच्चे ताली बजाकर खुशी मना रहे थे। कालिया शांत हो गया और खुशी-खुशी नदी में चला गया और फिर उसने कभी किसी को परेशान नहीं किया।"

बच्चों ने ध्यानपूर्वक सुना और फिर उत्साहित होकर दादी से इस नाट्य को करने में सहायता के लिए कहा।

उन्होंने उत्तर दिया, "हाँ, हमें पूरी कहानी की योजना बनानी है और उसे रूपरेखा देनी है। नृत्य, संगीत, अभिनय, वेशभूषा और मंच रूपरेखा के साथ नृत्य संयोजन करना है। बच्चो, आप देखिए संगीत और नृत्य के माध्यम से सबसे उग्र हृदय को भी शांत किया जा सकता है। नाट्य, कहानी कहने की हमारी सुंदर कला केवल मनोरंजन के लिए नहीं है। यह सिखाती है, उपचार करती है और यह शांति लाती है।"

सभी पारंपरिक प्रदर्शन सर्वशक्तिमान का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए अभिवादन के साथ आरंभ होते हैं। यहाँ आपको नाट्य के संदर्भ में अभिवादन और उपदेश के संदर्भ दिखाई देंगे।

उन्होंने कहा, "हमारी परंपराओं में, प्रत्येक नाटक कृतज्ञता के साथ आरंभ और समाप्त होता है। प्रदर्शन से पहले, हम इसकी सफलता के लिए आशीर्वाद माँगते हैं, जैसे हम अपने दिन का आरंभ प्रार्थना से करते हैं या स्कूल में सुबह की सभा के दौरान गाते हैं। यह अपने मन को केंद्रित करने में सहायता करता है और शांति की भावना लाता है। भारतीय नाट्य परंपरा में किसी भी नाटक के आरंभ में अभिवादन एक अनिवार्य भाग है। आइए, कुछ प्रार्थनाएँ सीखें जिन्हें नाट्य के समापन के बाद सर्वशक्तिमान को अभिवादन और आशीर्वाद के रूप में गाया जा सकता है।"

यहाँ एक उदाहरण दिया गया है जिसे आप अपने प्रदर्शन में अभिवादन के रूप में उपयोग कर सकते हैं या आप स्वयं भी इसका चयन कर सकते हैं।

अभिवादन

ಗಜವದನಾ ಬೇಡುವೆ ಗೌರಿ ತನಯ ।
ತ್ರಿಜಗ ವಂದಿತನೆ ಸುಜನರ ಪೊರೆವನೇ ॥
ಸರಸಿಜನಾಭ ಶ್ರೀ ಪುರಂಧರ ವಿಠ್ಠಲನ ।
ನಿರುತ ನೆನೆಯುವಂತೆ ನೀ ದಯಮಾಡೋ ॥

गजवदना बेदुवे गौरी तनया॥
त्रिजगा वंदितेन सुजानारा पोरेवाने॥
सरसिजनाभ श्री पुरंदरा विट्ठलना ॥
निरुता नेनेयुवंते नी दयामादो॥

—पुरंदर दास, देवराणामा (कन्नड़ भाषा)

अर्थ

गजवदन— जिसका चेहरा हाथी जैसा है (गणेश)
बेदुवे— मैं प्रार्थना करता हूँ
गौरी तनया— गौरी का पुत्र है
त्रिजगा— तीन लोक
वंदितेन— पुजित
सुजानारा— अच्छे लोगों द्वारा
पोरेवने— रक्षक

हे हाथी के मुख वाले भगवान! मैं आपके लिए प्रार्थना करता हूँ। आप देवी गौरी (पार्वती) के पुत्र हैं। तीनों लोको में आपकी पूजा होती है। आप ऋषि, मुनि आदि सभी अच्छे लोगों के रक्षक हैं।

अंतिम छंद का अर्थ

सरसिज नाभ— जिनकी नाभि में कमल है,
श्री पुरंदर विट्ठलना— भगवान विष्णु (कमल)
(पुरंदर दास का उपनाम) भगवान
निरुता— सदैव
नेनेयुवंते: — मुझे याद दिलाओ
नी— आप
दयामादो— आशीर्वाद की वर्षा

हे भगवान विष्णु (पुरंदर विट्ठल), जिनकी नाभि में कमल है, प्रत्येक गतिविधि में आपको याद रखने के लिए अपनी कृपा बरसाएँ।

मंगलकामना

इसी तरह, सभी प्रदर्शन आशीर्वाद के साथ समाप्त होते हैं। उन्होंने यह कहते हुए समापन किया और जब नाटक समाप्त होता है तो हम दर्शकों को उनके समय और ध्यान के लिए धन्यवाद देने के

लिए झुकते हैं। अंततः दर्शकों के बिना प्रदर्शन क्या है जो दर्शक इसे देखने के लिए आते हैं क्या दर्शक इसे देखना पसंद करेंगे? यह सम्मान का आदान-प्रदान ही नाट्य को इतना महत्वपूर्ण बनाता है— यह केवल कहानी के बारे में नहीं है, बल्कि यह प्रदर्शन करने वालों और देखने वालों के बीच संबंध बनाता है।

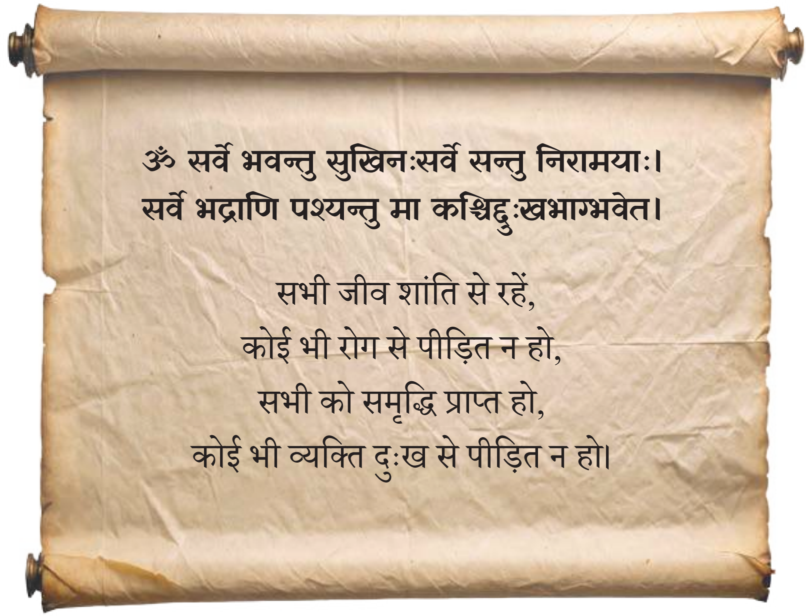

गतिविधि 14.1 — प्रदर्शन की योजना बनाना

आप उन सभी नृत्य तत्वों पर ध्यान देंगे जिन्हें इस नाट्य प्रारूप में सम्मिलित किया जा सकता है।

समूह बनाएँ। प्रत्येक समूह कहानी के लिए कुछ नृत्य तैयार करेगा। इसके लिए अलग-अलग खंड हो सकते हैं—

अंग-संचलन का चयन

भावों को व्यक्त करने और नृत्य को उत्तम बनाने के लिए उपयुक्त नृत्य गतिविधि के बारे में सोचें और चर्चा करें। प्रदर्शन में निम्नलिखित को अवश्य सम्मिलित किया जाना चाहिए—

- कदम
- उपयुक्त दृश्यों के लिए लय और विभिन्न बीट्स (जैसे 5, 6 और 7 बीट्स)।
- नवरस (बच्चों के लिए भयानक, कालिया के लिए रौद्र, कृष्ण के लिए वीर आदि)।
- उचित शारीरिक गतिविधियाँ— ऊपरी और निचला धड़, नितंब की गतियाँ आदि।
- हस्त के संकेत, जानवरों की हरकतें, छलांगें और चक्कर।

इस कहानी के संदर्भ में अनुभागों को किस प्रकार विभाजित किया जा सकता है, इसका एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

नृत्यकला

खंड

- **अभिवादन**— अभिवादन सामान्यत: नृत्य की गतियों के साथ होता है। प्रार्थना की भंगिमाओं को अभिवादन की तरह किसी भी नृत्य द्वारा प्रस्तुत करें।
- **कृष्ण और मित्रों का नृत्य**— यहाँ आप कौन-से चरण और लय का उपयोग कर सकते हैं?
- **कालिया की गतियाँ और बच्चों की प्रतिक्रियाएँ**— क्या आप कालिया के लिए घुमावदार और गोलाकार नितंब गतियों का उपयोग कर सकते हैं। बच्चे भय कैसे दिखाएँगे?
- **कृष्ण और कालिया के बीच युद्ध**— कौन-से चरण और लय युद्ध क्रम के लिए उपयुक्त हो सकते हैं? कौन-सी छलाँग, चक्कर और हस्त गतियाँ यहाँ जोड़ी जा सकती हैं?
- **कालिया की हार के बाद उत्सव**— आप उत्सव मनाने के लिए नृत्य कैसे तैयार करेंगे? आप इसके नृत्य संयोजन करने के लिए अपनी संगीत कक्षा के किसी गीत या बंदिश का प्रयोग कर सकते हैं।
- **आशीर्वाद**— हस्त का उपयोग करके आशीर्वाद दें।

अब आप चर्चा कर सकते हैं।

संगीत चयन

विभिन्न वर्गों के लिए सही संगीत तत्वों का चयन किया जाना चाहिए। चर्चा करें कि किस अनुभाग में तालवाद्य या गायन आदि हो सकता है। अपने क्षेत्र में पारंपरिक रूप से उपयोग किए जाने वाले संगीत या गीत को चुनें।

वेशभूषा और मंच सामग्री (प्रॉप्स)

पात्र के लिए विभिन्न अभिनय सामग्री (प्रॉप्स) और वेशभूषा का चुनाव करें। उदाहरण के लिए—

मोर के पंख

बाँसुरी

कृष्ण पात्र के लिए धोती

नदी का प्रतीक नीला दुपट्टा

जानवरों के लिए मुखौटे

गतिविधि 14.2 — अभ्यास और प्रस्तुति

अब आता है मनोरंजनपूर्ण भाग, अपनी रचनात्मकता का उपयोग करके प्रत्येक समूह द्वारा की गई गतिविधि को एक साथ रखें और एक भव्य समापन के रूप में नृत्य और मुद्राओं के साथ अपनी कहानी की प्रस्तुति दें।

आकलन

अध्याय 14 — नाट्य				
सी.जी.	**सी.**	**सीखने के प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
3	3.1	कहानी सुनना समझता है।		
3	3.1	नाट्य कला में सक्रिय रूप से भाग लेता है।		
3	3.1	उत्सुकता के साथ सहयोग करता है और साझा करता है।		
3	3.1	इस प्रस्तुति को बनाने में प्रदर्शन के सभी पहलुओं का कल्पनाशील ढंग से उपयोग किया गया है।		

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

संकलनात्मक आकलन

	आकलन के उदाहरण	आकलन के मानदंड
व्यक्तिगत	❖ शरीर की मुद्राओं को ज्यामितीय आकृतियों के संबंध में मूर्तिकला की तरह हस्त के साथ दिखाएँ। ❖ नृत्य मुद्राओं का एक लयबद्ध क्रम बनाना। ❖ हस्त का उपयोग करते हुए वाक्य बनाना। ❖ परियोजना कार्य।	❖ वे कितनी मुद्राएँ उचित समझ के साथ प्रदर्शित कर सकते हैं और उन्हें मूर्तिकला के साथ सटीक रूप से सह-संबंधित कर सकते हैं। ❖ क्या नृत्य गतियों का क्रम अभ्यास और विधि को समझकर किया जाता है? ❖ बातचीत के लिए हाथों का उचित उपयोग। ❖ परियोजना कार्य की सामग्री।
समूह 3 या 4	❖ नितंब गतियों में आराम और समन्वय। ❖ प्रस्तुति को एक कहानी के साथ जोड़ना।	❖ रचनात्मकता। ❖ सहयोगात्मक मनोभाव।

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

अवलोकन

दृश्य कला

कलानां प्रवरं चित्रं धर्मकामार्थमोक्षदम्।
मङ्गल्यं प्रथमं चैव गृह्यते यत्र प्रतिष्ठितम्॥

सभी कलाओं में चित्रकला सर्वश्रेष्ठ है, जो धर्म, अर्थ और मुक्ति देने वाली कला है। यह जहाँ भी स्थापित की जाती है, वहाँ सब कुछ मंगलमय होता है।

— विष्णुधर्मोत्तर पुराण से *चित्रसूत्र* का अध्याय 43 श्लोक 38

शिक्षकों के लिए

प्रिय शिक्षकगण,

आइए, हम अपने विद्यार्थियों को दृश्य कला, विचारों और संचार की आकर्षक दुनिया की गहराई में ले जाएँ। इस कक्षा में उनके कौशल और तकनीकों को निखारते हुए दृश्य कला प्रक्रियाओं और परंपराओं के बारे में उनके ज्ञान को व्यापक विस्तार देने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। यहाँ यह महत्वपूर्ण है कि आप प्रत्येक अध्याय को ध्यान से पढ़ें। आप अपने स्थानीय संदर्भ और विद्यार्थियों की विशेष आवश्यकताओं के अनुरूप गतिविधियों को संशोधित कर तैयार कर सकते हैं।

प्रत्येक विद्यार्थी के लिए सर्वोत्तम शिक्षण अनुभव प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार करें।

दृश्य कला वर्ग कक्षा की आवश्यकता

1. विद्यार्थियों के सरलता से कार्य करने के लिए पर्याप्त स्थान की उपलब्धता।
2. पर्याप्त प्रकाश और वायु संचार का होना।
3. कला सामग्री, उपकरण, मूलभूत स्टेशनरी और दृश्य-श्रव्य सुविधाओं तक सरल पहुँच और सुव्यवस्थित भंडारण।
4. समय-समय पर कला कार्य प्रदर्शित करने और प्रदर्शन के लिए स्थान की उपलब्धता।

दृश्य कला शिक्षणशास्त्र की आवश्यकता

1. अवधारणाओं और प्रक्रियाओं को प्रस्तुत करने के लिए कहानी कहने और प्रतिदिन के उदाहरणों का उपयोग करें।
2. विद्यार्थियों को अपने कलात्मक कार्यों में मौलिक विचारों, कल्पनाओं, भावनाओं और जिज्ञासाओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें।
3. विद्यार्थियों को अन्य स्रोतों से छवियों का अनुकरण करने की बजाय उनके दैनिक जीवन के अनुभवों के अवलोकन से प्रेरित मौलिक कला कार्य बनाने के लिए प्रोत्साहित करें।
4. विद्यार्थियों को कक्षा में अन्वेषण, जाँच, प्रयोग, सहयोग और संवाद करने की अनुमति दें।
5. उनके आस-पास के जीवन और संस्कृति का अन्वेषण और अवलोकन करने के लिए बाहरी गतिविधियों और अध्ययन यात्रा (फील्ड ट्रिप) को सम्मिलित करें।
6. संग्रहालयों, विरासत स्मारकों और मेलों का भ्रमण आयोजित करें।
7. स्थानीय कलाकारों और शिल्पकारों के साथ सहभागिता सत्रों और व्यावहारिक अनुभवों के लिए कार्यशालाएँ आयोजित करें।
8. कार्य करने के बाद सफाई की आदतों को अपनाएँ। उपयोग की गई सामग्रियों को वापस रखें और कला उपकरण सामग्रियों की देखभाल करें।
9. विद्यार्थियों को कक्षा प्रदर्शन या प्रदर्शनी के लिए कलाकृति के चयन में विद्यार्थियों की भागीदारी और निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करें।

दृश्य कला आकलन मध्य स्तर के लिए निम्नलिखित दक्षताओं पर आधारित होना चाहिए।

सी.-1.1 दृश्य कला विभिन्न रूपों के माध्यम से अपने व्यक्तिगत और दैनिक जीवन के अनुभवों को आत्मविश्वास से व्यक्त करना है।

सी.-1.2 दृश्य कला अभ्यास में सामूहिक रूप से दृश्य कला निर्माण की प्रक्रिया में लचीलेपन के गुण को प्रदर्शित करना है।

सी.-2.1 ऐसी स्थितियों, व्यक्तिगत अनुभव, भावनाओं और कल्पनाओं या कहानियों पर आधारित दृश्य चित्रण बनाना जो उनके आस-पास देखी जाने वाली रूढ़ियों को चुनौती देती हों (जैसे जेंडर असमानताएँ)।

सी.-2.2 दृश्य कला, प्रतीकों और दृश्य रूपकों को व्यक्तिगत अनुभवों, भावनाओं और कल्पनाओं से जोड़ना है।

सी.-3.1 दृश्य कला में विभिन्न सामग्रियों, उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करते समय सावधानी बरतें और सही विकल्प चुनें।

सी.-3.2 योजना के प्रथम चरण से लेकर अंतिम प्रस्तुति तक, दृश्य अभिव्यक्ति के विचारों और तकनीकों को परिष्कृत और पूरी रचना प्रक्रिया की समीक्षा करें।

सी.-4.1 स्थानीय और क्षेत्रीय कला रूपों की समझ प्रदर्शित करना।

सी.-4.2 क्षेत्रीय कलाकारों के जीवन और उनके कार्यों का वर्णन करता है।

सीखने के प्रतिफल जिनका आकलन विभिन्न अध्यायों में किया जा सकता है

सी.जी.	सी.	सीखने के प्रतिफल	शिक्षक	स्वयं
1	1.1	कलाकृतियों का प्रदर्शन और विश्वासपूर्वक विचारों, भावनाओं और प्रक्रियाओं को साझा करना।		
1	1.2	एक-दूसरे के साथ सहयोग करते हुए नए विचारों की जाँच करना और सुझाव देना।		
3	3.1	कला सामग्री का सावधानीपूर्वक उपयोग, सफाई और व्यवस्थित तरीकों से भंडारण करना।		
4	4.1	कलाकृति में देखे गए पैमाने, उपस्थिति, सामग्री और विषयों पर चर्चा कर स्थानीय कला रूपों और विरासत स्मारकों में देखी गई मूर्तियाँ या चित्रकला, पैमाने, रूप सामग्री और विषयों पर चर्चा करना।		
4	4.2	कलाकृति पर चर्चा या उसके विषय में लिखते समय कला शब्दावली का उपयोग करना।		
4	4.2	स्थानीय कलाकारों के काम और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के बारे में जानकारी प्राप्त करना।		

15 वस्तुओं में चिह्न और प्रतीक

0780CH15

दृश्य हमें एक-दूसरे के साथ संवाद करने में सहायता करते हैं। इस पृष्ठ पर दिए गए दृश्यों को जाँचें। प्रत्येक दृश्य आपको शीघ्र और सीधे सूचना प्रदान करता है। ऐसे दृश्यों को चिह्न कहा जाता है।

चिह्न (आइकन) किसी वस्तु, स्थान या विचार का एक सरल दृश्य प्रतिनिधित्व होता है। चिह्न के अधिक विवरण नहीं दिखते हैं। उदाहरण के लिए, मोबाइल फोन स्क्रीन पर घड़ी, शेष बैटरी चार्ज, नेटवर्क कनेक्शन और अनुप्रयोग आदि को दर्शाने वाले चिह्न ही होते हैं। नीचे कुछ अन्य चिह्न दिए गए हैं जो आपको नियमित रूप से देखने को मिलते हैं।

इस अध्याय में, आप सीखेंगे कि वस्तुओं की जानकारी प्रदान करने के लिए चिह्नों और प्रतीकों के रूप में कैसे प्रस्तुतीकरण दर्शाया जा सकता है। आप यह जानेंगे कि इन दृश्य तत्वों का उपयोग प्रतीक चिह्न, संकेत बोर्ड और यहाँ तक कि लिखित संदेश भेजने के दौरान 'इमोजी' के रूप में कैसे किया जाता है। विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से, आप वस्तुओं को 'द्वि-आयामी या त्रि-आयामी' आकृति में दिखाने के लिए उन्हें चित्रित करने का अभ्यास करेंगे और उन्हें प्रतिरूपों में बदलना भी सीखेंगे।

आप यह भी जानेंगे कि वस्तुएँ प्रतीकों के रूप में उपयोग किए जाने पर अन्य अर्थ कैसे ग्रहण करती हैं।

ध्यान दें कि इन वस्तुओं को चिह्न के रूप में परिवर्तित करने पर इनके विवरण कैसे बदलते हैं।

गतिविधि 15.1 — सरल चिह्नों को समझना

काँटा और चम्मच दो चिह्न को देखें।

सकारात्मक स्थान वस्तुओं को दर्शाता है।

नकारात्मक स्थान रिक्त स्थान को दर्शाता है।

इस प्रकार, एक छवि में काला रंग सकारात्मक है और दूसरी में नकारात्मक। अन्य चिह्नों में सकारात्मक और नकारात्मक स्थान अवलोकन करें। चिह्नों में सामान्यतः बहुत अधिक नकारात्मक स्थान होते हैं।

यह मुख्य वस्तु को बहुत छोटे आकार में स्पष्ट रूप से दिखाई देने में सहायता करता है।

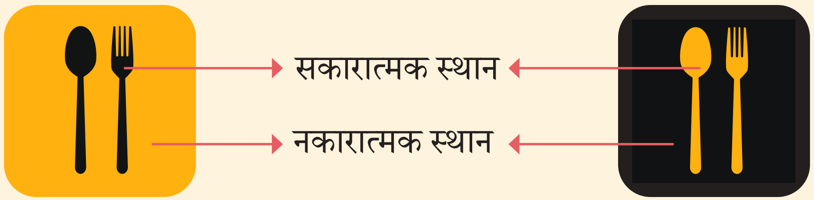

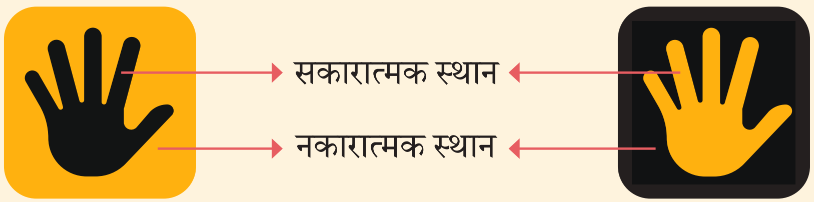

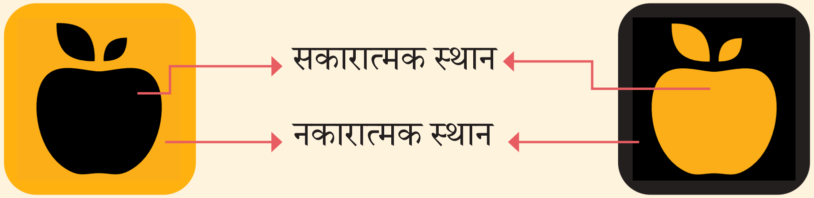

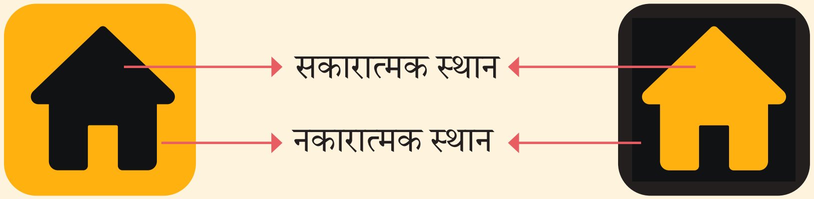

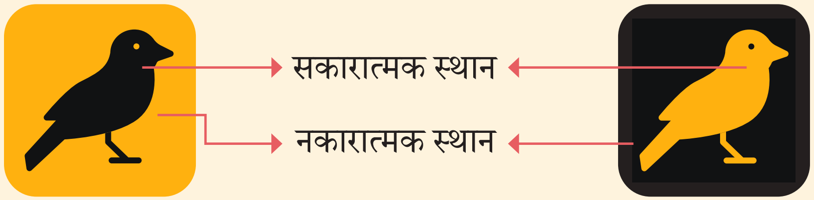

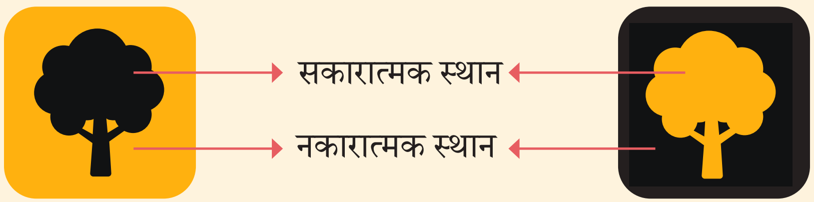

वस्तुओं से आकृतियों के स्टेंसिल बनाएँ

सामग्री— पुराने समाचार पत्र या पत्रिकाएँ, कैंची, सादा A4 कागज, पेंसिल और रबड़ इत्यादि।

चरण 1— पुराने समाचार पत्रों या पत्रिकाओं को देखें और दो या तीन वस्तुओं की पहचान करें जो पूर्ण रूप से और स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही हों।

चरण 2— अब, ध्यान से इस वस्तु की रूपरेखा को उभारें।

चरण 3— एक वस्तु चुनें और उसके भाग को काट लें।

चरण 4— वस्तु को रूपरेखा के अनुरूप काटें। यह स्टेंसिल कहलाता है।

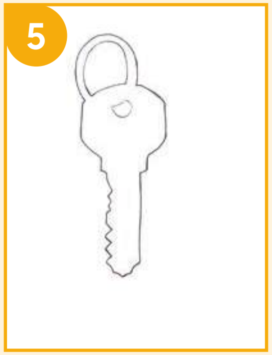

चरण 5— कागज़ की एक शीट पर, इस स्टेंसिल का उपयोग करके वस्तु को बनाएँ

चरण 6— रूपरेखा के भीतर रंग भरें और इस प्रकार निर्मित सकारात्मक और नकारात्मक स्थान पर ध्यान दें।

इसे अपने मित्रों को दिखाएँ और उनसे वस्तु की पहचान करने के लिए कहें। अन्य वस्तुओं के साथ स्टेंसिलिंग को दोहराएँ। क्या आपके मित्र स्टेंसिल प्रक्रिया द्वारा बनाई गई आकृति से वस्तु की पहचान कर सकते हैं?

गतिविधि 15.2 — एक वस्तु को विभिन्न विधियों से चित्रित करना

विद्यार्थी द्वारा बनाया गया एक संगीत वाद्ययंत्र

किसी वस्तु को द्वि-आयामी या त्रि-आयामी रूप बनाने के लिए विभिन्न तकनीकों का उपयोग करके चित्रित किया जा सकता है। नीचे दिया गया उदाहरण देखें।

वस्तु की रूपरेखा

- यह एक रूपरेखा है।
- पारदर्शी दिखता है।
- वस्तु द्वि-आयामी दिखती है।

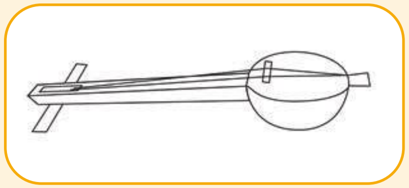

वस्तु का छाया चित्र

- यह एक रंगीन सपाट आकार है।
- अपारदर्शी दिखता है।
- वस्तु द्वि-आयामी दिखती है।

वस्तु को छायांकित करना

- आपस में काटती रेखाएँ (क्रॉस-हैचिंग) और बिंदु चित्रण (स्टिपलिंग) जैसी तकनीकों का उपयोग करके टोनल विविधताओं के माध्यम से प्रकाश और छाया को दर्शाता है।
- वस्तु त्रि-आयामी दिखती है।

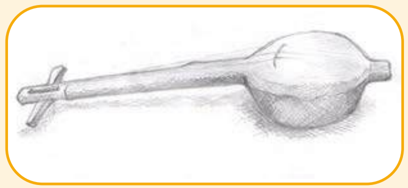

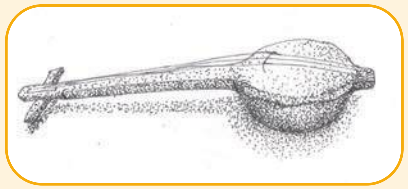

वस्तु का चिह्न

- आवश्यक विवरण के साथ सरलीकृत चित्र।
- वस्तु द्वि-आयामी दिखती है।

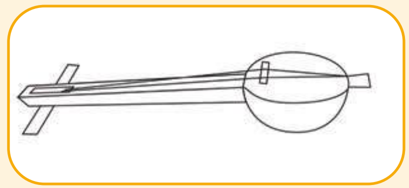

कोई वस्तु चुनें और उसका चित्र बनाने के लिए तैयार हो जाएँ।

सामग्री— A5 आकार की पाँच शीट कागज (A4 कागज का आधा हिस्सा), नुकीली पेंसिल, रबड़, रंग और पेन इत्यादि।

अपनी पसंद की वस्तु की रूपरेखा बनाएँ

एक A5 कागज और एक पेंसिल लें।

चरण 1— निरीक्षण करें और मापें

- वस्तु को 2–3 फीट से अधिक दूरी पर रखें।
- वस्तु की आकृति और आकार का ध्यान से निरीक्षण करें।
- जैसा कि दिखाया गया है, अपनी पेंसिल को मापने के उपकरण के रूप में प्रयोग करें।
- अपने अंगूठे को पेंसिल पर रखें, इसे वस्तु के साथ संरेखित करके उसके भागों को मापें।
- वस्तु के अनुपातों को मापें और उन्हें कागज पर चित्रित करें।

चरण 2— रेखाचित्र (कंटूर) बनाइए

- प्रत्येक भाग को तब तक देखते रहें जब तक कि आप उसके प्रत्येक भागों का रेखाचित्र (कंटूर) पूरा न कर लें।

शिक्षकों के लिए निर्देश— प्रत्येक विद्यार्थी चित्रण के लिए वस्तु का चयन स्वयं करें।

यह सुनिश्चित करें कि वे इस गतिविधि में प्रत्येक कलाकार्य के लिए उसी वस्तु का उपयोग करें।

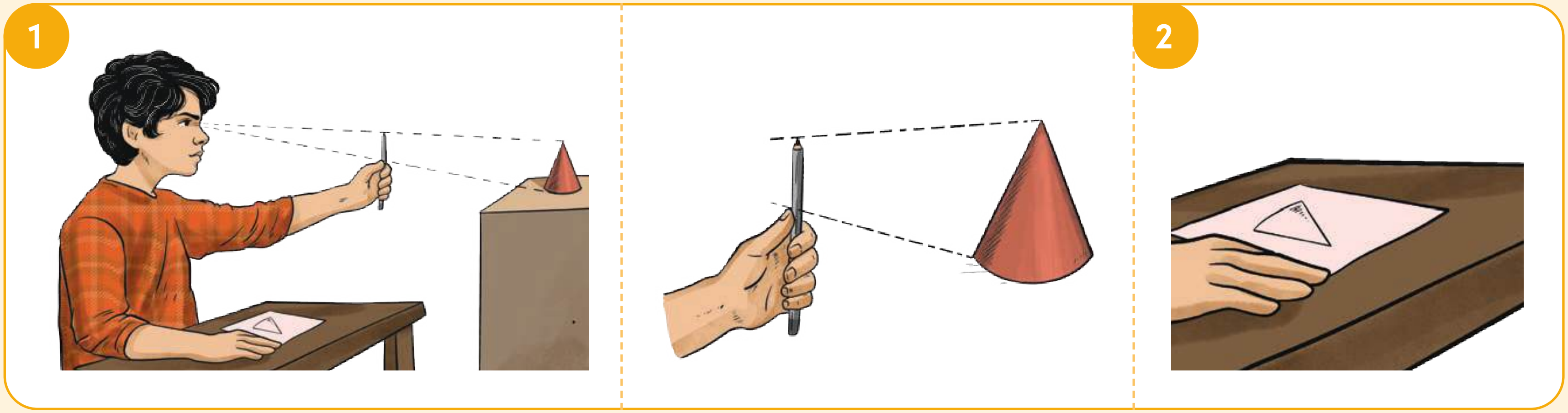

अपनी वस्तु का एक छायाचित्र (सिल्हूट) बनाएँ

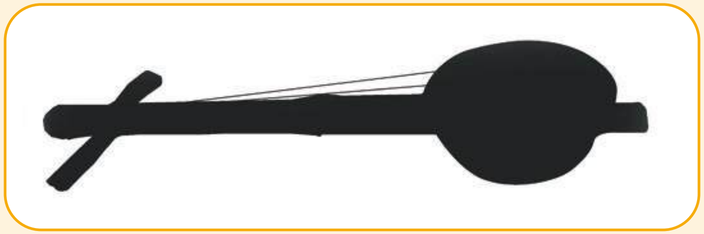

सिल्हूट

एक A5 कागज और एक पेंसिल लें।

1. उसी वस्तु की रूपरेखा पुनः बनाएँ या पहले बनाए गए रूप रेखाचित्र (कंटूर) से उसका रेखांकन करें।
2. रेखाचित्र (कंटूर) के अंदर रंग भरें ताकि वह समतल दिखाई दे।
3. वस्तु के चारों ओर नकारात्मक स्थान को भरने के लिए अलग रंग का उपयोग करें।

वैकल्पिक— किसी अन्य A5 शीट या कागज पर, सकारात्मक और नकारात्मक स्थानों के रंगों को बदलकर छायाचित्र के विपरीत प्रतिबिंब का चित्रण करें।

एक-दूसरे को आपस में काटती रेखाएँ (क्रॉस-हैचिंग)

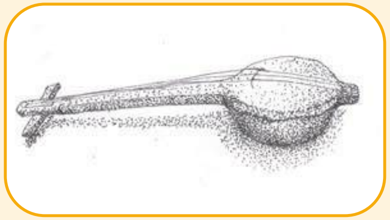

बिंदु चित्रण (स्टिपलिंग)

अपनी वस्तु का छायांकित (शेडिंग) चित्रण करना

इन दोनों छायांकन माध्यमों का उपयोग करके अपनी वस्तु को तीन आयामों में चित्रित करें।

1. क्रॉस-हैचिंग अर्थात एक-दूसरे को आपस में काटती रेखाएँ एक छायांकन तकनीक है, जिसमें क्रिस क्रॉस रेखाओं का उपयोग किया जाता है। गहरे टोन बनाने के लिए रेखाओं को निकट से एक-दूसरे के साथ ऊपर नीचे करें और हल्के टोन बनाने के लिए रेखाओं को एक-दूसरे के साथ दूरी रखकर ऊपर-नीचे करें।

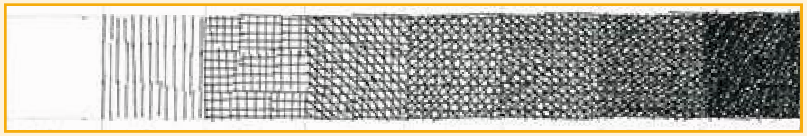

क्रॉस-हैचिंग

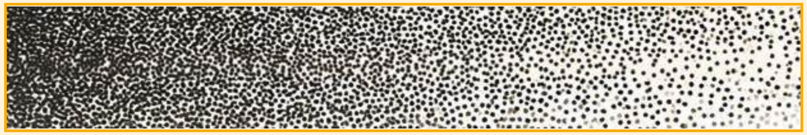

स्टिपलिंग

2. स्टिपलिंग अर्थात बिंदु चित्रण एक छायांकन तकनीक है, जिसमें बिंदुओं का उपयोग किया जाता है। गहरी छाया (टोन) बनाने के लिए बिंदुओं को एक-दूसरे के निकट रखें। हल्के टोन बनाने के लिए बिंदुओं के बीच की दूरी को बढ़ाएँ।

प्रत्येक तकनीक के लिए A5 कागज एक अलग शीट का उपयोग करें।

चरण 1— वही वस्तु लें जिसे आपने 'छायाचित्र' (सिल्हूट) बनाने के लिए चुना था और उसे अपने सामने रखें।

चरण 2— इसका अवलोकन करें और इसकी रूपरेखा का चित्रण करें।

चरण 3— ध्यान से देखें कि प्रकाश वस्तु पर किस प्रकार गिरता है।

चरण 4— गहरी और हल्के छाया के चित्रण हेतु "एक-दूसरे को आपस में काटती रेखाएँ" (क्रॉस-हैचिंग) माध्यमों का उपयोग करें।

चरण 5— अपना कार्य पूरा करें और उसे अलग या एक तरफ रख दें।

चरण 6— दूसरा कागज A5 माप का लें और वस्तु की रूपरेखा का चित्रण करें।

चरण 7— बिंदु चित्रण (स्टिपलिंग) का उपयोग करके हल्के और गहरे टोन बनाएँ।

अपनी वस्तुओं का चिह्न (आइकन) बनाएँ

अपने चित्रों को एकत्रित करें, जिसमें "रेखाचित्र, छायाचित्र (सिल्हूट), एक-दूसरे को आपस में काटती रेखाएँ (क्रॉस-हैचिंग) और बिंदु चित्रण (स्टिपलिंग)" सम्मिलित हैं। इनमें से आप किसका उपयोग चिह्न बनाने के लिए करेंगे?

याद रखें कि चिह्न एक सरलीकृत छवि है, लेकिन इसे जल्दी से पहचानने की भी आवश्यकता होती है। इसलिए, इसमें स्पष्ट आकृतियाँ होनी चाहिए और केवल महत्वपूर्ण विवरण होने चाहिए। कभी-कभी वस्तु का छायाचित्र (सिल्हूट) ही चिह्न भी हो सकता है।

A5 कागज शीट पर अपना चिह्न बनाएँ और उसे रंगों से पूरा करें।

अच्छे चिह्न बनाने के लिए अभ्यास और गहन अवलोकन की आवश्यकता होती है। अगर आपको अपने चिह्न का उपयोग, सूचना संप्रेषण करने के लिए करना हो तो वह कौन-सा होगा?

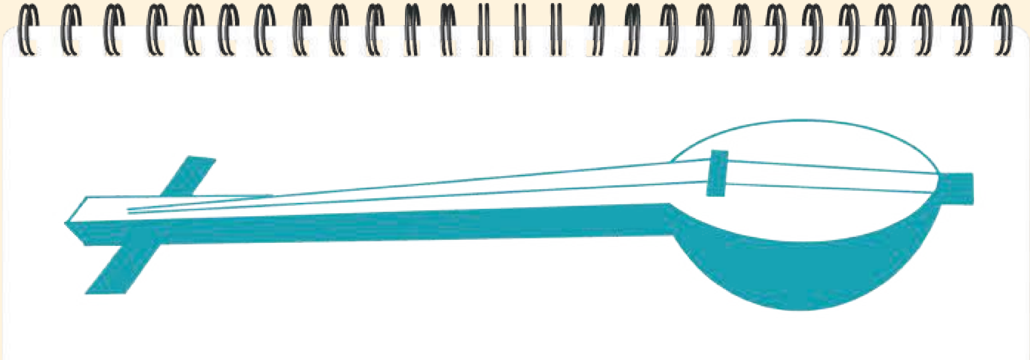

गतिविधि 15.3 — संकेतों या चिह्नों (साइनेज) के प्रतीक

संकेत या चिह्न (साइनेज) हमें बताते हैं कि कोई स्थान कहाँ है और उसका उपयोग किसके लिए किया जाता है? इस गतिविधि में, आप अपने विद्यालय के लिए वस्तुओं के चिह्नों, संकेतों के प्रतीकों (साइनेज) बनाएँगे।

चरण 1— अपने विद्यालय में एक स्थान चुनें, जैसे— प्रवेश द्वार, शौचालय, खेल का मैदान, भोजन करने का स्थान, पुस्तकालय, अपना थैला, जूते रखने का स्थान आदि।

चरण 2— जब आप इस स्थान के बारे में सोचते हैं तो आपके दिमाग में आने वाली वस्तुओं की एक सूची बनाएँ।

चरण 3— इस स्थान में सबसे महत्वपूर्ण वस्तु को चुनें। उदाहरण के लिए, एक दरवाजा एक निकास चिह्न का प्रतीक (साइनेज) है, प्रवेश द्वार और उसके महत्ता को दर्शाता है। यदि आपने दो वस्तुएँ चुनी हैं तो उन्हें मिलाने का प्रयास करें ताकि एक प्रतीक बनाया जा सके। उदाहरण के लिए, भोजन क्षेत्र के लिए संकेत चिह्न (साइनेज) में एक चम्मच और एक काँटा हो सकता है, कला कक्ष के लिए संकेत चिह्न (साइनेज) में एक प्लेट, एक रंगपट्टी और एक ब्रश हो सकता है।

चरण 4— याद रखें कि चिह्न (आइकन) किसी वस्तु का एक सरल चित्रण है।

- छाया चित्रण (सिल्हूट) और रूपरेखा का प्रयोग एक साथ करें।
- केवल विवरणों का उपयोग करें जो वस्तु की विशेषता को दर्शाते हों। साथ में केवल एक ही रंग का प्रयोग करें।

चरण 5— चिह्न को दो या अधिक विधियों से बनाएँ।

चरण 6— वह चिह्न चुनें जो आपके उद्देश्य को भली प्रकार व्यक्त करता हो और जिसे चुने गए स्थान के लिए प्रतीक (साइनेज) के रूप में प्रयोग किया जा सके। इस चिह्न का A5 कागज शीट पर चित्रण करें।

अपने मित्रों को यह साइनबोर्ड दिखाएँ और उनसे पूछें कि वे इसके बारे में क्या सोचते हैं?

सूचना— जिस वस्तु को आप नियमित रूप से चुनते हैं उस पर ध्यान दें। उदाहरण के लिए, आप भोजन करते समय काँटा और चम्मच का उपयोग नहीं कर सकते, ऐसे में आप अपने भोजन को दर्शाने के लिए वैकल्पिक चिह्न के बारे में क्या सोच सकते हैं?

गतिविधि 15.4 — वस्तुओं के रूप में प्रतीक

आपने देखा होगा कि वस्तुओं की छवियाँ विभिन्न उद्देश्यों के लिए बनाई जाती हैं। ये आपके आस-पास के स्थानों या चिह्नों के लिए संकेत हो सकते हैं। वस्तुएँ प्रतीक भी बन जाती हैं।

प्रतीकों का गहरा अर्थ होता है और वे विचारों या भावनाओं का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। हो सकता है कि वे सीधे उस दृश्य से संबंधित न हों, जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं। धर्म चक्र हमारे राष्ट्रीय ध्वज का केंद्र है। इस नीले चक्र (पहिया) में 24 तीलियाँ हैं। यह सारनाथ के सिंह स्तंभ से लिया गया धर्म की अवधारणा का चित्रण है, जिसे तीसरी शताब्दी में मौर्य सम्राट अशोक द्वारा बनाया गया था।

- नीला रंग आकाश और महासागर का प्रतीक है।
- पहिया प्रगति को दर्शाता है।
- 24 तीलियाँ दिन के 24 घंटों का प्रतीक हैं।

'स्वच्छता अभियान' के प्रतीक चिह्न में गोलाकार चश्मा महात्मा गांधी का प्रतीक है। चश्मे के पुल में राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा है। यह महात्मा गांधी के 'स्वच्छ भारत' के विजन के लिए पूरे देश के एकजुटता के महत्व को दर्शाता है।

चश्मा और पहिया जैसी प्रतिदिन की वस्तुएँ शक्तिशाली प्रतीक बन जाती हैं जब उनके अर्थ को स्वीकार करके वे बड़े विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

क्या आप ऐसी अन्य वस्तुओं के बारे में सोच सकते हैं जिसका उपयोग प्रतीकों के रूप में किया जाता है।

अभियानों, संस्थाओं और राजनीतिक पार्टियों के प्रतीक चिह्नों को देखें जहाँ हम वस्तुओं को प्रतीकों के रूप में उपयोग करते हुए देखते हैं उनके अर्थ क्या दर्शाते हैं?

क्या चिह्नों और प्रतीकों में कोई अंतर है?

याद रखें कि प्रतीकों का एक गहरा अर्थ होता है।

चिह्न भी प्रतीक हो सकते हैं यदि उन्हें और अधिक अर्थ दिए जाएँ। प्रतीक वहाँ दर्शाए जाते हैं जहाँ वे प्रतिनिधित्व करते हैं। उदाहरण के लिए, भारतीय गोलाकार चश्मे को महात्मा गांधी जी के मूल्यों और कार्यों से जोड़ सकते हैं। जबकि लोग उस संबंध को नहीं बना सकते, वे इसे केवल चश्मे की जोड़ी के रूप में देख सकते हैं।

चित्रांकनों का शब्दावलियों से मिलान करें—

सिल्हूट

स्टेंसिल

एक-दूसरे को आपस में काटती रेखाएँ (क्रॉस-हैचिंग

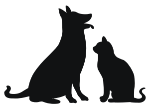

बिंदु चित्रण

चिह्न (आइकन)

संकेत या निर्देश या चित्रण (साइनेज)

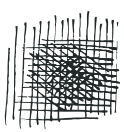

प्रतीक चित्रण (सिंबल)

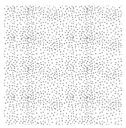

सहकर्मी आकलन

अपने सहपाठियों द्वारा बनाए गए संकेतों को देखकर कुछ पंक्तियाँ लिखें, निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार करें।

1. क्या यहाँ संकेत (साइनेज) में कोई प्रतीक है? उनका वर्णन करें।

----

2. क्या संकेत (साइनेज) पर दी गई जानकारी स्पष्ट और समझने में आसान है?

----

3. संकेतों (साइनेज) के बारे में आपको कौन-सी दो विशेषताएँ पसंद आईं?

----

4. आपको इसके डिजाइन में क्या सुधार करने की आवश्यकता लगती है?

आकलन

अध्याय 15 — वस्तुओं में चिह्न और प्रतीक				
सी.जी.	**सी.**	**सीखने के प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
1	1.1	वस्तुओं को ध्यानपूर्वक और उन्हें ठीक वैसे ही चित्रित करने का प्रयास करना जैसी वे दिखाई देती हैं।		
2	2.2	चिह्न बनाना और परिचित वस्तुओं को चित्रित करना।		
2	2.2	परिचित चिह्नों, प्रतीकों और लोगो द्वारा व्यक्त किए गए अर्थों का वर्णन करना।		
3	3.1	चिह्नों और प्रतीकों में सकारात्मक और नकारात्मक स्थानों की पहचान करना।		
3	3.1	किसी कलाकृति में प्रकाश, छाया और परछाई दिखाने के लिए विभिन्न छायांकन तकनीकों (रेंडरिंग तकनीकों) को प्रयोग में लाना।		
3	3.2	संकेतों (साइनेज) को डिजाइन करना, बनाना और प्रदर्शित करना।		

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

----

16 प्राकृतिक रंगपट्टिका

प्रकृति हम पर हर दिन रंगों की वर्षा करती है। इंद्रधनुष रंगों की शृंखला को प्रदर्शित करता है जिन्हें मानव आँखों से देखा जा सकता है।

रंग प्रकाश के कारण दिखाई देते हैं। जब प्रकाश बदलता है तो रंगों का स्वरूप भी बदल जाता है। उदाहरण के लिए, एक चमकीला लाल टमाटर मंद रोशनी वाले कमरे में फीका और गहरा दिखाई दे सकता है। जब बहुत अधिक प्रकाश होता है तो सब कुछ सफेद दिखाई देता है। जब प्रकाश नहीं होता तो सब कुछ काला दिखाई देता है। दृश्य कला में, प्रकाश प्रभाव को रंगों की टिंट (रंगों का हल्कापन) छायाएँ और टोन बनाकर दर्शाया जाता है।

रंग दृश्य कला का एक महत्वपूर्ण तत्व है। नियमित अभ्यास से आप रंगों को बनाने, मिलाने और उनके साथ काम करने की अपनी प्रक्रियाओं में सुधार करेंगे। आप न केवल अपने काम के लिए, अपितु अन्य कलाकृतियों की सराहना करने के लिए रंग चक्र का उपयोग करना सीखेंगे।

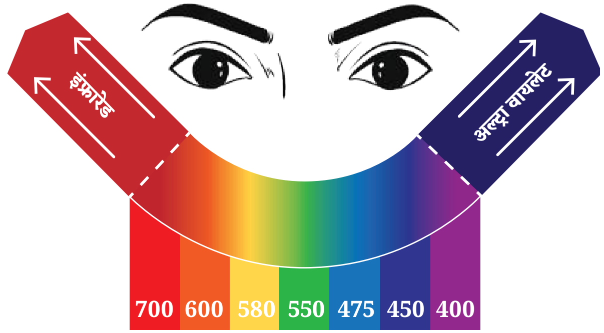

मानव आँखों को दिखाई देने वाले रंग

सभी लोग रंगों को एक जैसा नहीं देखते हैं यह महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक व्यक्ति रंगों को कैसे देखता है, इसके प्रति संवेदनशील होना महत्वपूर्ण है। जिन लोगों में रंग दृष्टि में कमी होती है, जिसे सामान्यतः पर रंग दृष्टि दोष कहा जाता है, वे कुछ रंगों को अलग तरह से देख सकते हैं। लाल रंग भूरा दिखाई दे सकता है या नीले और हरे रंग के बीच अंतर करने में कठिनाई अनुभव हो सकती है। कई दृश्य कलाकार और वास्तुविद हैं जो विभिन्न प्रकार की दृष्टि दोष से पीड़ित हैं, जिन्होंने अपने वातावरण के साथ काम करने के लिए रचनात्मक निष्कर्ष ढूँढ़ निकाले हैं।

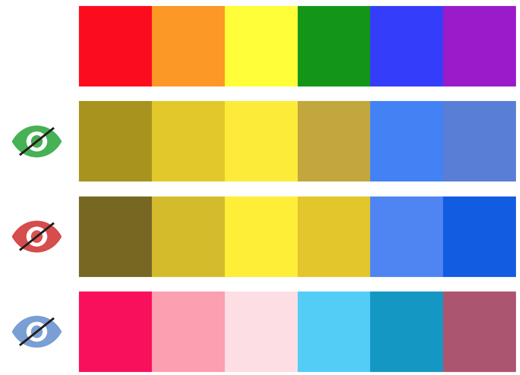

रंग दृष्टिबाधित या रंगाधता लोगों को दिखाई देने वाली रंगों की श्रेणी

गतिविधि 16.1 — रंग चक्र (कलर व्हील) का विस्तार करें

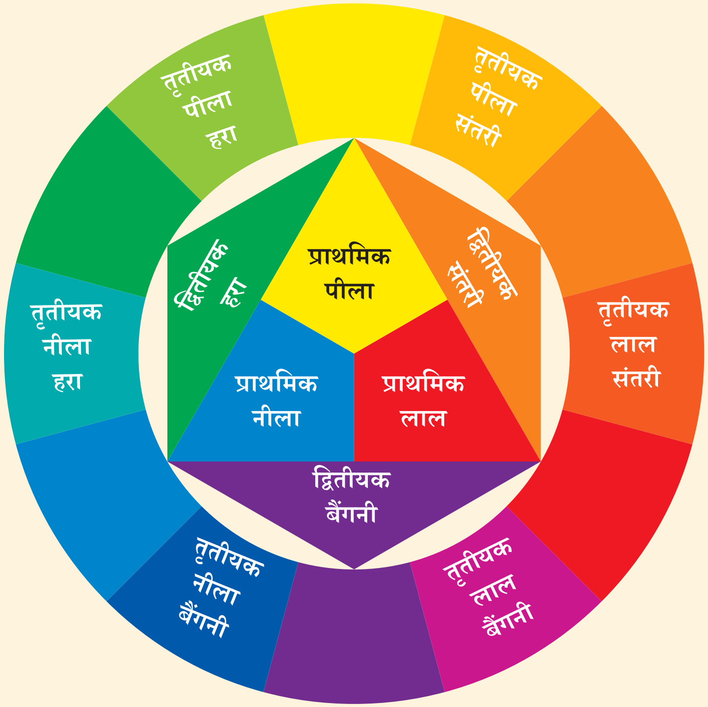

यहाँ रंग चक्र (कलर व्हील) को देखें। बीच में आपको तीन प्राथमिक रंग मिलेंगे— पीला, लाल और नीला। इन रंगों को किसी अन्य रंग को मिलाकर नहीं बनाया जा सकता।

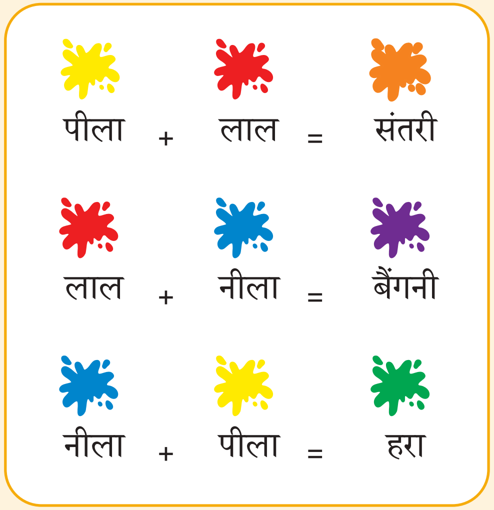

प्रत्येक प्राथमिक रंगों के जोड़े को मिलाने से एक द्वितीयक रंग उत्पन्न होता है। अब आप तृतीयक रंग बनाना सीखेंगे ये रंग किसी द्वितीयक रंग को किसी प्राथमिक रंग के साथ मिलाकर बनाए जाते हैं। उदाहरण के लिए, हरा (द्वितीयक रंग) जो पीले और नीले (प्राथमिक रंगों) को मिलकर बनाया जाता है।

हरे रंग से बने तृतीयक रंग हैं—

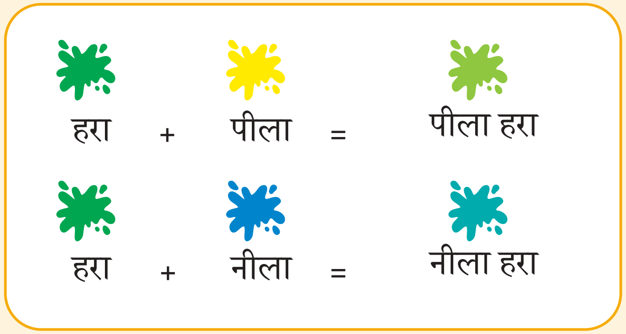

रंग चक्र को देखें और अन्य तृतीयक रंगों के नामों का उल्लेख करें। उन्हें बनाने के लिए मिश्रित किए गए जिन रंगों का उपयोग किया जाता है, उनका उल्लेख करें।

तृतीयक रंगों के नमूने बॉक्स में चिपकाएँ या रंग करें।

---------------------- + ---------------------- = ----------------------

---------------------- + ---------------------- = ----------------------

---------------------- + ---------------------- = ----------------------

---------------------- + ---------------------- = ----------------------

एक रंग चक्र का चित्र बनाएँ

सामग्री— इस गतिविधि के लिए जल रंग या पोस्टर रंग अधिक उपयुक्त हैं यद्यपि आप इस गतिविधि के लिए उपयुक्त अन्य रंगों, जैसे— मोम के रंग, पेंसिल के रंग, पाउडर रंग आदि जैसे अन्य सूखे माध्यमों के साथ भी प्रयोग कर सकते हैं।

चरण 1— प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक रंगों को प्रदर्शित करने के लिए अपने रंग चक्र का चित्रण करें।

चरण 2— केवल लाल, नीले और पीले रंग का उपयोग करके अपने रंग मिलाएँ ताकि सभी रंगों को बनाया जा सके। यह सबसे महत्वपूर्ण चरण है।

चरण 3— संदर्भ के लिए पिछले पृष्ठ पर दिए गए चित्रों को देखें। समुचित भागों में रंग भरें। विभिन्न प्रकार की रेखाएँ (स्ट्रोक), रंगीन धब्बे (पैच), बिंदु (डॉट्स) या कोई अन्य माध्यमों का उपयोग करें।

चरण 4— अपना पूरा रंग चक्र प्रदर्शित करें और इसे अन्य गतिविधियों के लिए सुरक्षित रखें, जिन्हें आप शीघ्र ही करने वाले हैं।

गतिविधि 16.2 — रंगों की रंगत बनाएँ

आपने प्रकाश और छाया बनाने के लिए, एक-दूसरे को आपस में काटती रेखाएँ और बिंदु चित्रण का उपयोग करना सीखा है। आइए, अब रंगों से छाया चित्रण करने का अभ्यास करते हैं।

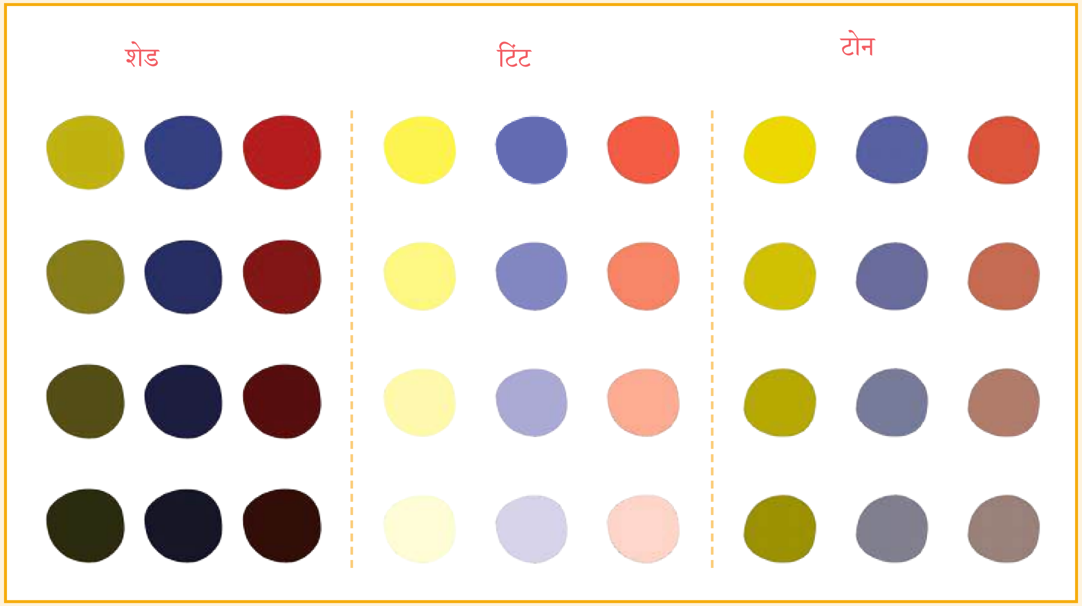

तकनीकी सुझाव

रंगों का उपयोग करते समय अपने कटोरे का पानी बदलना और रंगों का मिश्रण करने के बाद अपनी तूलिका को अच्छी तरह से धोना महत्वपूर्ण है! यह आपको अपनी पसंद के सही रंग, शेड और टोन पाने में मदद करेगा।

किन्हीं भी दो रंगों की रंगत और छाया बनाएँ

- रंगों और छाया (शेड्स) के कम-से-कम चार रूप बनाएँ।
- रंग में थोड़ी मात्रा में काला या सफेद रंग मिलाकर शुरुआत करें।
- प्रत्येक स्तर के लिए काले या सफेद रंग की मात्रा बढ़ाएँ।

चुने गए दो रंगों से टोन बनाएँ

ग्रे रंग को किसी रंग के साथ मिलाकर टोन तैयार किया जाता है। किंतु आप ये ग्रे रंग कैसे बनाते हैं?

- काला और सफेद रंगों को मिलाकर ग्रे रंग बनाएँ।
- अन्य रंगों को बनाने के लिए ग्रे रंग को अन्य रंगों के साथ मिलाएँ।
- चार स्तर के रंगों के शेड बनाने का प्रयास करें।

गतिविधि 16.3 — रंगों के माध्यम से पौधे का अध्ययन

पौधे अलग-अलग मौसमों में बढ़ने के साथ-साथ अपना रूप और रंग बदलते हैं। फल और सब्जियाँ प्राय: कच्चे होने पर हरे रंग के होते हैं और पकने पर रंग बदलते है। आइए, हम रंगों को बेहतर ढंग से समझने के लिए पौधों का कलात्मक अध्ययन करें।

चित्रांकन के माध्यम से पौधे का अध्ययन

चरण 1— ऐसी टहनी का चयन करें जिसमें कुछ पत्तियाँ या एक पुष्प हो (ये अपने जीवन की किसी भी अवस्था के हो सकते हैं)।

चरण 2— इसे अपने सामने रखें और इसकी स्थिति को न बदलें।

चरण 3— कम-से-कम दो फुट की दूरी पर बैठकर उसके आकार और आस-पास के स्थान का निरीक्षण करें।

चरण 4— हल्की रेखाओं का उपयोग करते हुए, दो अलग-अलग कोणों से चित्र बनाएँ।

चरण 5— इसके बाद, उन कोणों में से एक को चुनें और दूसरा चित्र शुरू करें।

चरण 6— अपने कागज पर अधिकतम स्थान का प्रयोग करें और धीरे-धीरे चित्रित करें, ताकि विवरणों को चित्र के रूपों में चित्रित किया जा सके।

चरण 7— चित्र को पूरा करें और उसे रंग भरने के लिए तैयार रखें।

अपने पौधे के अध्ययन में रंगों को भरें

चरण 1— रंग भरने के लिए कोई भी माध्यम चुनें, जैसे— मोम के रंग, रंगीन पेंसिल, पेस्टल, जल रंग और पोस्टर रंग इत्यादि।

चरण 2— पौधे के रंगों का निरीक्षण करें और रंग चक्र से सही छाया (शेड), हल्का रंग (टिंट) या टोन प्राप्त करें।

चरण 3— अपनी कलाकृति में प्रकाश, छाया और अँधेरे को चित्रित करें।

चरण 4— अपनी कलाकृति को पूरा करें और कक्षा में प्रदर्शित करें।

स्वयं मूल्यांकन करें

1. आपने कितने रेखाचित्र (कंटूर) बनाए?
2. आप क्या अच्छे से करने में सक्षम थे?
3. आपने जिन चुनौतियों का सामना किया अपने कार्य में जिन सुधारों की आवश्यकता अनुभव की उनके बारे में लिखिए।

यह वनस्पति चित्रण *हॉर्टस मालाबारिकस* पुस्तक से है कहा जाता है। इसका अर्थ है 'मालाबार का बगीचा।' इस पुस्तक में 17वीं शताब्दी के दौरान भारत के मालाबार तट पर पाए जाने वाले हजारों औषधीय पौधों का विवरण है।

लघुचित्र कला (मिनिएचर) में रंग

आपको यह ज्ञात होगा कि चित्रकला विभिन्न प्रकार की सतहों पर बनाई जा सकती है, जैसे— चट्टानें, दीवारें, मिट्टी, ताड़ के पत्ते, कागज, कपड़ा, लकड़ी, धातु, काँच, रबड़ एवं अन्य सिंथेटिक प्लास्टिक जो आज उपलब्ध हैं।

कलाकृति के लिए प्राकृतिक रंग और रंगद्रव्य, मिट्टी, खनिजों और पौधों से प्राप्त किए जाते हैं। जिन्हें विभिन्न विधियों से निकाला जाता है। यदि इन रंगों को अत्यधिक प्रकाश, नमी या विभिन्न जीवित प्राणियों के संपर्क लाया जाए तो ये रंग समय के साथ फीके पड़ जाते हैं और अंततः गायब हो सकते हैं।

यह समयरेखा भारतीय चित्रकला के महत्वपूर्ण चरणों और समय के साथ रंग की विकास यात्रा को दर्शाती है।

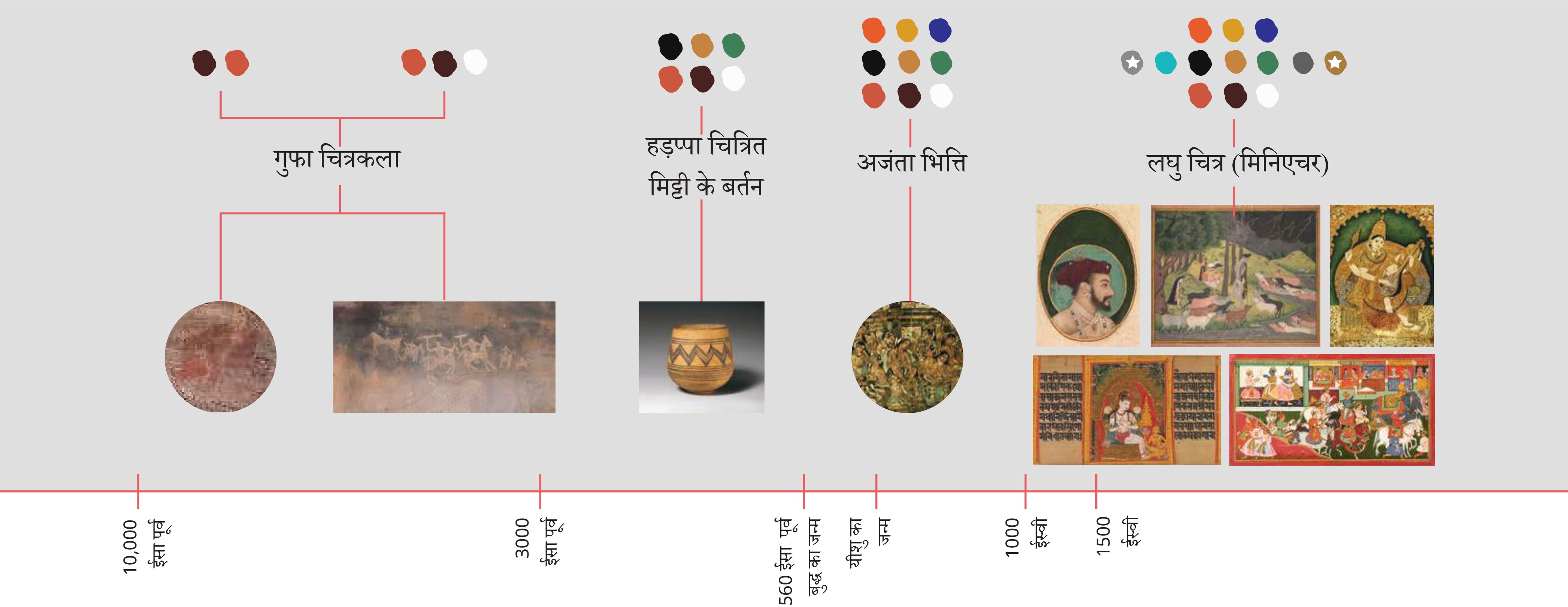

लघुचित्र (मिनिएचर) कई शैलियों में होते हैं और सामान्यत: आकार में छोटे होते हैं। भारत में, इन्हें आरंभ में ताड़ के पत्तों पर बनाया जाता था। 12वीं शताब्दी से, कलाकारों ने लघुचित्रों को कागज पर बनाना आरंभ कर दिया था। उनके विषयों में धार्मिक ग्रंथ, पौराणिक कथाएँ, प्रकृति, चित्रांकन और दरबार जीवन सम्मिलित थे।

ताड़ के पत्ते की पांडुलिपि

मुगल लघुचित्र कला

किशनगढ़ की लघुचित्र कला

क्या आप जानते हैं?

'मिनिएचर' शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द 'मिनियम' से हुई है, जो लाल रंग का एक रंगद्रव्य है, जिसका उपयोग मध्यकालीन पांडुलिपियों में रूपरेखा बनाने और पाठ लिखने के लिए किया जाता था।

नीचे दी गई तालिका तुम्हें लघुचित्रों में प्रयोग किए गए कुछ रंगों के स्रोत के बारे में बताती है, जिसे बबूल के पेड़ से निकाले गए गोंद के साथ मिलाया जाता था, जो रंगों को बांधने का कार्य करता है।

रंग	स्रोत
चमकदार लाल	*सिंदूरी रंग*
मिट्टी जैसा लाल रंग	*गेरू या लाल मिट्टी*
पीला	*पीला पत्थर या गौमूत्र*
हरा	*पत्तियाँ, ताम्र कार्बोनेट*
नीला	*लाजवर्दी रंग या गाढ़ा नीला*
काला	*कोयला*
सफेद	*खड़िया या सफेद चिकनी मिट्टी*

सोने और चाँदी का उपयोग लघुचित्रों (मिनिएचर) में भी किया जाता था। सोने और चाँदी को पीटकर बहुत पतली चादरों में ढाला जाता है जिन्हें सोने की पत्ती और चाँदी की पत्ती कहा जाता है। इनका प्रयोग चित्रकला और अन्य शिल्प कलाओं में भी होता है।

लघुचित्र कला (मिनिएचर) के लिए उपयोग की जाने वाली तूलिका (ब्रश) सामान्यतः जानवर, जैसे— ऊँट, बकरी, गाय, चूहे, गिलहरी और नेवले की पूँछ के बालों से बनाई जाती थी।

लघुचित्र कला (मिनिएचर) में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है

कला सामग्री और उपकरणों की देखभाल या रखरखाव करना

यह महत्वपूर्ण है कि हम जिस स्थान पर काम करते हैं और जिन सामग्रियों एवं उपकरणों का उपयोग करते हैं उनकी भी देखभाल करें।

- प्रत्येक बार उपयोग करने के पश्चात तूलिका (ब्रश), रंगपट्टिका (पैलेट) और अपने अन्य उपकरणों को अच्छी तरह से साबुन से साफ करें।
- रंग को सूखने से बचाने के लिए रंग की ट्यूब, बोतलें, स्केच पेन और मार्कर को उनके ढक्कन से बंद करके रखें।
- सभी सामग्रियों को व्यवस्थित ढंग से रखें ताकि उन्हें आसानी से ढूँढ़ा जा सकें और अन्य लोग भी उनका उपयोग कर सकें।

लघुचित्र कला (मिनिएचर) में उपयोग होने वाली तूलिका (ब्रश)

गतिविधि 16.4 — लघुचित्र (मिनिएचर) रंगपट्टिका का विश्लेषण

18वीं शताब्दी की इस राजस्थानी लघुचित्र कला (मिनिएचर) को ध्यान से देखें। हरे-भरे परिदृश्य में लोग दिखाई दे रहे हैं, वे प्रसिद्ध संगीतकार तानसेन, उनके गुरु स्वामी हरिदास और मुगल सम्राट अकबर हैं। नीचे दिए गए इन बिंदुओं पर चर्चा करें—

1. इस चित्रांकन (पेंटिंग) में क्या प्रदर्शित किया जा रहा है?
2. क्या आप मौसम और समय का अनुमान लगा सकते हैं?
3. आपने इनमें कौन-कौन-सी मनोदशा या भावना का अनुभव किया है।
4. हरे रंग की विभिन्न छायाएं (शेड्स) जो आपको दिखाई दे रही है उनका रंग चक्र (कलर व्हील) के माध्यम से विश्लेषण करें।
5. इस चित्र में सबसे बड़ा पेड़ कहाँ लगा है? आपको क्या लगता है कि कलाकार ने ऐसा क्यों किया?
6. पत्तियों के पैटर्न से बने स्वरूपों और बादलों की महीन रेखाओं को देखें। साथ ही चित्रांकन (पेंटिंग) में आपको क्या-क्या विवरण दिखाई देते हैं?

लघुचित्रों (मिनिएचर) के बारे में जो कुछ आपने सीखा है, उस पर एक संक्षिप्त अनुच्छेद लेखन करें।

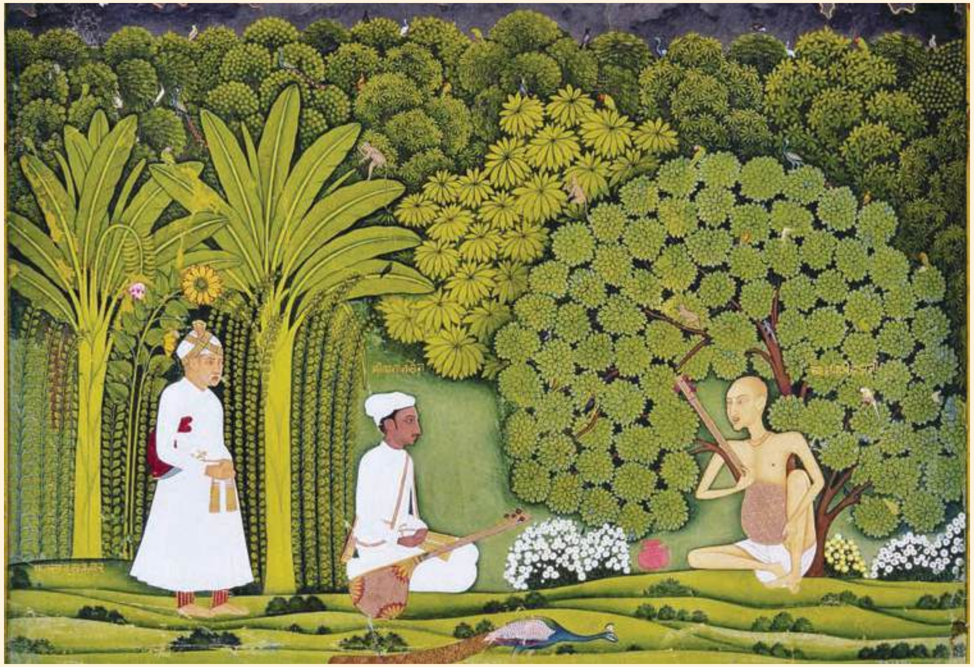

राजस्थान के वर्ष 1700–1760 में बने लघुचित्र (मिनिएचर) में वृंदावन के बगीचे में बादशाह अकबर, स्वामी हरिदास और तानसेन को दिखाया गया है।

आकलन

किसी भी कला कार्य में रंगों के माध्यम से व्यक्त की गई मनोदशा, भावना और ऋतुओं का अवलोकन करें।

आकलन

अध्याय 16 — प्राकृतिक रंगपट्टिका (पैलेट)				
सी.जी.	सी.	सीखने के प्रतिफल	शिक्षक	स्वयं
1	1.1	पौधे के किसी चुने हुए हिस्से का अवलोकन करें और उसमें रंग भरें।		
2	2.2	कलाकृति में रंगों के माध्यम से व्यक्त मनोदशा, भावना और ऋतुओं को पहचानें।		
3	3.1	रंग चक्र, रंगों के शेड हल्केपन या गहरेपन और छाया बनाने का अभ्यास करें।		

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

17 आप कैसा अनुभव करते हैं

0780CH17

इस अध्याय में आप मानव शरीर और चेहरे के हाव-भाव के कई पहलुओं को समझेंगे।

आप चेहरे को बनाना और भावनाओं को व्यक्त करना सीखते समय उसमें छिपे हुए अनुपातों और संतुलनों की खोज करेंगे।

तमिलनाडु के महाबलीपुरम में बने शैल चित्र को देखते हुए आप उस समय की यात्रा करेंगे।

आप मिट्टी से ऐसे उभरे हुए चित्र (रिलीफ) बनाना सीखेंगे, जो चेहरे के भाव को दर्शाते हैं।

अंततः, आप लोकप्रिय संस्कृति की विभिन्न रूढ़ियों को समझेंगे और उनको नई दृष्टि से कलाकृति में दर्शाएँगे।

गतिविधि 17.1 — अभिनय करिए और पहचानिए

आपने रंगमंच और नृत्य में 'नवरसों' के बारे में सीखा होगा। अब हम इन पर आधारित चेहरों के विभिन्न भावों का खेल खेलते हैं।

चरण 1— समूह बनाएँ और दिए गए डिब्बे से संकेत चुनें।

चरण 2— प्रत्येक समूह से एक व्यक्ति एक आशु अभिनय करेगा।

चरण 3— अन्य व्यक्ति उसके शरीर की गतिविधियों और चेहरे के भावों को ध्यान से देखेंगे।

क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि वे कौन-सा भाव दिखा रहे हैं?

आपके हाव-भाव जब...

- आपके परिवार के सदस्य या दोस्त आपको गले लगाते हैं
- किसी से आपको मदद या सहायता प्राप्त करते हैं
- जब आप जानवरों या पौधों के साथ समय बिताते हैं
- आपने मेहनत की और आपको इनाम मिला या मनचाहा फल नहीं मिला
- जब कोई कीड़ा या जानवर अचानक आपके सामने आता है
- आप किसी और पर हँसते हैं या मजाक उड़ाते हैं
- आप किसी ऐसे व्यक्ति से मिलते हैं जिससे आपको बहुत लगाव है
- आपने किसी की सहायता से उसे सफल बनाया
- जब आप गाते, नाचते या कोई वाद्य बजाते हैं
- कोई आपसे कठोरता से बात करता है या बात करना बंद कर देता है
- आपको कुछ नया मिला
- दूसरे लोग आप पर हँसते हैं या मजाक उड़ाते हैं

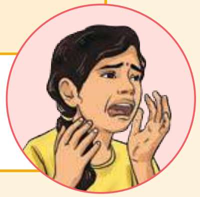

गतिविधि 17.2 — मानव सिर के अनुपात

क्या कारण है कि एक बच्चे का चेहरा एक व्यस्क के चहरे से भिन्न दिखता है। इसका कारण चेहरे का अनुपात है।

चित्र को देखिए और विश्लेषण करें कि जैसे-जैसे कोई व्यक्ति बढ़ता है तो उसके चहरे का अनुपात कैसे बदलता है?

कला में गणित

चित्रों को देखें और उनके चेहरे के अनुपातों को गणितीय अभिव्यक्ति के रूप में लिखें! अपने गणित शिक्षक की सहायता लें।

अनुपातों के अनुसार चेहरा बनाएँ और अलग-अलग कोणों से सिर का चित्र बनाएँ।

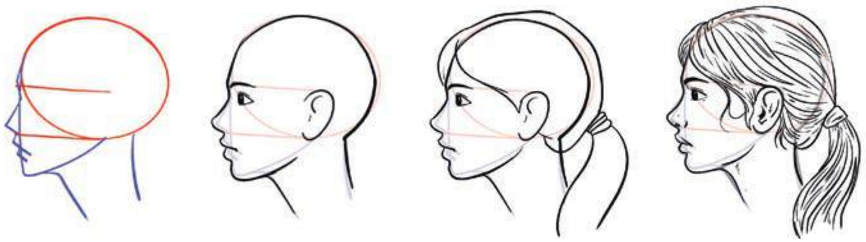

आप अपनी तर्जनी उंगली का उपयोग करके अपने चेहरे के विभिन्न हिस्सों को माप सकते हैं।

अपनी नाक के लंबाई नापें और उसी का उपयोग करते हुए अपने कानों, आँखों, माथे आदि को भी नापें।

आप ये रोचक बातें जानेंगे—

- दो आँखों के बीच की जगह, एक आँख के बराबर होती है।
- आपके कान आपकी भौंहों से लेकर नाक की नोक तक के बीच में स्थित होते हैं।

गतिविधि 17.3 — चेहरे के हाव-भाव का चित्रण

चरण 1— अपने दोस्तों से कुछ समय के लिए विभिन्न चेहरे के भाव दर्शाने को कहे, जैसे— मजेदार, उदास, हँसते हुए और चिंतित आदि हैं। प्रत्येक हाव-भाव के साथ आँखों, भौहों, मुख, जबड़े में जो परिवर्तन होता है उसका अवलोकन करें।

चरण 2— अनुपातों पर ध्यान केंद्रित करते हुए चार से पाँच चेहरों का चित्रण करें।

चरण 3— आँखें, भौहें और मुँह में परिवर्तन करते हुए चेहरे के विभिन्न भाव चित्रित करें।

चरण 4— अब अपने स्वयं के इमोजी चित्रित करने का आनंद लें।

आकलन

1. मानव सिर के अनुपात का अध्ययन और चित्रण करें।
2. भावनाओं को व्यक्त करने के लिए चेहरे के विभिन्न भावों को चित्रित करें।

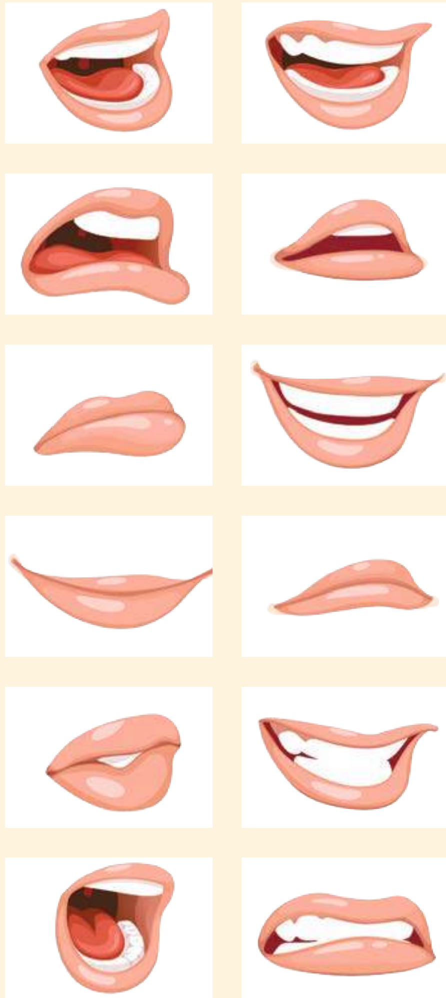

गतिविधि 17.4 — चलिए, अतीत की यात्रा पर चलें!

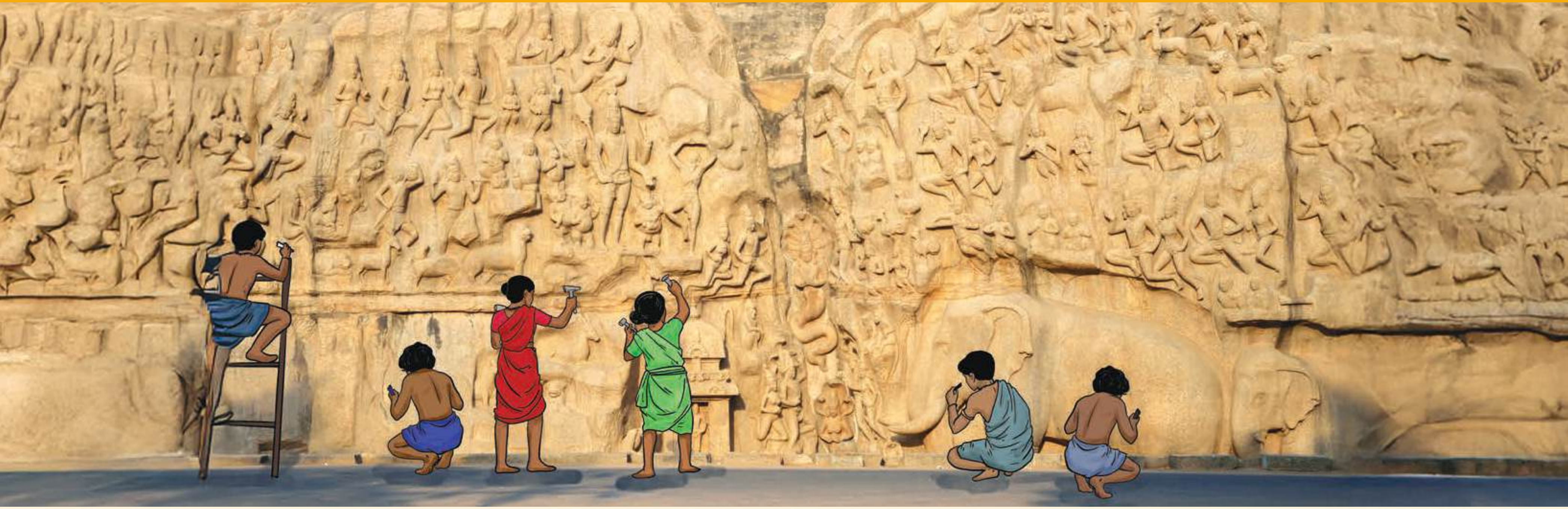

कल्पना कीजिए कि आप समय यंत्र में बैठकर 8वीं शताब्दी में पहुँच गए हैं। आप तमिलनाडु के महाबलीपुरम में इस पत्थर से तराशी गई विशाल मंदिर के सामने हैं।

आप देख रहे हैं कि मूर्तिकार कार्य कर रहे हैं, वे 'गंगा का अवतरण' गढ़ रहे हैं कुछ अन्य आपको 'अर्जुन की तपस्या' की कहानी बताते हैं।

उन्हें कार्य करते देख आप कल्पना करते हैं कि नदी दो गोल शिलाखंडों के बीच से बह रही है। संपूर्ण जीवन नदी के आस-पास जमा हो गया है। यह मूर्तिकला पवित्र जल को समर्पित कहानियों और मिथकों को जीवंत करती है। कुछ विवरण स्पष्ट दिखाई देते हैं जबकि कुछ अधूरे लगते हैं। प्रत्येक दृश्य आपको उत्साहित करता है और आपको गहराई से सोचने के लिए प्रेरित करता है।

मिट्टी से चेहरे उकेरना (रिलीफ)

स्विश्श्श ! ...समय यंत्र आपको वापस 21वीं सदी में ले आया और अब आपके हाथ में यह पुस्तक है।

महाबलीपुरम की तटीय मंदिर की मूर्तियाँ समय के साथ घिस गई हैं। आपको पत्थर काटकर उकेरी गई। इन मूर्तियों का अंग संचालन और उनके हाथों में रंगमंच सामग्री दिखाई देगी। इन लोगों की पहचाना जा सकता है यद्यपि उनके हाव-भाव स्पष्ट नहीं है। मूर्तियाँ भारतीय कला और पौराणिक कथाओं के गहरे ऐतिहासिक महत्व को दर्शाती है।

किन्नर — अर्ध-मानव अर्ध पक्षी या पशु

गंधर्व — स्वर्ग में संगीत और नृत्य के कलाकार

यक्ष — नाटे लोग

तीर्थ के पास बैठा ऋषि

भगीरथ मुनि, जिनके अर्जुन भी अनुयायी थे

क्या आप जानते हैं?

रिलीफ उभरी मूर्ति एक ऐसी मूर्ति होती है जो अपनी पृष्ठभूमि से जुड़ी होती है। इसका पिछला हिस्सा समतल या बिना तराशा होता है।

चित्रों को ध्यान से देखिए और उनमें दिखाए गए पात्रों को पिछले पृष्ठ पर दिए बड़े चित्र में खोजिए।

चूँकि अब आप चेहरे के भाव बनाना सीख चुके हैं तो उन पुनः पात्रों के चेहरों की कल्पना करें।

प्रत्येक चेहरे को 15 × 15 से.मी. के कागज पर हाव-भाव सहित बनाएँ।

अपने चित्र को पूरा करने के पश्चात फिर एक चित्र चुनें, उसे काटें और इसे मिट्टी के रिलीफ़ के लिए तैयार रखें।

शैक्षणिक भ्रमण

किसी ऐतिहासिक धरोहर स्थल पर जाएँ, जहाँ मूर्तियाँ हों उनके शरीर की मुद्राओं, हाव-भाव और भावनाओं का अवलोकन करें, अध्ययन करने के पश्चात चित्रित करें।

मिट्टी से मूर्ति बनाने की प्रक्रिया

1. कुछ प्राकृतिक मिट्टी लें। यदि सूखी है तो इसे एक दिन के लिए पानी में भिगोने की आवश्यकता है। ताकि यह मुलायम या नरम हो जाए।

2. मिट्टी गूँथने की प्रक्रिया में उसमें से पत्थर और कंकड़ को हटा दें।

3. आपकी मिट्टी काम करने के लिए उपयुक्त स्थिरता की होनी चाहिए। बहुत अधिक पानी इसे चिपचिपा बना देगा और बहुत कम पानी इसमें दरार उत्पन्न करेगा।

4. मिट्टी की लोई बनाकर इसे अपनी हथेली से समतल करें।

5. इसे बेलन की सहायता से धीरे-धीरे बेले ताकि इसका आकार लगभग 15 सेंटीमीटर लंबा, 15 सेंटीमीटर चौड़ा और 3 सेंटीमीटर ऊँचाई का एक पट्टी बनाई जा सके।

6. प्रतिरूपण (मॉडलिंग) के लिए मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करें या चम्मच, आइसक्रीम स्टिक, मक्खन छुरी, जैसे बिना धार वाले रसोई उपकरणों के साथ प्रयोग करें।

7. एक नुकीले उपकरण से धीरे-धीरे अपने कागज की कटिंग को पट्टी पर ट्रेस करें।

8. पृष्ठभूमि से मिट्टी की एक पतली परत को हटाना शुरू करें ताकि सामने की सतह उभरी हुई लगे।

9. जो मिट्टी आपने हटाई है, उसे फेंकिए नहीं। उसे इकट्ठा करके एक गेंद बनाकर गीला करके रखें ताकि उसे फिर से उपयोग किया जा सके।

10 इस मिट्टी का उपयोग करके भौहें, पलकें, आँखें, गाल, नाक, मुँह, ठुड्डी आदि जैसे चेहरे के अंगों को आकार दें।

11 प्रक्रिया के दौरान अपनी पट्टी को समय-समय पर हल्के से पानी छिड़ककर नरम करके रखें।

12 अपने उपकरणों का उपयोग करके चेहरे के अंगों को परिष्कृत करें और मनचाहे भावों को उकेरें।

13 अपना काम पूरा करने के बाद और पट्टी के ऊपर की ओर पेंसिल से एक छेद करें। यह आपके रिलीफ को टांगने में मदद करेगा।

14 कुछ दिनों के लिए इसे सूखने दें।

वैकल्पिक— आप अपनी कलाकृति को पूरी तरह से सूखने पर रंग सकते हैं।

तकनीकी सुझाव

मिट्टी के विभिन्न हिस्सों को आपस में जोड़ने के लिए मिट्टी को एक चिकने लेप में बदल दिया जाता है, जो चिकना पेस्ट (स्लिप) कहलाता है।

जिस स्थान पर भागों को जोड़ना है, वहाँ पहले निशान बनाकर सतह को खुरदरा किया जाता है। फिर उस पर स्लिप लगाई जाती है (जो गोंद की तरह काम करती है) और दूसरा भाग उसमें जोड़ा जाता है।

अब अपनी कार्य-प्रक्रिया पर विचार करें और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें—

1. क्या आपकी कलाकृति में कार्य करने के दौरान दरारें आईं?

----

2. इसके क्या कारण हो सकते हैं?

मिट्टी का लेप (स्लिप)

गतिविधि 17.5 — प्रत्येक की एक सुंदर कहानी होती है।

'गंगा का अवतरण' में विभिन्न शारीरिक बनावट वाले लोगों को दर्शाया गया है। ध्यान दें कि लोगों को अलग-अलग पेंटिंग शैलियों में कैसे चित्रित किया गया है।

अपने आस-पास विभिन्न शारीरिक प्रकारों का अवलोकन करें, जैसे— छोटे, लंबे, पतले, मोटे, गहरे रंग के, हल्के रंग के, गंजे, बालों वाले, झुके हुए आदि। अपने शरीर का भी अवलोकन करें। आपके मस्तिष्क में क्या विचार आते हैं उनका निरीक्षण करें।

रूढ़िबद्ध धारणाओं का अर्थ है— ऐसी आम धारणाएँ जो किसी व्यक्ति, स्थान या समुदाय के बारे में बनाई जाती हैं जबकि वे तथ्यों पर आधारित नहीं होती। आप शरीर की बनावट को लेकर ऐसी आम धारणाओं पर चर्चा करें।

उदाहरण के लिए— क्या यह मान लिया जाता है कि किसी का शरीर भारी है तो वह तेज नहीं दौड़ सकता? क्या यह समझा जाता है कि पतले लोग कमजोर होते हैं? क्या यह माना जाता है कि त्वचा का एक रंग दूसरे से अधिक सुंदर होता है?

जो चित्र हम पत्रिकाओं, विज्ञापनों, फिल्मों, वीडियो और सामाजिक माध्यमों पर देखते हैं, वे शरीर के बारे में हमारे सोचने के तरीके को प्रभावित करते हैं। शारीरिक रूढ़ियों के अधिक उदाहरण एकत्र करें। आप इन्हें विज्ञापनों, कहानियों के चित्रों, वीडियो, फिल्मों आदि में देख सकते हैं।

अपने स्वयं के ऐसे रचनात्मक चित्र बनाएँ, जो इन रूढ़िबद्ध को चुनौती दें और दर्शाएँ कि प्रत्येक शरीर सुंदर और विशेष होता है।

मुगल चित्र

जैन पांडुलिपि में नृत्यांगना

बंगाल का पटचित्र

वरली चित्रकला

राजा रवि वर्मा द्वारा निर्मित 'गैलेक्सी ऑफ म्यूजिशियन'

आकलन

अध्याय 17 — आप क्या अनुभव करते हैं				
सी.जी.	**सी.**	**सीखने के प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
1	1.1	मानव सिर के अनुपात को देखकर उन्हें पहचानें और चित्रित करें।		
1	1.1	अपनी भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए चेहरे के विभिन्न प्रकार की हाव-भाव को चित्रित करें।		
2	2.1	शरीर की रूढ़ियों को पहचानें और कलाकृतियों में विकल्प चित्रित करना।		
2	2.2	भारतीय मूर्तियों में देखे जाने वाले नवरस और भावनाओं को पहचानें।		
3	3.2	उपयुक्त उपकरणों और तकनीकों का उपयोग कर मिट्टी का रिलीफ बेलना, कुंडलित करना, पिंच करना, थपथपाना, स्कूप करना, स्लिप, पट्टी बनाना।		

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

18 वस्त्रों की कला और परंपरा

0780CH18

ठीक वैसे ही जैसे आप कागज और पेंसिल का उपयोग चित्र बनाने के लिए करते हैं, कलाकार कपड़े, सुई और धागे का उपयोग करके कलाकृति का निर्माण करते हैं।

भारतीय वस्त्रों में तरह-तरह के डिजाइन होते हैं। प्रत्येक का अपना प्रतीकात्मक अर्थ होता है। कला तत्व (मोटिफ) अर्थात सजावटी चित्र जो बार-बार दोहराए जाते हैं और कला तत्व का एक स्वरूप बनाते हैं। ये प्रत्येक क्षेत्र में अलग-अलग होते हैं और आज भी कई पहनने वाले कपड़ों पर देखे जाते हैं।

इस अध्याय की अन्य गतिविधियों पर आगे बढ़ने से पहले, यहाँ कुछ प्रतिरूपों और उनके अर्थों का पता लगाएँ। स्वयं की वस्त्र कला बनाने के लिए कुछ मूलभूत कौशल और तकनीक को सीखें।

पैबंदकारी (पैचवर्क क्विल्ट)

बिंदु और वृत्त
संपूर्णता और आत्मिक ऊर्जा

लकीरें
गति और प्रगति

आम (पैस्ले)
प्रजनन क्षमता, जीवन और अनंतता

तोता
सच्चाई, ज्ञान और प्रेम

मोर
राजस्व, अमरता

इन कला रूपों (मोटिफ) में विभिन्न कला तत्वों को पहचानें

धागों की बुनी कहानियाँ

धागा और सुद्दी एक दिन आपस में बहस करने लगे। धागा चाहता था कि पर्दा खुला रहे और सुद्दी चाहती थी कि पर्दा बंद रहे। वे पर्दे को चारों तरफ से सरकाने लगे। धागे ने परदे को खींचा और वो फट गया और आखिरकार पर्दा चिल्ला पड़ा।

"तुम दोनों रुको!"

पर्दे का स्वर सुनकर धागा और सुद्दी रुक गए।

"देखो तुमने मुझे चोट पहुँचाई है और देखा मैं फट गया हूँ!" पर्दा बोला।

धागा और सुद्दी पास गए और फटे हुए परदे को देखा।

धागे को हिंदी में "धागा" कहते हैं। सुई को तेलुगू में "सुद्दी" कहते हैं। आप जिन भाषाओं को जानते हैं, उनमें इन्हें क्या कहा जाता है? जानिए इन्हें अन्य भारतीय भाषाओं में क्या कहा जाता है?

पर्दे ने बोलना जारी रखा और पर्दे के बनने की कहानी सुनाई।

"जब तुम्हारी आजी (दादी) का देहांत हुआ तो तुम्हारे माता-पिता ने उनके पहने हुए कुछ विशेष कपड़ों, जो वो पहना करती थीं उन्हें संभालकर रख लिया था। मैं वही **पैबंदकारी** (पैचवर्क) हूँ, जो उन्होंने उनके कपड़ों के टुकड़ों से बनाया।

देखिए मेरे शरीर पर सिलाई किए गए कपड़े आपकी आजी के कपड़ों से बने हैं। यहाँ एक टुकड़ा उस सुंदर स्वेटर का है, जिसे उन्होंने स्वयं बुना था। इसके बगल में उस पीली साड़ी का टुकड़ा, जिसमें बड़ा चाय का दाग था! इसके ऊपर के **डिजाइन (मोटिफ)** को स्पर्श कीजिए, आपके पिता

ने उस दाग वाले हिस्से को लिया और उसके ऊपर सुंदर **कढ़ाई** कर डाली।"

क्या तुम मेरे बीच के चौकोर खिड़की जैसे हिस्से को देख रहे हो? इसे **क्रोशे** प्रक्रिया से बनाया गया है। यह टुकड़ा आपकी आजी का सबसे पसंदीदा था। पैबंदरकारी (पैच वर्क) के निचले किनारे पर देखिए। इन्हें **टैसल्स** धागों को सटीक और सुंदर पैटर्न में **गाँठा** गया है। मेरे फटे हुए हिस्से में भी कुछ ढीले धागे लटक रहे हैं... उसे देखो।

"याद रखो, मैं केवल एक पर्दा नहीं हूँ, मैं कहानियों का एक पैचवर्क हूँ। मेरे प्रत्येक टुकड़े की अपनी कहानी है। सभी कई धागों के साथ सिले हुए हैं।

जब धागे आप आपस में लड़ते हैं जैसे तुम दोनों अभी लड़ रहे थे तो आप क्या सोचते हो क्या हुआ होगा?

धागा और सुद्दी एक-दूसरे की ओर देखने लगे और मुस्कुरा दिए। "क्या हम इस फाटे हुए हिस्से को मिलकर साथ में ठीक कर सकते हैं?" सुद्दी ने धागा से कहा।

धागा ने 'हाँ' कहा और दोनों काम में व्यस्त हो गए।

अगर तुम धागा या सुद्दी होते तो आप क्या करते?

गतिविधि 18.1 — कपड़े की डायरी

चरण 1— अपने घर में विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को देखें जो फाइबर और कपड़े से बनी है।

चरण 2— पुराने कपड़े, बैग, मैट या कपड़े के टुकड़ों के नमूनों को इकट्ठा करो। दर्जी से संपर्क करके विभिन्न मोटाई और बनावट वाले कपड़ों के छोटे-छोटे टुकड़े माँग सकते हैं।

चरण 3— कपड़ा इकट्ठा करते समय, प्रत्येक कपड़े की कहानियाँ लिखें जैसे इसे कहाँ पाया, यह किसका है, फाइबर के प्रकार और पैटर्न के बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखें।

चरण 4— अब अपनी डायरी के पृष्ठों की योजना बनाओ। जोड़े में मिलकर काम करो— अपने टुकड़े और उनकी कहानियाँ इकट्ठा करो। इकट्ठी की गई विभिन्न सामग्रियों (सूती, रेशमी, ऊनी, जूट इत्यादि) को पहचानें और इस पर चर्चा करें।

कपड़ों को रंग, बनावट, पैटर्न या सामग्री, जैसे— सूती, रेशम, ऊन के अनुसार व्यवस्थित करें। अपनी टिप्पणियाँ (नोट्स) और कहानियाँ भी डायरी में लिखो ताकि वो रोचक बने।

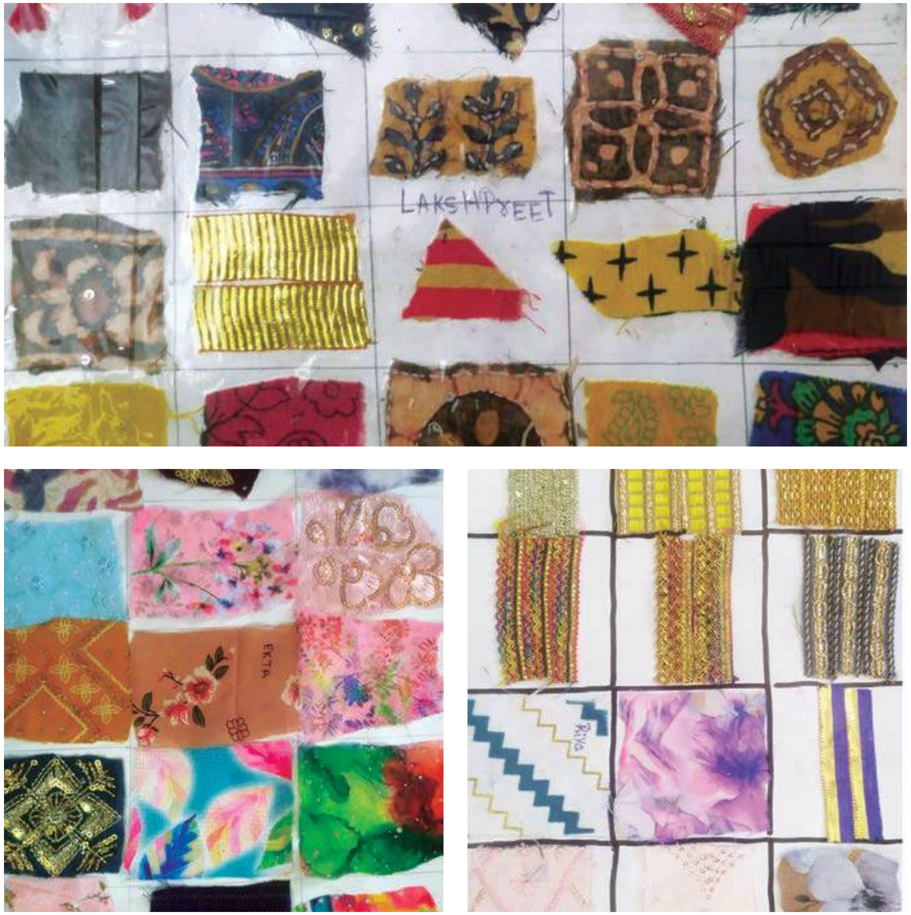

विद्यार्थियों द्वारा इकट्ठे किए गए कपड़ों के नमूने

गतिविधि 18.2 — कढ़ाई की परंपराओं का अन्वेषण

कढ़ाई कपड़ों पर सुई के काम की तकनीक है, जिसमें शीशे, मोती और अन्य डिजाइन सामग्री भी सम्मिलित होते हैं। भारत में कढ़ाई की परंपराएँ पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है और विभिन्न क्षेत्रों की सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है।

यहाँ भारत की कढ़ाई के कुछ क्षेत्रों के उदाहरण दिए गए हैं—

कढ़ाई का नाम	स्थान या क्षेत्र
चिकनकारी	उत्तर प्रदेश
चंबा रूमाल	हिमाचल प्रदेश
कसूती	कर्नाटक
टोडा	तमिलनाडु
अहीर	गुजरात
कांथा	पश्चिम बंगाल
खनेंग	मेघालय
गोटा	राजस्थान
काशीदाकारी	कश्मीर
कोसा शिल्प	**छत्तीसगढ़**

तुमने अपने आस-पास के कपड़ों पर किस तरह की कढ़ाई देखी है? कढ़ाई करने वाले कलाकारों को खोजें और उनसे उनकी कलाओं पर चर्चा करें।

चिकनकारी

अहीर

तोड़ा

कोसा शिल्प

स्थानीय कलाकारों को आमंत्रित करें

एक कार्यशाला आयोजित करें जिसमें विद्यार्थियों को कुछ मूलभूत कौशल और तकनीकों से परिचित कराएँ ताकि वे वस्त्र कला के विभिन्न व्यवसायों के बारे में जान सकें।

गतिविधि 18.3 — कढ़ाई के मूलभूत टाँकों का अभ्यास

कढ़ाई साधारण सामग्री और उपकरण का उपयोग करके भी की जा सकती है। अगर आपने पहले कभी कढ़ाई नहीं की है तो इस आसान सिलाई से सीखने की शुरुआत करें।

प्रक्रिया

1. लगभग 50 से.मी. लंबा धागा लें।
2. सुई में धागा डालें और उसके एक सिरे को छोटा रखें।
3. लंबे सिरे पर एक गाँठ बना लें।
4. आप अपने कागज (कार्ड शीट) या कपड़े पर सीधी रेखाएँ खींचकर और सुई से छेद बनाएँ।
5. सिलाई शुरू करें और प्रत्येक टाँके के पैटर्न का पालन करें।
6. जब आपका धागा खत्म होने वाला हो या आपकी रेखा पूरी हो जाए तो अपनी कढ़ाई के पीछे एक गाँठ बना लें और धागा काट लें।

सामग्री

- कार्ड पेपर या मोटी ड्राइंग शीट (20 × 15 से.मी.)
- मध्यम आकार की सुई
- धागा या ऊन

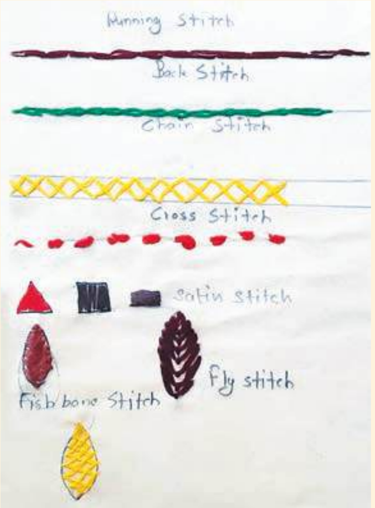

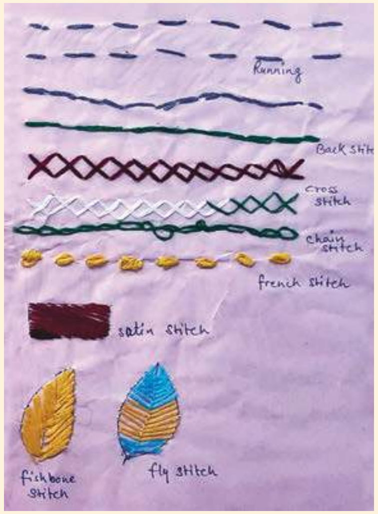

गतिविधि 18.4 — अपनी वस्त्र कलाएँ बनाएँ

वस्त्र कला केवल सपाट सतह पर ही नहीं बनानी चाहिए, यह त्रि-आयामी (3डी) रूप में भी बनाई जा सकती है। आपने शायद कपड़े या रेशे से बने सुंदर खिलौने देखे होंगे। बहुत से प्रसिद्ध कलाकार वस्त्र कला और शिल्प परंपराओं से प्रेरित हुए हैं।

आप अपने जैसे अन्य विद्यार्थी द्वारा बनाई गई कलाओं के उदाहरण देखें। आप किस प्रकार का वस्त्र कला बनाना चाहेंगे? आपको अपनी स्थानीय वस्त्र परंपराओं से प्रेरणा मिल सकती है। यह बुनाई, बुनाई के मशीन द्वारा कार्य, क्रोशे, मैक्रमे, कपड़ों के खिलौने, पेंटिंग, छाया चित्रण (प्रिंटिंग कला), बंधेज, टाई एंड डाई आदि हो सकता है।

विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई वस्त्रकला

क्या आप जानते हैं?

वर्तमान में कुछ कला संग्रहालयों में वस्त्र कला उपलब्ध है जिन्हें स्पर्श किया जा सकता है और आनंद लिया जा सकता है। ये कला दृष्टिहीन व्यक्तियों द्वारा अनुभव और आनंद के लिए बनाई जाती है।

आकलन

अध्याय 18 — वस्त्रों की कला और परंपरा				
सी.जी.	**सी.**	**सीखने का प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
1	1.1	अपने आस-पास से कपड़ों के नमूने एकत्र करें और उनके बारे में लिखें।		
2	2.2	अपनी संस्कृति और परिवेश में देखे जाने वाले सामान्य वस्त्र रूपांकनों को पहचानें और चित्रण करें।		
3	3.2	साधारण टाँके या किसी अन्य तकनीक का उपयोग करके एक वस्त्र कलाकृति बनाएँ।		

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

19 सुलेखन की कला

लिपियों में लोगों की भाषाओं और अभिव्यक्तियों को संजोकर रखने अर्थात अभिलेखन की शक्ति होती है।

भारत की लेखन परंपरा लगभग 5000 वर्ष पुरानी सिंधु-सरस्वती सभ्यता से पाई जाती है, किंतु सम्राट अशोक के शिलालेखों में पाई गई सबसे प्रारंभिक पढ़ी या समझी जा सकी लिपि लगभग 2300 वर्ष पुरानी है। भारत का मूल संविधान प्रसिद्ध लेखकों द्वारा हस्तलिखित किया गया था। प्रेम बिहारी नारायण रायजादा ने अंग्रेजी संस्करण लिखा और वसंत कृष्ण वैद्य ने हिंदी में लिखा। यह 26 जनवरी 1950 हस्ताक्षरित किया गया था जिसे आज हम गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं। आज भारतीय संविधान आधिकारिक रूप में 22 भाषाओं को मान्यता देता है। इसकी सुंदर रूपात्मक विविधताएँ और भारतीय लिपियों को अभिव्यक्त करने की क्षमताओं को बाईं ओर के वृक्ष में देखें।

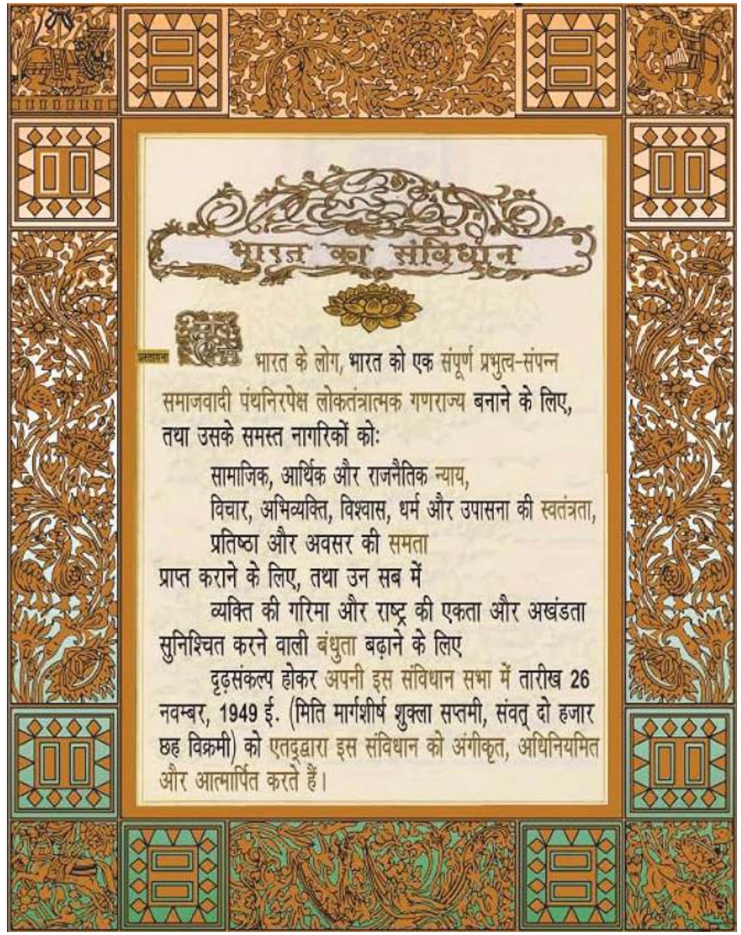
भारत का संविधान

भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

0780CH19

इस अध्याय में आप लेखन कैलीग्राफी की कलाओं के बारे में अधिक जानेंगे और खोज करेंगे।

अक्षर किसी भी लिपि की सबसे छोटी इकाई है और कोई अज्ञात लिपि अक्षरों की एक शृंखला की तरह दिखती है। आज हम जिन अक्षरों का उपयोग करते हैं वे पहले चित्र होते थे जो चित्र लिपि में विकसित हुए और फिर लेखन की संगठित प्रणालियों में बदल गए।

विभिन्न लिपियों और भाषाओं में कैलीग्राफी

सुलेखन (कैलीग्राफी) केवल शब्दों को लिखने की कला नहीं अपितु प्रत्येक कलाकार इसमें अपनी भावनाएँ डालते हैं ताकि प्रत्येक अक्षर अलग-अलग अभिव्यक्तियाँ पा सके। वे हस्तलिपि से लिखने, गढ़ने और अंकन में अधिक समय और परिश्रम लगाते हैं। प्रत्येक अक्षर की शैली का एक उद्देश्य होता है। प्राचीन पांडुलिपियों में अक्षर सजावटी होते थे और उसमें जीवंतता होती थी। कुछ अक्षरों को रचनात्मक ढंग से ढाँचा या चित्र जैसा दिखाने के लिए इस प्रकार लिखा था। आजकल समाचार पत्र हमारा ध्यान आकर्षित करने और पाठकों को शीघ्र जानकारी पहुँचाने में मदद करने के लिए मोटे और स्पष्ट अक्षरों का उपयोग करते हैं। सुलेखन (कैलीग्राफी) के लिए उपयोग की जाने वाले सामग्री और उपकरण, जैसे— पंख, कलम, कूंची, निब, स्याही तथा रंग आदि होते थे जिनसे ताड़पत्र, कपड़ा, कागज आदि पर लिखा जाता था।

सुलेखन (कैलीग्राफी) की सामग्रियाँ

गतिविधि 19.1 — सुलेखन (कैलीग्राफी) में अक्षरों पर ध्यान दें

भारतीय रुपये के प्रतीक में आप कौन-सा अक्षर ढूँढ़ सकते हैं?

₹ भारतीय रुपये का प्रतीक देवनागरी लिपि के 'र' अक्षर से लिया गया है। इसकी शीर्ष क्षैतिज रेखा, जिसे देवनागरी में शिरो-रेखा कहा जाता है, प्रतीक को भारतीय पहचान देती है। इसके साथ ही दूसरी क्षैतिज रेखा हमारे राष्ट्रीय ध्वज के तीन रंगों का प्रतिनिधित्व करती है।

आप केवल अक्षरों के आकार और रेखाओं से खेलते हुए विचारों से समृद्ध हो जाते हैं। 'अतुल्य भारत' के लोगो (प्रतीक) को ध्यान से देखें। 'विस्मयाधिबोधक चिह्न' को अलग तरीके से रखना इसे अधिक प्रभावी बनता है। अन्य प्रतीकों में आप किस तरह का अक्षर प्रयोग देखते हैं? चर्चा करें और अपने अवलोकनों को लिखें।

गतिविधि 19.2 — अक्षर को ढूँढ़ना

डिजिटल तकनीक से पहले, छपाई की लंबी प्रक्रिया होती थी। छपाई प्रक्रियाओं के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए किसी समाचार पत्र कार्यालय या प्रिंट स्टूडियो में जाकर इसकी जानकारी प्राप्त करें।

आइए हम अपने आस-पास पाई जाने वाली छपाई सामग्री का उपयोग करके "छपाई सामग्री का खजाना" खोजें। गतिविधि शुरू करते हैं।

चरण 1— कुछ समाचार पत्र और छपाई सामग्री एकत्र करें। जैसे कि निमंत्रण कार्ड, खाद्य पैकेजिंग सामग्री और पुरानी पत्र-पत्रिकाएँ इकट्ठा करें।

चरण 2— चर्चा करें और इस बारे में अपने विचारों को लिखें—

- शब्द और अक्षर कैसे व्यवस्थित है?
- आपको क्यों लगता है कि अक्षर विभिन्न रंग और आकार में छापे जाते हैं?
- अक्षरों और शब्दों की शैली में आपको क्या आकर्षक लगता है?
- छपाई सामग्री पर कौन-से शब्द सबसे महत्वपूर्ण हैं और क्यों?

चरण 3— विभिन्न आकारों और शैलियों के शब्दों और अक्षरों को काटें।

चरण 4— समान अक्षर शैलियों को खोजने के लिए समूहों में कार्य करें। उदाहरण के लिए सजावटी, मोटा, तिरछा, पतला, संकीर्ण आदि।

चरण 5— समान अक्षर शैलियों का समूहीकरण करके उन्हें A3 आकार के कागज पर चिपकाएँ।

गतिविधि 19.3 — समानता लेकिन भिन्नता

नीचे दी गई तालिका को ध्यान से देखिए। इसमें एक ही अक्षर के विभिन्न संस्करण का अलग-अलग तरीकों में रूपांतर होता दिखाया गया हैं।

अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ

क्या आप एक ही अक्षर को इतने लिखे गए तरीकों से पढ़ पाते हैं?

यह मानव या पशु शरीर जैसा है। हमारे शरीर के अंग एक जैसे होते हुए भी हम अलग दिखते हैं। मानव शरीर रचना विज्ञान हड्डियों, मांसपेशियों, जोड़ों की संख्या का पता लगाता है। इसी तरह, अक्षरों की संरचना एक वर्ण के विभिन्न भागों को प्रकट होती है।

चरण 1— किसी भी लिपि से एक अक्षर चुनें जिससे आप परिचित हों।

चरण 2 —कागज की एक शीट लें और उस पर वह अक्षर विभिन्न तरीकों से लिखें जिसे आपने चुना है।

चरण 3— अक्षरों को स्वतंत्र रूप से लिखना शुरू करें। अपने दूसरे हाथ का उपयोग करें और देखें कि कौन-सी रेखाएँ और आकृतियाँ बनती हैं। विभिन्न प्रकार के पेन, तूलिका, पेंसिल और अन्य लेखन उपकरणों का उपयोग करें। अक्षरों का बड़ा और छोटा चित्रण करें।

चरण 4— उसी अक्षर की संरचना के लिए एक और कागज लें, एक आधार रेखा, एक शीर्ष रेखा और एक मध्य रेखा चित्रित करें।

चरण 5— ढाँचा बनाने के लिए ऊर्ध्वाधर रेखाएँ चिह्नित करें। इससे आपको प्रत्येक अक्षर की चौड़ाई का अनुमान लगाने में सहायता मिलेगी, साथ ही प्रत्येक अक्षर के बीच की जगह का भी अनुमान लगाने में सहायता मिलेगी।

चरण 6— एक ही अक्षर के पाँच रूप बनाएँ। अलग-अलग शैलियाँ प्राप्त करने के लिए अक्षरों की ऊँचाई, चौड़ाई, कोण और रेखा की मोटाई बदलने के लिए दिशा-निर्देशों का उपयोग करें। अक्षर को लिखते समय उसकी संरचना को ध्यान में रखें।

चरण 7— अपने कार्य को अपने साथियों के साथ साझा करें। चर्चा करें कि आपने एक अक्षर को अलग-अलग तरीकों से कैसे लिखा है?

गतिविधि 19.4 — बोलने जैसा लिखना

जब आप लोगों से बात करते हैं तो आप अपने स्वर में बदलाव करते हैं, जिससे स्वर प्रसार में विविधता आती है। ऐसा करना विभिन्न भावनाओं को व्यक्त करता है। उदाहरण के लिए, जब आप अपने मित्र को जन्मदिन की शुभकामनाएँ देते हैं तो आप उत्साह और आनंद के साथ बोलते हैं, जबकि जब आप कहते हैं कि आप शीघ्र ठीक हो जाओगे तो आप इसे धीरज और चिंता के साथ कहते हैं।

अगर हम इसे लेखन से जोड़कर देखें तो ऐसा हो सकता है कि बलपूर्वक बोले गए शब्दों के स्वर को बड़े मोटे अक्षरों में जबकि धीमे या नरम शब्दों के स्वर को छोटे अक्षरों में लिखा जाए।

अब क्यों न आप अक्षरों को विभिन्न तरीकों से आकर देने की कोशिश करें, ताकि शब्दों के अर्थ और भावनाओं को व्यक्त किया जा सके।

दाईं ओर दिए गए उदाहरण को देखें और अपनी ऐसी भाषा या लिपि में स्वयं के अक्षर बनाएँ जिसमें आप सहज अनुभव करें।

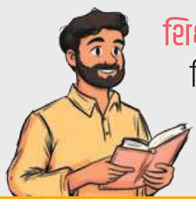

शिक्षकों के लिए निर्देश— कैलीग्राफी कौशल का उपयोग विभिन्न व्यवसायों और पेशों में किया जाता है, जैसे— टैटू बनाना, लेखन-चित्रण कला (ग्राफिक आर्ट), कला चित्रण एनीमेशन इत्यादि।

गतिविधि 19.5 — पोस्टर में कैलीग्राफी

एक नाम में सब कुछ

विद्यार्थी कैलीग्राफी का कार्य करते हुँ

जिस प्रकार नवजात शिशु का नाम रखने में बहुत सोच-विचार किया जाता है। ठीक उसी प्रकार पुस्तकों, नाटकों, फिल्मों और जागरूकता अभियानों के शीर्षकों को तय करने में भी काफी सोच-विचार किया है। उन विभिन्न पोस्टरों को याद करें जिन्हें आपने देखा है। उनकी विभिन्न प्रकार की जानकारी और पोस्टर पर चर्चा करें। अपने कैलीग्राफी कौशल का उपयोग नाटक या पोस्टर का चित्रण या स्कूल के लिए अन्य कार्यक्रम के लिए करें।

चरण 1— अपने नाटक या कार्यक्रम के लिए कोई नाम या शीर्षक चुनें।

चरण 2— शीर्षक के लिए अक्षरों की शैली, रंग और आकार तय करें। आपके अक्षरों की शैली से पाठकों को घटना की प्रकृति के बारे में जानकारी मिल सकती है। उदाहरण के लिए यह एक नाटक है तो आप यह संकेत दे सकते हैं कि नाटक हास्य है, दुःखद है या इसमें रहस्य है।

चरण 3— लिखते समय दिशा-निर्देशों और मार्जिन (सीमा) को चिह्नित करें।

पोस्टर में दी गई जानकारी

शीर्षक की अक्षर शैली को अंतिम रूप देने के बाद, पोस्टर पर अन्य जानकारी लिखें जैसे—

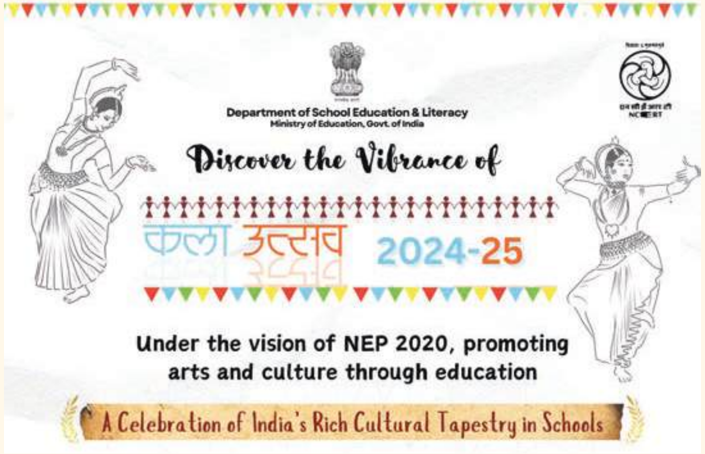

1. दिनांक, समय एवं स्थान;
2. संपर्क जानकारी, और
3. लोगों, संगठनों, संस्थाओं, प्रदर्शन करने वाले समूहों आदि के नाम।

इसके लिए, आपकी अक्षर शैलियाँ स्पष्ट और आसानी से पढ़ने योग्य होनी चाहिए। उसके महत्व को दर्शाने के लिए उपयुक्त आकार चुनें और लिखते समय दिशा- निर्देशों का पालन करें। दृश्य जोड़ें और अपना पोस्टर प्रदर्शित करें।

आकलन

अध्याय 19 — सुलेखन (कैलीग्राफी) की कला				
सी.जी.	**सी.**	**सीखने के प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
1	1.1	अक्षरों और शब्दों को विभिन्न शैलियों में लिखता है, ताकि भावनाएँ और संवेदनाएँ व्यक्त कर सकें।		
2	2.2	शैलियों को व्यक्तिगत विचारों और भावनाओं से जोड़ता है।		
3	3.1	लेखन चित्रण (कैलीग्राफी) करते समय विभिन्न माध्यमों और साधनों के साथ प्रयोग करता है।		
3	3.2	अपनी कलाकृति बनाते समय परिचित अक्षर शैलियों की पहचान कराता है और इनका अपनी कलाकृति में उपयोग करता है।		
3	3.2	लेखन चित्रण (कैलीग्राफी) परियोजनाओं में अंतराल (मार्जिन), संरेखन आदि के प्रति सतर्कता दिखाता है।		

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

संकलनात्मक आकलन

	आकलन के लिए गतिविधि (उदाहरण)	आकलन के लिए मानदंड
व्यक्तिगत	वस्तु या शब्द के साथ स्व-चित्र ❖ किसी भी चेहरे के भाव के साथ अपना चित्र बनाएँ। ❖ किसी ऐसी वस्तु या शब्द का चुनाव करें जिसे आप अपने व्यक्तित्व का प्रतीक समझते हैं, उसे अपनी कलाकृति में सम्मिलिति करें। ❖ प्रतिपादन और अभिलेख तकनीक का प्रयोग करें और रंगों के साथ अपनी कलाकृति को पूरा करें।	ध्यान दें— ❖ अनुपात और परिमाण। ❖ चेहरे के भाव। ❖ अक्षरों में अंतराल, संरेखण तथा हाशिया (मार्जिन)। ❖ रंग एवं स्वर-रंग भिन्नता।
समूह	❖ किसी कपड़े के अवांछित टुकड़ों या रेशे का उपयोग करके गुड़िया या कपड़े का खिलौना बनाएँ।	❖ नए विचारों और सुझावों का उपयोग करना। ❖ कार्यों के अनुक्रम की योजना और प्रारंभिक रेखाचित्र बनाना। ❖ उपयुक्त सामग्री एवं साधन चुनना और उसका सावधानीपूर्वक उपयोग करना।

शिक्षक की टिप्पणी और विद्यार्थी का अवलोकन

अवलोकन

20 कलाओं में समन्वय— मूर्तियों में अंतर्निहित प्राण

0780CH20

कला एक प्रभावशाली भाषा है जो आपके हृदय और मस्तिष्क दोनों से संवाद करती है। जब आप किसी संगीत कार्यक्रम को सुनते हैं या किसी चित्रकला को देखते हैं तो जो अनुभूति होती है, उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन होता है। अब कल्पना कीजिए कि आपने जो भी कला रूप सीखे हैं, वे सभी मिलकर एक अनोखा अनुभव देते हैं! इस अध्याय में आप ऐसा ही अनुभव करने जा रहे हैं!

गतिविधि 20.1 — पत्थरों में छिपी कहानियाँ

इस गतिविधि का उद्देश्य रचनात्मकता और सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करना है। विद्यार्थी प्राचीन मूर्तियों को आधार बनाकर एक कहानी रचेंगे और फिर उसे संगीत, नृत्य की विभिन्न भंगिमाओं और संवाद के माध्यम से जीवंत करेंगे।

1. तैयारी

- पुस्तक में दी गई सभी मूर्तियों और पत्थर की नक्काशियों के चित्रों को ध्यान से देखें। ये सभी चारों अनुभाग में दी गई हैं। आप अपने आस-पास के क्षेत्रों या अपनी यात्रा के दौरान ली गई मूर्तियों के चित्रों का भी उपयोग कर सकते हैं

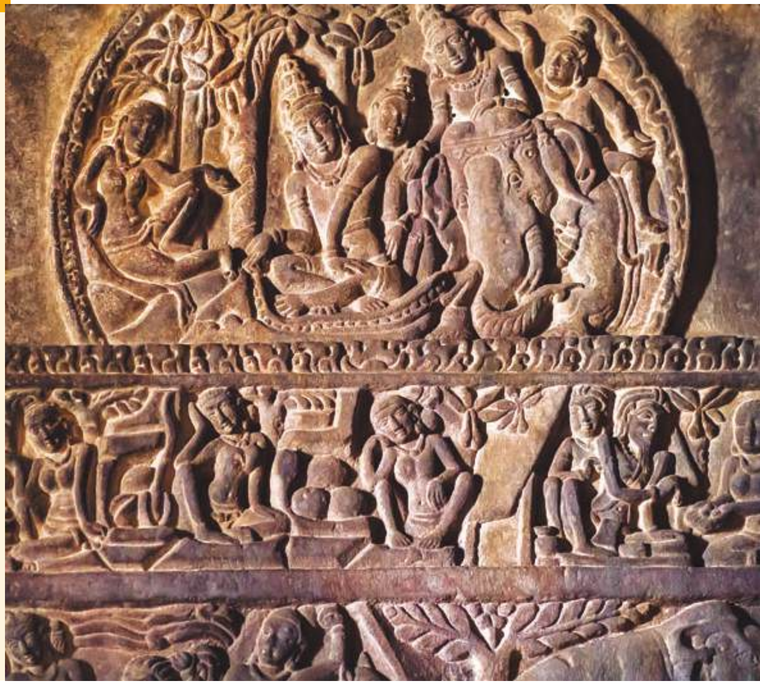

यूनेस्को की विश्व ऐतिहासिक धरोहर पट्टल में सातवीं शताब्दी के मंदिर की दीवारों पर पत्थरों को काटकर उकेरे गए चित्र

(इनमें देवताओं, नर्तकों, योद्धाओं, पशुओं या दैनिक जीवन के दृश्य हो सकते हैं)।

- आप अपने सामाजिक विज्ञान के शिक्षक से चर्चा करके और भी मूर्तियों की चित्र एकत्र कर सकते हैं जिनका उपयोग कहानी में किया जा सकता है।

2. कहानी की रचना

- कक्षा को छोटे समूहों में बाँटा जाए (प्रत्येक समूह में 4–6 विद्यार्थी)।
- प्रत्येक समूह मूर्तियों को ध्यान से देखे और कल्पना करे कि उनमें दिखाए गए पात्रों का जीवन, भावनाएँ और गतिविधियाँ कैसी रही होंगी।।
- शिक्षक की सहायता से एक ऐसी कहानी बनाएँ जो इन मूर्तियों को किसी अर्थपूर्ण तरीके से जोड़ती हो। उदाहरण के लिए—
    - किसी वीर योद्धा की साहसिक यात्रा।
    - एक त्योहार का दृश्य जिसमें नर्तक और वादक सम्मिलित हों।
    - देवी-देवताओं और पौराणिक जीवों से जुड़ी कोई कथा।
    - जन साधारण के जीवन से जुड़ी कोई सरल और भावनात्मक कहानी।
- मूर्तियों के िचत्रों को उस क्रम में लगाएँ जिस क्रम में कहानी आगे बढ़ती है (यह कुछ-कुछ कॉमिक स्ट्रिप जैसा होगा, लेकिन मूर्तियों के साथ!) इसे जितना हो सके रचनात्मक और अनोखा बनाएँ।

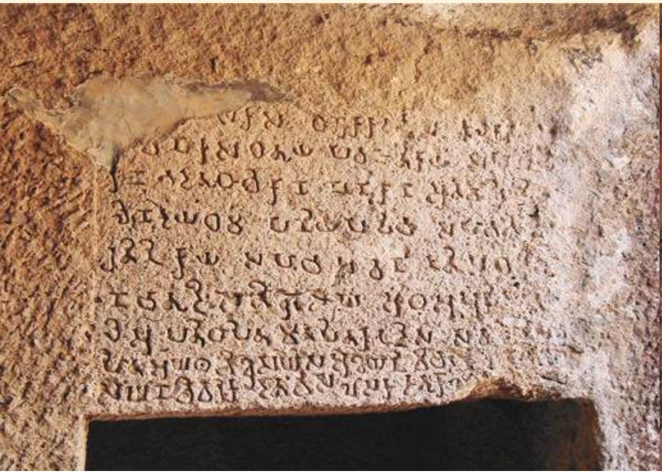

मुंबई में गौतम बुद्ध कालीन गुफा में चट्टानों को काटकर उकेरा गए चित्र आदि

हेलेवेद में बारहवीं शताब्दी की भगवान गणेश की प्रतिमा

महाबलीपुरम, तमिलनाडु

विजयनगर साम्राज्य, हम्पी, कर्नाटक

तमिलनाडु दारासुरम में स्थित चोल मंदिर

दक्षिण भारत के मंदिर की एक दीवार

कन्याकुमारी में तिरुवल्लुवर की प्रतिमा

छतीसगढ़ का एक मंदिर

3. कला की विधाओं को समेकित करना

- **दृश्य कला**— कहानी के वे भाग, जिनके लिए आपके पास चित्र नहीं हैं, उनकी कल्पना करके स्वयं चित्र बनाएँ। इस पुस्तक में आपने जो चित्रकथात्मक परंपराएँ सीखी हैं, जैसे— फड़, चित्रकला या पटचित्र, उनसे प्रेरणा लें और स्वरचित चित्रकथा बनाएँ। सामग्री और तकनीक का प्रयोग सोच-समझकर करें।
- **अंग संचालन और नृत्य**— मूर्तियों में दिखाए गए हाव-भाव और मुद्राओं को अपने नृत्य और अंग संचालन से दर्शाएँ।
- **संवाद**— मूर्तियों के हाव-भाव और भावों से प्रेरित होकर पात्रों के लिए छोटे संवाद या एकालाप लिखें। इससे कहानी को आगे बढ़ाने में सहायता मिलेगी।
- **संगीत/गीत**— पारंपरिक धुनों का उपयोग करें या स्वयं एक सरल गीत बनाएँ जो कहानी से मेल खाता हो। आप ताली, होंठों से स्वर (हम्मिंग) या उपलब्ध वाद्ययंत्रों से लय बना सकते हैं।
- **लोककथन शैली**— फड़ कथा वाचन, हरिकथा अथवा अन्य स्थानीय लोककथन शैलियाँ जो आपने देखी या सीखी हैं, उन्हें इस प्रस्तुति में सम्मिलित करें।

गंगईकोंडा मंदिर, चोलपुरम

बृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर तमिलनाडु

कुतुब मीनार, नई दिल्ली

बौद्ध स्तूप, साँची, मध्य प्रदेश

4. अभ्यास और पूर्वाभ्यास

- ❖ प्रत्येक समूह को अपनी कहानी के अभ्यास का समय दिया जाएगा, जिसमें वे गति, संगीत और संवाद का समावेश करेंगे।
- ❖ आप चाहें तो कहानी में कुछ रोचक भाग जोड़ सकते हैं, लेकिन ध्यान रखें कि कहानी स्पष्ट और विषय पर केंद्रित रहे।

5. प्रस्तुति और चिंतन

- ❖ प्रत्येक समूह अपनी कहानी पूरी कक्षा के सामने प्रस्तुत करें। दर्शक (बाकी विद्यार्थी) चर्चा कर सकते हैं कि मूर्तियों ने पात्रों, अंग संचालन और कार्यों को किस प्रकार प्रेरित किया।
- ❖ प्रस्तुति के बाद एक सामूहिक चर्चा आयोजित करें—
  - मूर्तियों ने किस प्रकार कहानियों को प्रेरित किया?
  - संगीत, गति और संवाद ने कहानी को कैसे प्रभावशाली बनाया?
  - प्रस्तुति के माध्यम से मूर्तियों ने कौन-से भाव या संदेश व्यक्त किए?

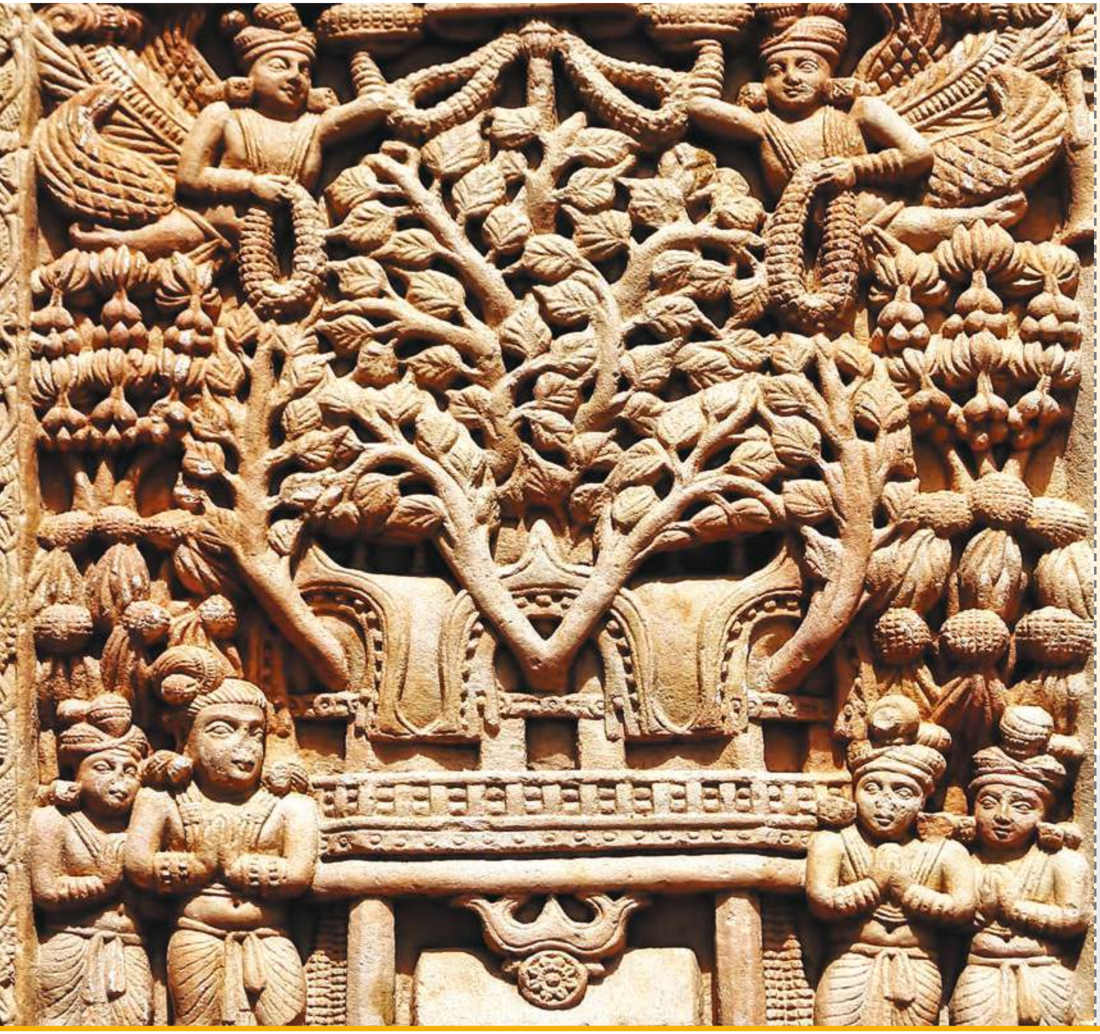
जातक कथाएँ, साँची स्तूप, मध्यप्रदेश

परिणाम

यह गतिविधि विद्यार्थियों को भारत की समृद्ध कला परंपरा से जोड़ती है और टीमवर्क, कथावाचन के कौशल तथा रचनात्मकता को बढ़ावा देती है। संगीत, गति और संवाद के समेकन से विद्यार्थी यह सीखते हैं कि इतिहास को कैसे रोचक और कल्पनाशील प्रकार से जीवंत किया जा सकता है।

शिक्षको के लिए निर्देश— यद्यपि यह गतिविधि कक्षा में करने हेतु प्रस्तुत की गई है, फिर भी इन कहानी प्रस्तुतियों को विद्यालय की सभा या अन्य कार्यक्रमों में प्रदर्शित किया जा सकता है ताकि बच्चे प्रेरित हों और उनका आत्मविश्वास बढ़े।

टिप्पणी